राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिलभारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९६

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

प्रथम भाग

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२४ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८९

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन करते हुए कुछ करुण व दारुण स्मृतियाँ मानस पर छा रही हैं। 'मीराँ बृहत्पदावली' राजस्थान के एक महामनीषी स्वर्गीय पंडित श्री हरिनारायणजी पुरोहित की अतिमहत्वाकांक्षी प्रयत्न का एक नन्हा-सा फल है। स्वर्गीय पुरोहितजी का विचार था कि वे भक्त-कवयित्री मीरांबाई के सभी अप्रकाशित पदों को संगृहीत करके प्रात: स्मरणीया लेखिका के सुविस्तृत जीवन-चरित्र के साथ प्रकाशित करें। इस निमित्त उन्होंने हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों से ही नहीं अपितु गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों से भी मीराँबाई के पदों को एकत्र किया। मीराँ के व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन-चरित्र के विषय में भी उन्होंने अनेक लोगों से पत्र-व्यवहार किया और मीराँ के जीवन से संबंधित अनेक स्थानों पर स्वयं जाकर अथवा अपने आदमियों को भेज कर सामग्री चयन करने का प्रयत्न किया। उन्होंने प्राप्त हुए पदों में से बहुत से ऐसे पदों को छोड़ दिया जिन्हें वे मीराँ द्वारा लिखित नहीं मानते थे। प्रस्तुत संग्रह में उन्होंने मीराँ के प्रामाणिक पदों को ही स्थान दिया है। भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदों की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मीराँ संबंधित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेट कर दी थी। खेद है कि अब वह कसौटी हमें उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसके आधार पर पुरोहितजी ने जो पद-संग्रह तैयार किया था वह ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है। इस संग्रह में कुल मिलाकर ६६२ पद हैं जिनमें से प्रत्येक पद के पूर्व पद की क्रम संख्या, राग एवं ताल का नाम तथा वर्ण्य विषय का संकेत कर दिया गया है और आवश्यक पाद-टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं। यह सब उसी स्वर्गीय आत्मा का कार्य है अत: उन्हीं के सम्पादकत्व में यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है।

ग्रन्थ की भूमिका के रूप में स्वर्गीय सम्पादक द्वारा ही लिखित कुछ सामग्री दी जा रही है। उसके पढने से पता चलता है कि उन्हें मीराँ के प्रति कितनी ममता थी और उनके उदात्त व्यक्तित्व के प्रति कितनी श्रद्धा। उन्हें अनुस्वार युक्त मीराँ नाम ही प्रिय था और वे अनुस्वार-हीन नाम को किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकते थे। यद्यपि वे मीराँ के प्रति अपनी श्रद्धांजलि विराट रूप में

प्रस्तुत करना चाहते थे, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम चरण में उन्हें यह आभास हो चला था कि वे अपने प्रयत्न को इच्छानुसार मूर्त्त रूप देने के लिए अधिक दिन जीवित नहीं रह सकेंगे। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने एक छोटी-सी प्रस्तावना लिखी थी जिसको भूमिका के रूप में प्रकाशित किया गया हैं। इसके साथ ही उनका वह लेख भी है जिसमें उन्होंने मीराँ के जीवन-चरित संबंधी मुख्य-मुख्य बातों की ओर संकेत किया है।

अन्त में स्वर्गीय पं० श्री हरिनारायणजी पुरोहित की महान् आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और उनके योग्य सुपुत्र श्री रामगोपाल पुरोहित (जिनके सौजन्य से इस प्रतिष्ठान को इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यह ग्रन्थ पाठकों के हाथों में समर्पित किया जा रहा है। यद्यपि यह ग्रन्थ सन् १९५८-५९ में ही प्रेस को दे दिया गया था और सन् १९६२ में इसका मुद्रण भी हो गया था, परन्तु किन्हीं कारणों से इसका प्रकाशन अभी तक रुका रहा। अच्छा तो यह होता कि इस ग्रन्थ की भूमिका में, प्रधान सम्पादक की ओर से इस अवधि में की गई सभी शोध सामग्री को समाविष्ट कर लिया जाता, परन्तु इस विचार को छोड़ना पड़ा—प्रथम तो इस प्रतिष्ठान में संगृहीत गुटकों में से ऐसे अन्य बहुत से मीरां-रचित पद मिल गये हैं जिनका प्रकाशन आगामी सत्र में होने जा रहा है; दूसरे मीरां कृत 'नरसीजी रो मायरो' की भी ऐसी अनेक प्रतियां मिली हैं जो मीराँ के साहित्यिक जीवन पर कुछ नया प्रकाश डाल सकती हैं। ऐसी अवस्था में इस सभी सामग्री को प्रकाशित करके मीराँ की समस्त कृतियों के आधार पर उनके सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन ही अधिक उपादेय हो सकता है, इस दृष्टि से इस कार्य को आगे के लिए ही स्थगित कर दिया गया है। स्वर्गीय श्री पुरोहित जी द्वारा सम्पादित सामग्री को मीरां वृहत्पदावली भाग १ के नाम से प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके भाग २ में उन सभी पदों को संगृहीत करने का प्रयत्न किया जायगा जो अभी तक किसी भी संग्रह में प्रकाशित नहीं हुए हैं। इसी के साथ समस्त मीरां-साहित्य में प्रयुक्त प्राय सभी उपयोगी शब्दों की अनुक्रमणी प्रस्तुत की जायगी जो अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी होगी। आशा है विद्वान् पाठक हमारे इस विचार से सहमत होंगे।

इस ग्रन्थ के मुद्रण से लेकर प्रकाशन तक प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा, पं० लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा श्री हरिप्रसाद पारीक ने जो अथक परिश्रम किया है उसके लिए वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

यहां हम श्री व्रजेशकुमारसिंह को भी भूल नहीं सकते जिसने प्रस्तुत ग्रन्थ के लिये सुविस्तृत शब्दानुक्रमणी तैयार की। यद्यपि उसका प्रकाशन अगले भाग के साथ करने का ही निर्णय लिया गया है, परन्तु उसके कठिन परिश्रम के लिये हार्दिक धन्यवाद देना आवश्यक है।

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया सं० २०२४ —फतहसिंह
जोधपुर

भूमिका

भक्तशिरोमणि श्रीमती मीरांबाई का जीवनचरित्र, हमारे विशेष संग्रह के अनुसार, बहुत विस्तार और समारोह के साथ, जिसमें कदाचित् ही कोई उपलब्ध विषय वा वृत्तान्त नहीं छूटने पाता, और यावन्मात्र विचारणीय एवं संगृहीतव्य पदार्थ आजाते और लिखे जाते, और जिसका आकार एवं कलेवर सम्भवत: ५०० वा ६०० पृष्ठों से भी अधिक हो जाता। परंतु अब इतना न तो समय ही रह गया है और न मेरे इस शरीर की इतनी शक्ति ही रह गई है कि मैं उस बृहत् कार्य को कर सकूं। मेरी अवस्था ८० वर्ष की हो जाने से अब तो उतना काम नहीं कर सकता। इस ही कारण से मुख्य-मुख्य विषयों को लिख देना चाहता हूं। इन संक्षेप के विषयों में भी मेरे विशेष संग्रह के अनुसार (प्राय: इस संक्षेप में भी) बहुत सी बातें देखने और विचारने योग्य आ सकेंगी। कुछ ऐसी बातें मेरे अनुसंधान के अनुसार नई मिलेंगी जिनका संग्रह मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही किया है। मैं मेड़ते भी संवत् १९''' में गया था। वहां से उस समय जो भी प्राप्त हो सका, पदार्थ लिया। वहां के वृद्धपुरुषों व पूजारी वर्ग से तथा अधिकतर भक्तवर ज्ञानी श्री जोषी पूषारामजी के पत्रों से सामग्री मिली, जिसका सावधानी से मैं इस संग्रह में प्रयोग करूंगा। अतिरिक्त, बड़ी रूपाहेली के कृतविद्य इतिहासप्रेमी स्व० श्री ठाकुर साहब चतुरसिंहजी के बहुमूल्य पत्रों से, तथा "जयमलवंशप्रकाश" के लेखक विद्वद्वर श्री ठाकुर साहब बदनोराधीश गोपालसिंहजी की कृपा और पत्रादि से तथा अन्य अनेक सामग्री-प्रदायक महाशयों से, जिनके नामादि देकर उनका कृतज्ञ होकर इस संक्षिप्त संग्रह को लिखने का प्रयास करूंगा। मुझे इस बात को जानने से बड़ा आनंद हुआ है—उक्त दोनों सरदारों (ठाकुर साहिबों) और उनके वंशजों के श्री मीरांबाई के मेड़तियाकुल में होने का सौभाग्य। उनसे बढ़कर पते की बातें अधिक कौन जान सकते हैं। तथा स्ववं प्रसिद्ध मेड़ता नगर से और वहां के अवशिष्ट जानकारों से मुझे इस संग्रह में जो-जो भी बातें मिली हैं वे ऐसी हैं कि इससे पूर्व वे अनेक पुरुषों को ज्ञात नहीं थीं। इस सब ज्ञान की प्राप्ति के लिए मैं उन सब का आभारी होता हूं।

मुझे श्रीमीरांबाईजी के अन्दर भक्ति तो मेरे बचपन से, मेरे पूज्या श्री दादीजी महामति से और परमयोगिनी मेरी पूज्यवरा श्री मोतीबाईजी से ही

कुछ मिली थी। फिर शनैः शनैः ज्ञान बढ़ता गया। मैं जब जनानी ड्योढ़ी का सुपरिंटेंडेन्ट रहा था तब से इस संबंध में अधिक रुचि होती गई और अब तक तो वृद्धि ही मिलती गई। बाबू अनाथदास, कलकत्ते वाले शांतिनिकेतन से मेरे पास आये थे तब से उनके परामर्श से भी जानकारी बढ़ी। अब तक मेरे पास मीरांजी संबंधी बहुत सी लिखित और मुद्रित पुस्तकों की सामग्री का संग्रह हो गया। इन सब से पदार्थों की देखभाल की गई। जिसके लिए मैं सब का कृतज्ञ हूं।

श्रीमती मीरांजो संबंधी मुख्य २ बातें

१. मीराँजी से पूर्व रत्नसिहजी उनके पिता के एक पुत्र हुआ था, उसका नाम गोपालजी था। वह कुछ समय पीछे मर गया। माता को शोकातुर देख माता के पीहर की एक 'आया' ने उनसे मीराँ साहिब (अजमेरी) की मिन्नत के लिए कहा। उनकी माता ने वैसा ही किया तो कुछ समय में मीराँजी का जन्म हुआ, सं० वि० १५५५ में। भक्त-जन नदी से प्रगट होना कहते हैं। अन्यमत से जन्म वि० सं० १५६१ सावण सुदि १ को हुआ।[1] (राव के मतानुसार पुत्र वा नदी से प्रागटच पुरुषोत्तमदास 'मीराँ नाटक' से)।

२. मीराँजी के पूर्वजन्म की कथाएँ 'प्रपन्नामृत' में कथित हैं। वे बादशाह के यहाँ जन्मी थी। महात्मा रामानुजजी उनके लिए प्रार्थी हुए थे। (उस ग्रन्थ में देखें)।

३. 'मीराँ' नाम संभवतः 'मीराँ साहिब' (अजमेरी) के कारण ही रखा गया था। निश्चित रूप से यही व्युत्पत्ति होती है। मीराँ नाम पर हमने एक विस्तृत लेख भी लिखा है।

४. मीराँजी की माता का स्वर्गवास (अनेक मतों से) मीराँजी के ४ थे वा ३ वा दूसरे वर्ष में ही हो गया था। उस समय दूदाजी की राणी वा वीरमजी की कुमार-वधू (कुड़की) गाँव जाकर 'निषेध' का दस्तूर हो जाने पर बालिका मीराँजी को मेड़ते ले आये थे।

५. मेड़ते में तो वैष्णवता का गहरा प्रचार और सत्संग था। बाल्यावस्था ही से मीराँजी को वैसे सत्संग में पाला गया। बुद्धिमती तो मीराँजी थे ही,

---

१. मीराँजी का जन्म गाँव 'बाजोली' में हुआ था। वहाँ से 'कुड़की' गाँव में आगये थे। कुड़की में ही माता का देहान्त हुआ था। जन्म-स्थान फिर 'कुड़की' ही लिखा जाता है। (लेखक)

अपने विद्यागुरु (गदाधरजी) दूदाजी, वीरमजी आदि की संगति के साथ तथा महलों में अपनी बड़ियाओं के साथ पुराणादि सुना करतीं। मीराँजी के पूर्वजन्म के प्रारब्धानुसार बहुत शीघ्र ही उपस्थिति हो गई। भक्तिभाव रात-दिन बढ़ता गया। वस्तुत: मीराँजी पूर्वजन्म की एक गोपिका तो थीं ही। इस भक्ति के सत्संग ने उनमें निरन्तर अधिकता करदी। वे तो थोड़ी सी अवस्था में ही अनन्यता के प्रेम में मग्न रहने लग गईं। प्रतिभा उनकी तीव्र थी। जो कुछ सुन-पढ़ लेती कंठाग्र ही हो जाता। गायन मधुर, प्रियकर और स्वरताल सहित होता था। संगीत में प्रवीण होगई थीं।

६. मीराँबाई की माता का नाम 'वीरकुँवरि' था। नाना का नाम 'सुलतानसिंहजी' था। ये जाति-गोत के झाला राजपूत 'गोगूंदा' गाँव में व्याहे थे।

७. बचपन ही से साधुसेवा बड़ी ही प्रिय थी। साधुसेवा में मस्त होकर खान-पान तक की सुधि नहीं रहती थी। साधुजन भक्ति के भजन गाते तब सुनते-सुनते बेबश होकर सुनती और मस्त हो जाती थी। स्वयं भी पद बनाती थी, क्योंकि गांधर्व विद्या में कुशल हो चली थी।

८. मुंशी देवीप्रसादजी (स्वर्गवासी) ने 'महिला मृदुवाणी' ग्रन्थ में मीराँजी का जन्म गाँव 'चौकड़ी' लिखा है। परंतु इनकी जन्मभूमि का स्थान 'कुड़की' ही सर्वसम्मति से माना जाता है और सुप्रसिद्ध है। मेड़ते के राजपूतों का एक भाट 'धोलेराव' गाँव के से पता चला है कि दूदाजी ने अपने चौथे बेटे रत्नसिंहजी को जागीर में चार गाँव—१. कुड़की २. बाजोली ३. नेण्याँ और ४. माँझी दिए थे। मुंशीजी ने केवल दो गाँव (कुड़की और बाजोली) लिखकर इत्यादि शब्द १२ गाँव रतनसिंहजी की जागीर में लिखे हैं।[1] कुड़की गाँव जोधपुर की पूर्व सीमा पर मेड़ते से कोई १८ मील पर है। गाँव कुछ तो पहाड़ पर है और कुछ तलैटी पर है। छोटा सा किला पहाड़ पर है। उसी में जागीरदार रहते थे। परंतु अब कुड़की गाँव में रतनसिंहजी का वंशज कोई भी नहीं रहता है। वहाँ पर चांदावत खांप के राजपूत रहते हैं। (जोशी श्री पूषारामजी से यह वृत्त प्राप्त)। सं० १५१० में राव जोधाजी ने महाराणा के सब से बड़े

---

१. अब हमें १२ गाँवों की फहरिस्त मिल गई, ६ ये हैं—नींवड़ी, पालड़ी, आकोदिया, हफधर, नूंद, पीमणिया, मोटस, डुमांणीं, सुंदरी (तीन ऊपर दिए—कुड़की, बाजोली और नेण्यां।

थाँणे 'चौकड़ी' को विजय किया था। (श्रोझाजी का जोधपुर का इतिहास पहली जिल्द)।

९. राव दूदाजी का जन्म जोधपुर में वि० सं० १४९७ में हुआ। वि० सं० १५१८ में मेड़ता विजय किया। यह पौराणिक राजा मान्धाता का स्थापित राज्य-स्थान था। दूदाजी का परलोकवास ७५ वर्ष की आयु में वि० सं० १५७२ में हुआ था। इनके बड़े पुत्र वीरमदेवजी का जन्म वि० सं० १५३४ में हुआ था। दूदाजी के दो राणियां व पाँच पुत्र थे। १. वीरमदेव, २. रायसल, ३. पंचायण, ४. रत्नसिंह, ५. रायमल। रत्नसिंहजी (मीराँजी के पिता) बयाने में बाबर बादशाह के साथ महाराणा संग्रामसिंहजी का जो प्रसिद्ध युद्ध हुआ था उसमें (रत्नसिंहजी) वि० सं० १५८४ में मिती चैत्र सुदि १४ को मुसलमानों से बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते हुए काम आये थे। और उसी में रायमलजी भी।[1]

१०. दूदाजी ने मेड़ते में श्री चारभुजानाथजी का मंदिर वि० सं० १५३२ में बनाया था। यही चतुर्भुजनाथ सब मेड़तियों के इष्टदेव (माँथे के ठाकुर) हैं। 'जै चारभुजानाथ की' कह कर आपस में अथवा अन्य पुरुषों के साथ बोलते हैं। सिर पर रेशमी पट्टा बांधते हैं। मेड़ते में दूदाजी ने, फिर वीरमजी ने अच्छे-अच्छे अनेक महल-महलात बनवाये थे। परंतु महाराजा मालदेवजी (जोधपुराधीश) ने वैरभाव से सब को प्राय: नष्ट कर दिया। केवल श्री चतुर्भुजजी का मंदिर मीराँबाई के प्रताप से, वा श्रीजी के प्रभाव से छोड़ दिया गया। जयमलजी, वीरमदेवजी आदि ने २२ बेर मालदेवजी से युद्ध किया था।

११. जयमलजी, महामहिम वीर वीरमदेवजी के बड़े बेटे थे। जन्म सं० १५६४ में हुआ। गद्दी सं० १६०० में (वीरमदेवजी के मरने पर) प्राप्त हुई। २२ युद्ध मालदेवजी से करने के पश्चात् जयमलजी प्राय: विजयी रहे। फिर बादशाह की फौज के साथ विरोध होने पर, मेड़ता सदा के लिए छूट गया। तब महाराणा उदयसिंहजी ने बहुत आदर से एक हजार गाँवों का पट्टा करके चित्तौड़ के प्रधान दुर्गाध्यक्ष बनाकर, वे स्वयं तो पहाड़ों में चले गये। जयमलजी अकबर बादशाह के साथ छ: महिनों तक घोर युद्ध करते ही रहे। अन्त में पांव में अकबर के हाथ की गोली लगने के पीछे

१: दूदाजी के पांच पुत्र थे—पांचवें 'रायमलजी' थे। ये भी बयाने के युद्ध में काम आगये थे। प्रधान सेनापति होकर राव गांगाजी के भेजे गए थे। (लेखक)

सब रणवास का 'जौहर' करके, कल्ला के कंधे पर चढ़कर पत्ता अपने बहनोई के साथ वि० सं० १६२४ में वीरगति को प्राप्त हुए। अकबर ने इनकी अतुलित वीरता का अनुभव करके इनका स्मारक दिल्ली के दरवाजे पर (फिर शाहजहाँ आगरे ले गया) हाथियों पर सवार प्रतिमाओं के साथ बनवाया था।

१२. मीराँजी का विवाह वीरमदेवजी ने वि० सं० १५७३ में (मीराँजी की १८ वर्ष की आयु में) बड़े समारोह के साथ कर दिया (अन्य मत से १५७४ में)। दहेज भी बहुत भारी दिया गया। तीन लाख की जागीर मीराँजी को चित्तौड़ में मिली थी। घर के घर परिवार सहित डायज वालों के मीराँजी के साथ गये थे। पण्डितों, ब्राह्मणों, गुरुवों आदि से लगाकर नाई, धोबी, धानके, भंगियों तक (स्त्री पुरुष सब) साथ ही गये थे। सैकड़ों घोड़े, ऊँट, रथ, सुखपाल, पालकी आदि दिये गये थे। मेड़ता से भी गांव दिये गये थे। विद्यागुरु गदाधरजी को मीराँजी ने चित्तौड़ में बड़ी जागीर निकाल दी थी। उनके वंश में अब तक भुगत रही है। कोई २०० आदमी विद्यागुरु के वंश में अब भी होंगे। सुना गया है कि स्वयं राणाजी संग्रामसिहजी भी विवाह में पधारे थे। राणाजी का बड़ा भारी सम्मान और सत्कार किया गया था। मीराँजी उस समय की, वा राजपूताने के अन्दर, अत्यन्त रूपवती बाई थी। पूर्व-संबंध के प्रभाव से ही नहीं, इन मीराँबाईजी के अनुपम रूप-लावण्यादि गुणों के कारण ही राणाजी ने मीराँजी जैसी स्त्री-रत्न को अपने घर अपने बड़े युवराज के साथ संबंध करना सर्वोत्तम समझा। इधर वीरमदेवजी को भी विवाह की ताकीद थी। उन्होंने कुड़की से भाई रत्नसिहजी को बुलवा कर चित्तौड़ भेजा कि वहाँ जाकर सगाई पक्की कर आवे। विवाह की मिति का तो पक्का निश्चय नहीं, परंतु ऐसा सुना गया है कि कार्त्तिक शुक्ला में किसी दिन यह विवाह हुआ था।

१३. विद्यागुरु गदाधरजी गूजर गौड़ ब्राह्मण काँटिया तिवाड़ी गोत वा खाँप के थे। इनको एक हजार बीघा पीवल भूमि, पांच हजार रु० वार्षिक आय की कस्वापुर और मांडल में मिली थी। दान-पत्र भी मिले थे। ये सब इनके वंशजों के पास हैं। इनके वंशजों को गजाधरे नाम से बोलते हैं। गजाधरों के अब भी ४० ठिकानों की विरत-वृत्ति है और बदनोर रूपाहेली आदिक मेड़तिये सरदारों के यहाँ इनका विशेष मान है। (ठा० चतुरसिहजी रूपाहेली के से प्राप्त जगदीशसिह गहलोत द्वारा)।

१४. श्री मीराँजी के चार मूर्तियों का पता (गिरधरलालजी कीका से) लगा है। वह इस प्रकार है:—

(१) जो पहली मूर्ति साधु महात्मा से बचपन में प्राप्त हुई वह तो सदा साथ रहा करती थी। कहते हैं कि श्री द्वारकाजी में मीराँजी भगवान् की मूर्ति में ही लीन हो गई और किन्हीं के मत से प्यारी अपनी सखी को मिल गई।

(२) दूसरी मूर्ति, सं० १६२४ में जो चित्तौड़ दुर्ग में राणा कुंभाजी के कुंभ-श्याम-मंदिर के पास के, मीराँजी के बनवाये हुए (राणा रत्नसिंह के समय में) मंदिर में विराजती थी, उसको चित्तौड़ विजय होने पर आंमेर के महाराज भगवंतदासजी और उनके महापराक्रमी राजपुत्र मानसिंहजी ने अकबर से प्रार्थना करके उसे (सब सामग्री सहित) आंबेर भिजवा दिया और कुछ समय के अनंतर प्रसिद्ध मंदिर श्री जगत शिरोमणिजी का बनवाकर उसमें प्रतिष्ठा करवाई। उनकी मूर्त्ति के साथ प्रियाजी की मूर्ति माजी सीसोदणजी आदि ने बनवाकर बड़े समारोह से विवाह किया। तब से जामाता (जँवाई) भाव ही अब तक चला आता है। आंमेर के पुराणे महलों में बड़ा ही सुन्दर हिंडोला संगमरमर आदि का बना हुआ है जिस पर स्व० महाराज माधोसिंहजी ने उत्तम छाया का भवन बनवा दिया है। देवा पूजारी चित्तौड़ से परिवार सहित आया था। उसके वंशज अब भी पूजारी हैं और उनके पास प्राचीन इतिहास ह० लि० वर्त्तमान है जिसे हमने भी खूब देखा है।

*(४) चौथी मूर्ति—नूरपुर पंजाब का राजा बासू जब चित्तौड़ पर चढ़कर बादशाह की आज्ञा से आया था। उस समय मीराँजी की महामहिमा से मुग्ध होकर वण राणाजी से लड़ाई न करके मीराँबाई के इष्टदेव गिरधरलालजी की मूर्ति की याचना की। राणाजी ने वह मूर्ति राजा बासू को दे दी। उसने उसे नूरपुर में भेज दी, वहाँ बड़ी भक्ति के साथ पूजनादि होती रही। इस प्रकार ४ मूर्तियों का तो पता लगा है। सवाई जयपुर में भी सिलावटों के मुहल्ले में एक

* पुरोहितजी के स्वयं के हाथों से लिखित भूमिका में तीसरी मूर्ति का विवरण अप्राप्त है लेकिन अन्य टिप्पणियों में पुरोहितजी ने लिखा है कि 'उदयपुर के जगदीश मंदिर में महाराणा जगतसिंहजी प्रथम ने जो मूर्ति पधराई थी वह मीरां की ही थी। उनके कथनानुसार यह सूचना जन-श्रुति पर आधारित है।

खंडित मूर्ति रखी है, जो उक्त मूर्तियों से मिलती-जुलती है और गलताजी के नीचे के मंदिर में भी उनके समान-सी ही मूर्ति बताई जाती है ।

मीराँबाई का कोई पैतृक संबंध आंबेर के राजाओं के साथ हमें पं० प्रहलादजी गायनाचार्य रासवालों ने बताया था, जिसको खोज नहीं की गई है।

१५: वि० सं० १९८९ के निर्मित श्री पं० शोभालालजी शास्त्रि-वर के, "वीर भूमि" (अपर नाम 'चित्रकूट गुणमालिका') में ये श्लोक मीराँजी के बनवाए हुए मंदिर के लिए बड़े प्रमाण हैं :—

(१) श्रीनन्दनन्दन-पदाम्बुरुहस्य भृङ्गी ,
मीराँ हरेर्निलय मञ्चमिमं चकार ।
यस्याग्रतो लसति मण्डपिकान्तरस्थं ,
तस्या गुरोश्चरणपङ्कजयुग्मचिन्हम् ।।१।।

श्री नन्द-नंदन के चरणारविन्दों की मधुकरी (भँवरी) श्री मीराँबाई ने यह ऊँचा विष्णु मंदिर बनवाया था । जिसके सन्मुख ही छत्री के भीतर गुरु-चरणों के चिन्ह शोभायमान हैं । ये चरणचिन्ह उनके विद्यागुरु गदाधरजी के हैं । अन्य मत से मीराँजी के मंदिर के प्रधान पूजारी देवाजी के हैं । पत्थर-लेख नहीं होने से यथार्थ ज्ञात नहीं होता है ।

(२) श्री कुम्कर्ण-नरनाथ-विनिर्मितेऽस्मिन्-
नायाहि पापकदने सदने मुरारेः ।
भक्त्यानतं सकृदपीह यदुत्तमाङ्गं,
नित्योन्नतं भवति तज्जगतां त्रयेऽपि ।।४०।।

महाराणा कुम्भाजी के बनाये हुए, पाप को नाश करने वाले, इस मंदिर में आइये । यहां जो एक बार भी भक्ति-भाव से झुक जाता है वह तीनों लोकों में सदा ऊँचा ही रहता है ।

यह मीराँजी का मंदिर महाराणा श्री कुंभाजी के मंदिर के समीप ही बना हुआ है । इसके समीपता ही ने और न जानने वालों के गलत बता देने ही से कर्नल जेम्स टॉड साहिब ने भी यह बड़ी भयानक भूल करदी कि मीराँबाईजी को कुम्भाजी की स्त्री लिख दी । और फिर परदेशी एवं देशी कुछ विद्वानों ने भी (भेड़ी-धसान न्यायानुसार) वैसा ही लिख मारा। यह तो स्व० मुंशी देवीप्रसादजी ने खोज करके, म० म० क० रा० श्री श्यामलदासजी से निश्चय करके और जोधपुर के इतिहास कार्यालय के

दफ्तरों इत्यादि से तथा म० म० डॉ० श्री ओझा गौरीशंकरजी से विशेषतया पदार्थ प्राप्त कर सत्य आख्यायिकाएं बताई हैं। फिर तो स्पष्ट ही पूर्ण सही खोज होगई।

इस ही मीराँ के मंदिर में मीराँजी अनन्य भक्ति से श्री कृष्णचंद्र भगवान् गिरधरलालजी के आगे पूर्ण-प्रेमा भक्ति से नृत्य और गान, संगीत-वैभव-विभूति से किया करती थी, जिनके घात के लिए मूर्खों ने विष आदि के भी प्रयोग किये परन्तु मीराँजी का बाल भी बाँका नहीं हुआ। जैसा कि श्लोक में है :—

(३) अत्रैव माधवपदाम्बु-सुधा-प्रमत्ता,
मीराँ ननर्त गलितस्वपराभिमाना।
घोरं हलाहलमिहैव तदीय हस्ते
श्रीनन्दसूनुचरणामृततां प्रपेदे॥३४॥

भगवच्चरणारविंद के सुधा का पान करके मस्त हुई मीराँ ने इसी स्थान पर अपने पराये का अभिमान त्याग कर नृत्य किया था और यहीं पर घोर हलाहल विष भी उसके हाथ में पहुँच कर श्री नन्दनन्दन का चरणामृत बन गया था।

१६. श्री पं० पुरुषोत्तमदासजी बी. ए. (पूर्व में मेड़ते के नायब हाकिम) रचित मीराँबाई के नाटक में जो कुछ विशेष बातें हैं सो संक्षेप में देते हैं :—

[क] कर्नल टॉड साहब ने जो गलती की (राणा कुंभा की राणी मीराँजी को लिख दी) उसका खंडन ऐतिहासिक प्रमाणों से किया है।

[ख] सं० १५१८ में दूदाजी ने मेड़ता विजय कर के उसे बसाया।

[ग] मीराँजी दो ही वर्ष के थे तब माता का स्वर्गवास हो गया था।

[घ] मीराँजी के हाथ से चारभुजानाथ दूध पीते थे।

[ङ] मीराँजी की उत्पत्ति भक्तजन नदी में से मिलना मानते हैं।

[च] सं० १५७३ में मीराँजी का विवाह राणा साँगाजी के ज्येष्ठ पुत्र भोजराजजी के साथ हुआ तब से वे चित्तौड़ में रहने लगी और श्री गिरधरलालजी की मूर्ति वह साथ ले गई जिसकी भक्ति पूर्वक अर्चना करती रहती थी।

[छ] विवाह के पहिले जो भजन मीराँ ने बनाये उनमें छाप दी है— "मीराँ कहै चतुर्भुज नाथा" अथवा "मीराँ कहे श्री हरि अविनाशी"

इत्यादि। और विवाह के पीछे जो पद बनाये उनमें यह छाप दी हैं—"मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर।" "मीराँ के प्रभु गिरधर नागर" इत्यादि। गिरधर की मूर्ति साथ ले जाने का यह पुष्ट प्रमाण भी है।

[ज] विवाह के १० दस वर्ष उपरांत ही मीराँजी के पति का स्वर्गवास होगया था। इसके ६ महीने पीछे ही वीर राणा सांगाजी भी इस संसार को त्याग गये थे।

[झ] सं० १५९५ में जोधपुर के राव मालदेवजी ने मेड़ता को हस्तगत कर लिया और तब मीराँबाई, वीरमदेवजी बड़े बाप को और कई आदमियों को साथ लेकर तीर्थ-यात्रा को चली गई। द्वारका पहुँच गई और वहां सं० १६०३ में द्वारकानाथजी की ज्योति में लय हो गई। (कोई लोग कहते हैं कि मृत्यु से मरी)।

[ञ] भक्त-शिरोमणि प्रसिद्ध वीर जयमलजी मीराँजी के चचेरे भाई थे।

ता० १०-४-४४ ई०
जयपुर सिटी

पु० श्री हरिनारायण शर्मा,
बी. ए., विद्याभूषण

* श्रीः *

मीरां बृहत् पदावली



पद–१ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(आकांक्षा)

अँखियाँ कृष्ण मिलन की प्यासी (टेर)
आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हाँसी ।। १
आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी ।। २
मेरे तो मन (अब) ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ४



पद–२ : राग कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(लीला वर्णन)

अच्छा लेहु ब्रजवासी कन्हैया, अच्छा लेहु रे (टेर)
बरसाने से चली गुजरिया, आगे मिले महाराज रे ।
कोरी कोरी मटुकी में दही जमाया, चाख लेहु महाराज रे ।। १
दधि मोरो खायो मटुकिया फोरी, इँडुरिया कहाँ डारी लाल रे ।
हार सिंगार सभी मेरो तोरचो, दुलरी कहाँ डारी लाल रे ।। २
जाय पुकारूँगी कंस के आगे, न्याय करो महाराज रे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहार रे ।। ३



१–(या.सं.– सं.रा.क से)

नोट–इसका पाठान्तर–"श्याम मिलन की" और "करवत लों जाय कासी" । "बृ.रा.र." में सूरपद है–"अँखियाँ हरि दरसण की प्यासी" (टेर) । परन्तु अंतरे भिन्न हैं । फिर भी यह पद सूर-पद की ही छाया से बना होगा–सं०

२–३ (क); (बृ.रा.र.पृ. ६०)

पद—३ : राग—झिंझोटी : ताल—कहरवा

(भक्त महिमा)

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर लाई भीलणी (टेर)

ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ।। १
झूटे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नींच जाने नहिं, रस की रसीलणी ।। २
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमान चढ़ी ।
हरिजी सूँ बाँध्यो हेत, बैकुंठ में झूलणी ।। ३
ऐसी प्रीत करै कोई, दास मीराँ तरै जोई ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद—४ : राग—काफी : ताल—कहरवा, दीपचंदी

(उत्कण्ठा)

अजी म्हारी पीर न जाने, बैरन हे थारो वीर (टेर)

चुन चुन कलियन सेज बणाई, सेजड़ियाँ सुख माँणें ।। १
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँसूं जो रूड़ो रँग माँणें ।। २

◈ ◈ ◈

३—२ (म); २ (भ)
४—३ (क); (या०— प्रति सं० ३६६।४८)
४—पा० 'छाँणें' ।

पद–५ : राग–कालिगड़ा वा कान्हड़ा : ताल–धीमा तिताला

(भगवत् लीला)

अजी ये ललाजू आज गोकुल बासी (टेर)
गोकुल बासी प्राण हमारे, हाँ ललाजी ।
श्यामसुंदर अविनासी ।। १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हाँ ललाजी ।
बीचे नदी यमुनासी ।। २
यमुना के तीरे धेनु चरावें, हाँ ललाजी ।
हाथ लिये नौलासी ।। ३
बृन्दावन की कुंजगलिन में, हाँ ललाजी ।
सँग दुलहिन राधासी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हाँ ललाजी ।
तुम ठाकुर मैं दासी ।। ५



पद–६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(मनस्ताप)

अपणाँ करम ही का खोट, दोष काँई दीजेरी आली (टेर)
मैं तासूँ बूझूँ कोई न बतावै, सब ही बटाऊ लोग ।
सुणजो री मोरी संग की सहेली, बाट चलत लगी चोट ।। १
अपणाँ दरद कूँ सब कोई जाणें, पर दुख कूँ नहिं कोइ ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, बची चरण की ओट ।। २



५–२ (म); (आ.सा.भा. १ पृ. ११३)
६–२ (म); (क.ब. १३)

पद–७ : राग–सोरठ वा झँझोटी वा मांढ
(आत्मकथा)

अपणा गिरधर कै कारणै, (वा) मीराँ वैरागण हो गई[1] (रे) (टेर)
जबतै सिर पर जटा रखाई[2], नैणां नींद गई (रे) ॥ १
दंड कमंडल और गूदड़ी, सिर पर धार लई (रे) ॥ २
छापा तिलक बनाये छबि सों, माला हात रही[3] (रे) ॥ ३
दोउ कुल छाँड भई वैरागण, हरि सों टेर दई (रे) ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, गोविन्द सरण भई (रे) ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–८ : राग–जंगलो पीलू : ताल–तितालो
(प्रेम की दृढ़ता)

अब कोऊ कछु कहो दिल लागारै (टेर)
जाकी प्रीत लगी लालन से, कंचन मिला सुहागा रै ।
हंसा की प्रकृत हंसा जाणे, का जाणैं नर कागा रै ॥ १
तन भी लागा मन भी लागा, ज्यों बामण गल धागा रै ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा रैं ॥ २

◈ ◈ ◈

पद–९ : राग–ईमन : ताल–इकताल
(प्रेमप्रवाह)

अब कोउ कैसे कहो दिल लागा (टेर)
मेरी प्रीत लगी मोहन से, सोने मिलत सुहागा ॥ १
कोउ येक निंदो कोउ येक विंदो, नाम सुधारस पागा ॥ २
जन मीराँ गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा ॥ ३

◈ ◈ ◈

७–२ (म); (मी.ली.दी.ना. पत्र २९) (मी.ली.स.मा. २२)
१ पा०–'भई रे' । २ पा०– 'वधाई' । ३ पा०–'लिई' ।
८–१ (उ); (प्रभुनाव का गुटका सं. २९)
९–१ (उ); (सूर्यनारायणजी दाधीच से प्राप्त)

पद–१० : राग–झँझोटी : ताल–दादरा
(प्रेम-दृढ़ता)

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेर)
माता छोड़ी पिता छोडे, छोडे सगा भाई।
साधु संग बैठ-बैठ, लोकलाज खोई ॥ १– अब०
संत देख दौड आई, जगत देख रोई।
प्रेम आँसु डार-डार, अमर बेल बोई ॥ २– अब०
मारग में तारग मिले, संत राम दोई।
संत सदा शीश राखूं, राम हृदय होई ॥ ३– अब०
अंत में से तंत काढ़ी, पीछे रही सोई।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई ॥ ४– अब०
अब तो बात फैल गई, जाणे सब कोई।
दास मीराँ लाल गिरधर, होनी हो सो होई ॥ ५– अब०

◈ ◈ ◈

पद–११ : राग–पीलू। ताल–कहरवा।
(प्रेमप्रवाह)

अब नहिं जाने दूँ गिरधारी,
(मोहे) प्रीत लगी अति भारी (टेर)
बाँको मुकट काछनी सुन्दर, ऊपर जरद किनारी।
गल मुतियन की माल बिराजे, कुण्डल की छबि न्यारी ॥ १
बाँकी भों कजरारे नैनां, अलकें छुट रही कारी।
मंद-मंद मुरली धुन बाजत, मोही ब्रज की नारी ॥ २
क्षुद्र घंटिका कटि कर सोहै, भुज पर बाजू धारी।
कड़ा मरहटो सुघर नेवरी, नूपुर की झुँणकारी ॥ ३
दुरजन लोग हँसो क्योंने मोसों, दे दे कर कर तारी।
मीराँ प्रभु की भई दिवानी, प्रेम मगन मतवारी ॥ ४

◈ ◈ ◈

१०–(उ)
नोट–यह पद 'मेरे तो गिरधर गोपाल' पद में स्थाई के थोड़े परिवर्तन से किसी दादूपंथी द्वारा विकृत हुआ है।
११–१ (उ); (पु.ना.बा.)

पद–१२ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

अब तो निभायाँ बनेगी, बाँह गहे की लाज (टेर)
समरथ सरण तुम्हारी साँइयाँ, सरब सुधारण काज ॥ १
भवसागर संसार अपर बल, जामें तुम्ही जहाज ॥ २
निरधाराँ आधार जगतगुर, तुम बिन होय अकाज ॥ ३
जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज ॥ ४
मीराँ सरण गही चरनन की, पैज रखो महाराज ॥ ५



पद–१३ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(गुरु-रहस्य)

अब (तो) हरि नाम लो लागी ।
सब जग को यह माखन चोरचो, नाम धरचो वैरागी (टेर)
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूँड मुडाइ डोरी कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ॥ १
मात जसोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव ।
स्याम किसोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाँव ॥ २
पीताम्वर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर कृष्ण की दासी मीराँ, रसना कृष्ण वसै ॥ ३



१२–१ (उ); (वं.पु.ष्ट.४२)
१३–२ (म)
नोट–इस पद में चैतन्य महाप्रभु का स्पष्ट उल्लेख और स्मरण है ।

पद–१४ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम-निश्चय)

अब नहिं मानांला म्हे थारी, म्हाँने बर मिलिया गिरधारी[1] (टेर)
मन कपूर की एकहि गति है, कहा कहुँ बार हज़ारी ।
कंकर कंचन एक गिणत है, गुंज मिरच इकसारी ॥ १
अनँत धणी के सरणे आई, हाथ सुमरिणी धारी ।
जोग लियो जब बाद[2] तजीरी, गुर पाया निज भारी ॥ २
साध संगत मेरो मन राजी, भई कुटंब सूं न्यारी ।
कोड़ बेर समझावो मोकूँ, चालूँ (जूं) बुद्धि हमारी ॥ ३
म्हे रांणां के परत न रहस्यां, केई बेर कह-कह हारी ।
सौ बातन की एक बात है, अब तो समझ गँवारी ॥ ४
रतन जडित की टोपी सिर पर, हार कंठ को भारी ।
चरण घूघरा धमस पडत हैं, (म्हे) करी स्याम सूँ यारी[3] ॥ ५
लाज सरम तो सभी गुमाई, यो तन शरणां धारी ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ॥ ६



१४–१ (उ०); (दीना.मं.मी.प. १६)

१–पा.–'अति भारी' ।

२–पा.–'जब क्या दिलगीरी' ।

३–पा.–'मैं भई श्याम की प्यारी' ।

पद–१५ : राग–काफी : ताल–जैत

(प्रेम दृढ़ता)

अब नां रहूँगी श्याम अटकी, म्हारो मन लाग्यो गिरधर से (टेर)

म्हांने गुर मिलिया अविनासी, दई ग्यान की गुटकी।
लगी चोट निज नांव धणी की, म्हारै हिवड़ै खटकी ॥ १

माणक मोती परत न पहरूँ, मैं तो कबकी नट गी।
गहणों म्हारे माला दोवडो, और चंनण की कुटकी ॥ २

राणा कुलकी लाज गमाई, साधाँ के संग भटको।
नित प्रत उठ जाऊं गुर दरसण, नाचूँ दै दै चुटकी ॥ ३

परमगुरू के सरणै जाऊँ, करूँ प्रणाम सिर लटकी।
जेठ बहू की काण न मानूँ, पड़ो घूंघट पर पटकी ॥ ४

करम लिखायो साध संगत में, हर-सागर[1] में लटकी।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भो-सागर से छुटकी ॥ ५



१५–१ (उ०); (जमा० ७)–(दीना-मं.प. १७)

१ पा.–'मारग'।

पद–१६ : राग–कामोद, छाया : ताल–कहरवा

(मीराँ लीला सम्वाद)

अब मीरां मान लीज्यो म्हारी,
हांजी थांनै सइयां बरजै सारी (टेर)
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी ।
कुँवर पाटवी सो भी बरजै, और सहेल्यां सारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी ।
गले गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी ।। २
साधुनके संग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी ।
नित[1] प्रति उठि नींच घर जावो, कुलकूँ लगावो गारी ।। ३
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी ।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, अब दिलमें कहा धारी ।। ४
तारयो पीहर सासरो तारयो, माय मोसाली तारी ।
मीराँ ने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–१७ : राग–काफी वा मांढ : ताल–जैत

(आत्मनिवेदन)

अब मैं शरण तिहारी जी मोहि राखो कृपानिधान (टेर)
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान ।। १
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जाणैं सकल जहान ।। २
कहँ लग कहूँ गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान ।
मीराँ कहै मैं शरण रावरी, सुनियो दोनों कान ।। ३

◈ ◈ ◈

१६–३ (क.)
१ पा०–'नित प्रति जाय नीच घर बैठो' ।
१७–१ (उ.)

पद–१८ : राग–सोरठ, विहाग : ताल–दीपचंदी

(प्रेम में त्याग)

अरी एरी ऊदाँ लागी का नाम न लेय (टेर)
जल से प्रीत करी मछली ने, बिछुरत प्राण तजे ॥ १
मृगाँ की प्रीति लगी नादाँ से, सनमुख सेल सहे ॥ २
दीपक से प्रीत लगी पतंग को, वार फेर जिय दे ॥ ३
मीरां की प्रीति लगी है संतों से, गुरु चरणाँ चित दे ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१९ : राग–जंगलो : ताल–कहरवा

(भगवत स्मरण)

अरे रे मैं तो ठाडी जपूं राम माला रे (टेर)
मैं जपती नांव मेरे सायब का, आंण मिलो नँदलाला रे ।
हाथ सुमरणी कांख कूबड़ी, ओढ़ रही मृगछाला रे ॥ १
मोर मुकट पीतांबर सोहै, ओढे लाल दुसाला रे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भगतन के प्रति पाला रे ॥ २

◈ ◈ ◈

पद–२० राग–आसा, मांढ : ताल कहरवा

(राणा संवाद -प्रेम–निश्चय)

अरे रांणां पहली क्यों ना बरजी ।
लागी गिरधरिया सूं प्रीत (टेर)
मारो चाहे छाँडो राणा, नाहिं रहूँ मैं बरजी ।
सुगनां साहिब सुमरतां रे, मैं थारे कोठे खटकी ॥ १
राणाजी भेज्यो विषरो प्यालो, कर चरणामृत गटकी ।
दीनबंधु सांवरियो हैरे, जाणत है घट २ की ॥ २
म्हारा हिरदा मांय बसी है, लटकन मोरमुकट की ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मैं हूँ नागरनट की ॥ ३

◈ ◈ ◈

१८–२ (म.); (पुजा नाथू.पु.से.)
१९–२ (म.); (प्रभुनारायणजी का गुटका सं. २९)
२०–२ (म.); (मी.प.जमा.राम. ६)

पद–२१ : राग–सोरठ, शंकरा : ताल–तिताला

(उलहना)

ग्रहो काँई जाणों गुवालियो बेदरदी पीड़ पराई (टेर)
(जो) जनमत ही कुल त्यागन कीनों, बन बन धेनु चराई ।। १
चोर चोर दधि माखन खायो, ग्रबला नार सताई ।। २
सोला सैंस गोपी तज दीनी, कुबजा संग लगाई ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुंण करै थारी (रे) बड़ाई ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–२२ : राग–काफी : ताल–दीपचन्दी

(प्रेम)

ग्राई देखन मनमोहन को, मोरे मन में छबि छाय रही (टेर)
मुख पर का ग्राँचल दूर किया,
तब ज्योति में ज्योति समाय रही ।। १ ग्राई०
सोच करे ग्रब होत कहा है,
प्रेम के दुन्द में ग्राय रही ।। २ ग्राई०
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
बूंद में बूंद समाय रही ।। ३ ग्राई०

◈ ◈ ◈

२१–१ (उ.); (दीना.मं.मी.प.६)
२२–२ (म.)

पद–२३ : राग–काफी, घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

आज अनारी ले गयो सारी, बैठि कदम की डारी हे माय ।
म्हारे गैल पर्‌यो गिरधारी हे माय, आज अनारी ले गयो सारी (टेर)
मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृष्णमुरारी हे माय ॥ १
ले गयो सारी म्हारी अनारी, जल में खड़ी उघारी हे माय ॥ २
सखी सयानी मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि देवैं तारी हे माय ॥ ३
सास बुरी अरु ननद हठीली, लरि लरि दे मोहिं गारी हे माय ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(अपरोक्ष-प्रेमानन्द)

आज सखि मोरे अनन्द भयो है, घर में मोहन लाधो री (टेर)
बन जोई बृन्दावन जोई, जोई बिरज सव बाधो री ॥ १
सतवे मलीए अजब झरोखे, वाही तें हरिजी लाधो री ॥ २
म्हारा तो घरमें मही घनेरो, हरि चोर चोर दधि खाधो री ॥ ३
अपने द्वार में कवकी ठाढी, बाँह पकर हरि साधो री ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधर मिलियो, बिरह बाज ने बाँधो री ॥ ५

◈ ◈ ◈

२३-२ (म.)
२४-२ (म.); (सं रागकल्पद्रुम पृ. ४२)

पद–२५ : राग–टोडी, जोनपुरी : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

आजु मैं देख्यो गिरधारी ।
सुन्दर बदन मदन की शोभा, चितवन अनियारी (टेर)
बजावत बंसी कुंजन में ।
गावत ताल तरंग रंग ध्वनि, नचत ग्वाल-गन में ॥ १
माधुरी मूरति वह प्यारी ।
बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच, टरे नहीं टारी ॥ २
वाहि पर तन मन हैं वारी ।
वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी ॥ ३
तुलसी बन कुंजन संचारी ।
गिरधरलाल नवल नटनागर, मीराँ बलिहारी ॥ ४



पद–२६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(मिलन-लालसा)

आज्यो आज्यो गोविन्दा म्हारे म्हैल,
निहारां थारी बाटड़ली खड़ी जी, म्हारै आज्यो (टेर)
तनका त्यागूँ कापड़ा जी, ऊगंते परभात ।
खड़ी जोवती राह में जी, सतगुरु पोंछे आय ।
पियालो लियां हाजिर खड़ी, जी ॥ १
साधु हमारी आतमा जी, हम साधुन की देह ।
रोम रोम में रम रही जी, ज्यूं बादल में मेह ।
सुरत हरि नाम सें लगी, जी ॥ २
मीराँ हरि की लाडिली जी, तुम मीराँ के स्याम ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यो म्हारे राम ।
सुरत निज नाम से लगी, जी ॥ ३



२५–२ (म.); (भक्तनारी पृ. ४७)
२६–१ (उ.)

पद–२७ : राग–मारू व जोगिया : ताल–जैत

(इष्ट-प्राप्ति)

आँण मिल्यो अनुरागी, जोगियो, आँण मिल्यो अनुरागी । (टेर)
साँसो सोच अंग नहिं अब तो, तिस्ना दुबध्या त्यागी ।। १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, स्याम बरण बड़भागी[1] ।। २
जनम जनम को साहिब मेरो, वाहो सों लौ लागी ।। ३
अपणाँ पिया संग हिल मिल खेलूँ, अधर-सुधारस-पागी ।। ४
मीराँ गिरधर के मन मानी, अब मैं भई सुभागी ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–२८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

अपनी गरज हो मेटी, साँवरे हम देखी तुमरी प्रीत (टेर)
आपन जाय द्वारका छाये, ऐसे वेहद भये हो नचिंत ।
ठोर ठोर अलेव फिरत हो, फूल भँवर की सी रीत ।। १
बिन दरसन कल न परत है, सपने कै सी प्रीत ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, प्रभु चरणन पर चत ।। २

◈ ◈ ◈

पद–२९ : राग–मारू, सारंग वा माँझ : ताल–तिताल

(इष्ट प्राप्ति)

आये आये जी महाराज आये, निज भक्तन के काज बनाए । (टेर)
तज वैकुण्ठ तज्यो गरुड़ासन, पवन बेग उठ धाये ।। १
जब ही दृष्टि परे नँदनन्दन, प्रेम भक्ति रस प्याये ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल चित लाये ।। ३

२७–१ (उ.); (दीना.मं.मी.पृ. ३५)
 १ पा. 'अनुरागी' ।
२८–१ (उ.)
२९–२ (म.); (बृ.रा.र.पृ. १७२)

पद–३० : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह)

आली री मेरे नयनन बान पड़ी । (टेर)
चित्त चढ़ी मेरै माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।। १
कब की ठाडी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ।। २
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ।। ३
मीराँ गिरधर हात बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ।। ४



पद–३१ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(चरित्र, बृन्दाबन-महिमा)

आली मोहि लागत बृन्दाबन नीको । (टेर)
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को ।। १
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को ।। २
रत्न-सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धरचो तुलसी को ।। ३
कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ५



३०–१ (उ·)

नोट—यह पद किसी भी भक्त कवि के पद से टक्कर ले सकता है । भाव-भाषा-शैली सभी दृष्टि से यह अत्युत्तम है। सं०।

३१–१ (उ.); (वृ.रा.र.पृ. ५१६)

पद–३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम प्रवाह)

आली साँवरा की दृष्टि मानो प्रेम की कटारी है। (टेर)
लागत बेहाल भई, तन की सुधि बुधि गई।
तन मन व्याप्यो प्रेम, मानो मतवारी है।। १
सखियां मिलि दुइचारी, बावरी सी भई न्यारी।
हौं तो वाको नीके जानों, कुंज को विहारी है।। २
चंद को चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै।
जल बिना मीन जैसे, तैसे प्रीत प्यारी है।। ३
विनती करों हे श्याम, लागों मैं तुम्हारे पाम।
मीराँ प्रभु ऐसे जानो, दासी यह तुम्हारी है।। ४

◈ ◈ ◈

राग–आसा–मांड : ताल–दीपचंदी

(छवि वर्णन)

आवत मोरी गलियन में गिरधारी।
मैं तो छुप गई लाज की मारी। (टेर)
कुसुमल पाग केसरियाँ जामा, ऊपर फूल हजारी।
मुकुट ऊपरे छत्र बिराजे, कुंडल की छवि न्यारी।। १
केसरी चीर दरियाई को लहँगो, ऊपर अँगियाँ भारी।
आवत देखे कृष्ण मुरारी, छुप गई राधा प्यारी।। २
मोर मुकुट मनोहर सोहे, नथनी की छवि न्यारी।
गल मोतिन की माल बिराजे, चरणकमल बलिहारी।। ३
ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणज्यो कृष्ण मुरारी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल बलिहारी।। ४

◈ ◈ ◈

३२–२ (म.)
३–(क.)

पद–३४ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(मिलनोत्कण्ठा)

आवो आवो जी रँगभीना म्हारैं म्हैल,
प्यालो तो लियाँ हाजर खड़ी। (टेर)
सतजुग में सूती रही, त्रेता लई जगाय।
द्वापर में समझी नहीं, कलजुग पोंहच्यो आय॥ १
सतगुरु शब्द उचारिया जी, बिनती करों सुनाय।
मीराँ नैं गिरधर मिल्यो जी, निरभै मंगल गाय॥ २

◈ ◈ ◈

पद–३५ : राग–तिलँग : ताल–धीमा

(विनय)

आवो जी गिरधारीजी थांसूं में बोले। (टेर)
थे तो म्हारा जनम जनम रा संगी,
थांरे लारां लारां संग में डोले॥ १
आद अंत तन मन धन मेरे,
आनंद करां कलोले॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर,
आन मिलो अनमोले॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३६ : राग–तिलँग : ताल–धीमा

(विरह)

आवो मनमोहनाजी, जोऊँ थारी बाट (टेर)
खान पान मोहि नेक न भावे, नैण न लगे कपाट॥ १
तुम आयां बिन सुख नहिं मेरे, दिल में बहोत उचाट॥ २
मीराँ कहे मैं भई रावरी, छाँडो नाहि निराट॥ ३

◈ ◈ ◈

३४–१ (उ.)
३५–१ (उ.)
३६–१ (उ.)

पद–३७ : राग–खमाच : ताल–धीमा

(विरह)

आवो मनमोहनाजी मीठा थाँरा बोल। (टेर)
बालपने की प्रीत रमइयाजी, कदे नहिं आयो थारो तोल ॥ १
दरसन बिन मोहिं जक न परत है, चित मेरो डाँवाडोल ॥ २
मीराँ कहे मैं भई रावरी, कहो तो बजाऊं ढोल ॥ ३



पद–३८ : राग–देश : ताल–दीपचंदी

(उपदेश)

आवो सहेल्याँ रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि। (टेर)
झूँठा माणिक मोतियाँ री, झूँठी जगमग जोति।
झूँठा सब आभूषणां री, सांची पियाजी री पोति ॥ १
झूँठा पाट पटंवरां री, झूँठा दिखणी चीर।
साँची पियाजी री गूदड़ी, जामें निरमळ रहे सरीर ॥ २
छप्पन भोग बुहाई देहे, इन भोगिन में दाग।
लूँण अलूँणो ही भलो हे, अपणे पियाजी को साग ॥ ३
देखि विराणे निवाँण कूँ हे, क्यूँ उपजावै खीज।
कालर अपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज ॥ ४
छैल विराणो लाख को हे, अपणे काज न होइ।
ताके संग सिधारताँ हे, भलां न कहसी कोइ ॥ ५
वर हीणो अपणो भलो हे, कोढी कुष्टी होइ।
जाके संग सिधारताँ हे, भलां कहे सब कोइ ॥ ६
अविनासी सो वालमा हे, जिनसूँ साँची प्रीति।
मीराँ कूँ पिरभू मिल्या हे, ये ही भगति की रीति ॥ ७



३७–१ (उ.); (मीरांपदावली वि. कु., पृ. ८)
३८–१ (उ.)

पद–३६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किरण संग खेलूँ होरी । (टेर)
तुम तो जाय विदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी ।
तन आभूषण छोड़े सबही, तज दिये पाटपटोरी ।
मिलन की लग रही डोरी[1] ।। १
आप मिल्यां बिन कल न पड़त है, त्यागे तिलक तमोरी ।
मीराँ के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ।
दरस बिन बिरहन दोरी ।। २



पद–४० : राग–बरवा-उभाज : ताल–तिताला

(उलहना)

इतनूं कांईं छै मिजाज, म्हारै मिंदर आ[व]तां ।
थांने इतनूं कांईं छै मिजाज । (टेर)
तन मन धन सब अरपन कीनूं, छाड़ी छै कुल की लाज ।। १
दो कुल त्याग भई बैरागण, आप मिलण की लाग [के काज] ।। २
मीराँ के प्रभु कब र मिलोगे, कुबज्या आई कांईं याद ।। ३



३६–१ (उ.); १–पा० 'तोरी' ।
४०–२ (म.;) (प्रभनारायणजी के गुटके से पृ. ४३)

पद–४१ : राग–सारंग : तर्ज–घूमर : ताल–कहरवा

(लीला वर्णन)

इन काना की बंसी म्हांने, लागे प्यारी माय। (टेर)
आज बिरंज पर इन्दर कोप्यो, बरसे मूसलधारा।
बाँवां नख पर गिरवर धार्‌यो, डूबत बिरज उबारा।
गऊ बछड़ा भीजे री माय ॥ १
पांव पयादे सब चल आये, सुन मुरली का बाजा।
मृत्युलोक में टटियां छाई, जहाँ देवन का बासा।
ब्रह्मा बिष्णु खड़े री माय ॥ २
कूद पड़े कालीदह माँही, नाग ज्यो नाथ्यो काली।
जमुनां के नीराँ तीराँ धेनु चरावे, ओढ़े कम्मल काली।
तट जमुना कढे री माय ॥ ३
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ती माला।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ठाकुर बंसीवाला ॥
यांकी सूरत पर बलिहारी माय ॥ ४

◈ ◈ ◈

४१–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से)

पद—४२ : राग—मांढ : ताल—दीपचंदी

(लीला)

इन सरवरिया री पाल, मीराँ बाई साँपड़े ।
साँपड़ किया अस्नान, सूरज सामी जप करे । (टेर)
(प्रश्न) होय बिरंगो नार, डगराँ बिच हे क्यूं खड़ी ।
काँई थारो पीहर दूर, काँई घराँ सासू लड़ी ।। १
(उत्तर) नहिं म्हारो पीहर दूर, नहीं घराँ सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। २
गुरु म्हारा दीनदयाल, वे हीराँ का पारखी ।
दियो म्हांने ज्ञान बताय, संगत करस्याँ साध री ।। ३
इन सरवरिया रा हंस, सुरंग ज्यांरी पाँखड़ी ।
राम मिलन कद होय, फड़के म्हारी आँखड़ी ।। ४
राम गये बनबास, साथहि सब रँग ले गये ।
ले गये (म्हारी) काया को सिंगार, तुलसी की माला दे गये ।। ५
खोई कुल की लाज, मुकंद थारे कारने ।
बेगहि लीज्यो सम्हाल, मीराँ पड़ी जो बारने ।। ६



पद–४३ : राग–मांढ वा सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

इसौ पिव जान न दीजै हो ।
स्याम सलौना लोइणां, मुख देख्यां जीजै हो । (टेर)
आवो सखी सहेलड़यो, वातां सुख लीजै हो ।
आरति अपणी कारणै, वाकै पाइ पड़ीजै हो ॥ १
आतम ध्यान लगाइ कैं, वाकैं चरणां चित दीजै हो ।
चन्दन केरा नाग ज्यूँ, लपटाइ रहीजै हो ॥ २
कर जोड़ूँ बिनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीराँ व्याकुल बिरहनी, अपनी कर लीजै हो ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–४४ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

उड़जा रे काग बन का, मेरा स्याम गया वोहो दिन का रे । (टेर)
तेरै उड़यां सूँ राम मिलैगा, धोखा भागै मन का रे ॥ १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हरि हैं गाढ़े दिल का रे ॥ २
आप तो जाय द्वारिका छाये, हम बासी मधुबन का रे ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, चरणकँवल हरिजन का रे ॥ ४

◈ ◈ ◈

४३–१ (उ.); (क.व. २८)
४४–२ (म.); (रामस० गु० पृ० ३२३)

पद–४५ : राग–ईमन-सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रतीक्षा)

उड़ि जावो री म्हारी सोनचिड़ी (टेर)
काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी आँख पाँखडी, काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी चोंचजड़ी ।। १
रूपा सूं मँढ़ाऊँ थारी आँख पाँखड़ी, सोना सूं मँढ़ाऊँ थारी चोंचजड़ी ।। २
कह म्हारी चिड़िया सुगन री बाताँ, कद आवेला म्हारा स्याम धणी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बाट जोऊँ थारी कदकी खड़ी ।। ४



पद–४६ : राग–खमाच : ल–कहरवा

(चरित्र, वृन्दावन महिमा)

उधो म्हांनै लागै बृन्दाबन नीको रे। (टेर)
बृन्दाबन में धेनु बहुत हैं, भोजन दूध दही को रे ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, सिर केसर को टीको रे ।। २
घर घर में तुलछी को बिड़लो, दरसण माधवजी को रे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरी बिना सब फीको रे ।। ४



४५–२ (म.); (पुजा.नाथू.पु. से)
४६–१ (उ.); (राम स० गु०)

पद–४७ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा

(उद्धव संवाद, प्रेम-प्रवाह)

ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकुल म्हांनें क्यूं तरसाई रे। (टेर)
चन्दन घिस लाई वासैं प्रीतड़ी लगाई, वानें लाज ना आई।
देखो जी ऊधोजी आखिर चेरी की जाई रे ॥ १
बहोत दिन बीत्या म्हारी सुध ना लई, नैणां से नींद गई।
चांदणी सी रात म्हारै वैरण भई रे ॥ २
रास तो कीयो म्हांसें प्रीतड़ली जोड़ी, अब तुम काहेकूं तोड़ी।
तिरबंकी प्यारी म्हांसें हुई छै नेड़ी रे ॥ ३
मीराँजी तो बिना कल ना पड़ै, पल छिन नाहीं सरे।
छतियाँ तपै नैणां नीर झरैं रे ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–४८ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(उद्धव-गोपी संवाद)

ऊधोजी हमारे राम संगाती, उस लोभी ने भेजी है पाती। (टेर)
आप तो जाय वहां पर छाये, हमको भेजी जोग की पाती।
झुर झुर नैन भये ओलाती, नदियाँ सी बही जात दिनराती ॥ १
आम की डार कोयलिया बोलै, हमरो मरन लोग की हांसी।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मैं तो जनम जनम की दासी ॥ २

◈ ◈ ◈

४७–२ (म.); (राम स० गु०)
४८–२ (म.)

पद–४९ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(उद्धव संवाद—प्रेम प्रवाह)

ऊधो म्हारे मन की मन में रही। (टेर)
एक समैं मोहन घर आये, मैं दधि मथत रही।
या दुनियां को झूठो धंधो, मैं हरि कूं बिसर गई ॥ १
वा कपटी की कहा कहूं, ऊधो वचन प्रतीत नहीं।
नैन हमारे ऐसे झूरैं, उलटी गंग बही ॥ २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में जमुना बही।
आप मोहनजी पार उतर गया हमसैं कछू ना कही ॥ ३
ब्रजवनिता कौ संग छांडिकै, कुबज्या संग लई।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, चरणां लिपट रही ॥ ४



पद–५० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(लीला)

ए री बरजो जसोदा कान, मेरे घर नित्य आता है।
जिधर को मैं मुड़ जाती हूँ, बगद मेरे सामा ही आता है। (टेर)
मैं जल जमुना भरन जात हूँ, मेरे सामा ही आता है।
कँकरी दे मोरी बहियाँ मरोरी, बाराजोरी मचाता है ॥ १
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन, चला पीछे से आता है।
दधि की मटकी फोड़, माखन मेरा लूट खाता है ॥ २
रास बिलास करत गोकुल में, बंसियाँ सुनाता है।
मीराँ को गिरधर मिलिया, चरणों में लगाता है ॥ ३



४९–२ (म.); (राम स० गु०)
५०–३ (क.);

पद-५१ : राग-मालकोश मुलतानी : ताल-तिताला

(लीला)

एरी तेरी कौन जाति पनिहारी । (टेर)
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच मिले गिरधारी ।।—१
सुन्दर वदन नयन मृग मानो, विधना आप सँवारी ।।—२
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारी ।।—३

◈ ◈ ◈

पद-५२ : राग-सोरठ : ताल-कहरवा

(लीला वर्णन)

ए री मा बंसीवारो कान ।
चंद्र बदन मृगलोचन राधे, पायो स्याम सुजान (टेर)
गोकुल से आई गूजरी, मथुरा से आयो कान ।
अधबिच झगड़ो छेड़ दियो, उन माँग्यो मही को दान ।। १
कबके तुम दानी भये जी, कब हम दीनो दान ।
बाबा नन्द की गऊ चरा कर, भये अनोखे कान ।। २
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, सब ही में सुरज्ञान ।
बंसी बजा मेरो मन हर लीन्हो, मार बिरह का बान ।। ३
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, कुण्डल झिलकै कान ।
साँवरी सूरत पर तिलक बिराजे, वाही से लाग्यो मेरो ध्यान ।। ४
सुरनर मुनिजन ध्यान धरत हैं, गावत वेद पुरान ।
मीराँ नें प्रभु दरसण दीज्यो, बृज तज अन्त न जान ।। ५

◈ ◈ ◈

५१-१ (उ.)
५२-२ (म.); (फु. प.)

पद–५३ : राग–सोरठ (मल्हार) : ताल–कहरवा

(विरह तथा प्रेम)

एरी मैं खड़ी निहारूँ बाट,
चितवन चोट कलेजे बह गई, सुन्दर स्याम सु घाट। (टेर)
मथुरा में कुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट।
केसर चन्दन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट ॥ १
हमरा पिलँग जड़ाऊ छोड्या, बणिया (रेसम) पीली पाट।
क्याँ पर राजी भयो साँवरो, चेरी के नहिं खाट ॥ २
अजहुँ न आयो कँवर नंद को, क्याँरी लागी चाट।
छाँड गयो मझधार साँवरो, बिना अकल को जाट ॥ ३
आप बिना गोपिन सब व्रज की, व्याकुल भई निराट।
मीराँ के प्रभु दरसण दीज्यो, करज्यो आनँद ठाट ॥ ४



५३–१ (उ.); (फु०प०)

पद–५४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम और विरह-व्यथा)

ए री[1] मैं तो प्रेम[2] दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय। (टेर)
सूली ऊपर सेज हमारी[3], किस बिध सोना[4] होय ॥ १
गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलना होय ॥ २
घायल की गत घायल जानैं, कै जिन लागी होय[5] ॥ ३
जौहरि[6] की गत जौहरि जानैं, कै जिन जौहर होय ॥ ४
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोय ॥ ५
मीराँ की तब पीड़ मिटैगी[7], बैद साँवलिया होय[8] ॥ ६



५४–१ (उ.); (शब्दावली-३) तथा (स. मा. मी. ली १७)

पाठान्तर १. हेरी; हेली; भई। २. राम; कृष्ण; श्याम। ३. पिया की। ४. मिलना। ५. और न जांणै कोइ; लाई (लागी की जगह) दूजा न जांणै कोय। ६. जोहर। ७. मीराँ को दुख तब ही मिटैगो (मिटही, मिटसी); मीराँ कै प्रभु गिरधरनागर; मीराँ को दुख तबही बीतै। ८. बैद साँमलिया होय; बैद साँवरियो होय; बैद रमीया होय। 'होय' के स्थान में 'होइ' भी है।

नोट—एक दो प्रतियों में यह अंतरा अधिक भी है–"सुख संपत में सब कोई साथी, त्रिपत पड़्याँ नहिं कोय"। (रामस्नेही गुटका तथा अन्य प्रति में)। कई प्रतियों में–'सूली ऊपर सेज पिया की, किस विध मिलना होय" यही अंतरा है, 'गगन मंडल पै..........." यह अंतरा नहीं है।—सं०

पद–५५ : राग–पीलू बरवा : ताल–धीमा तिताला

(विनय-प्रेमगहनता)

एक विरियाँ मुख बोलो रे, धुतारा जोगी। (टेर)
कानन कुण्डल गल बिच सेली, अब तेरो मुख खोलो रे ॥ १
रास रच्यो बंसीवट जमुना, ता दिन कीनो कोलो रे ॥ २
पूरब जनम की मैं हूँ गोपिका, अधबिच पड़ गयो झोलो रे ॥ ३
जगत बदीती तुम करो मोहन, अब क्यों बजाऊं ढोलो रे ॥ ४
तेरे कारन सब जग त्याग्यो, अब मोहे कर सों लो रे ॥ ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चेरी भई बिन मोलो रे[1] ॥ ६

◈ ◈ ◈

पद–५६ : राग–सोरठ

(विरह)

ऐसी ऐसी चाँदनी में पिया घर नांई। (टेर)
चार पहर दिन सोवत बीत्यो, तड़पत रैन बिहाई ॥ १
मैं सूती पिया अपने म्हैल में, सालूड़ा में आई सरदाई ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरख निरख गुण गाई ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–५७ : राग–बहार : ताल–तिताला

(विरह वेदना)

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी। (टेर)
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, तलफ़ तलफ़ जिय जासी ॥ १
तेरे खातर[1] जोगण हूँगी, करवत लूंगी कासी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल की दासी ॥ ३

◈ ◈ ◈

५५–१ (उ०); (सां. रागकल्पद्रुम–रागसागर का)
१–पाठान्तर–बोल। खोल। कोल। झोल। ढोल। सोंल। मोल।
५६–२ (म.); (फु.प.)
५७–१ (उ०)
१–पाठान्तर–कारण।

पद–५८ : राग–मांढ वा सोरठ : ताल–तिताला

(विरह)

ऐसै जन जानन दीजै हो ।
आवो मिलो सहेलड्यां, बाथां सुख लीजै हो । (टेर)
नैंन सलोने सांइयाँ, देख्यां सूँ जीजै हो ।
तन मन जोबन वार के, निछरावल कीजै हो ।। १
अपणी आरत कारणैं, वाके, पांइ परीजै हो ।
चंदन केरा रूख ज्यौं, चरणां लीपटीजै हो ।। २
हाथ जोड़ि बिनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीराँ ब्याकुल बिरहनी, वाकूँ दरसण दीजै हो ।। ३



पद–५९ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(विरह)

ऐसे पियै जान न दीजे हो ।
चलो री सखी ! मिलि राखिये, नैनन रस पीजे हो । (टेर)
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखत जीजे हो ।। १
जोइ जोइ भेष सों हरि मिले, सोइ सोइ कीजे हो ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बड़भागन रीजे हो ।। ३



५८–१ (उ०); (क.व.१७)

पद–६० : राग–देश : ताल–तिताला

(विनय)

ओ जी[1] महाराज, छोड़ मत जाजो,
मैं अबला बल नांही गुसांईं, तुमही मेरे सिरताज। (टेर)
मैं गुनहीन गुन नांही गुसांईं, तुम समरथ महाराज ॥ १
रावलि होइकैं किनरै जाऊं, तुम हो हिवड़ा रो साज ॥ २
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखै अब को[2] लाज ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–६१ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(मंगल)

ओढूं लज्या चीर, धीरजि कौ घाघरौ।
समता कांकण हाथ, सुरति कौ मूंदड़ौ। (टेर)
अँगियाँ है बिसवास, चूड़ो चित ऊजलौ।
दुलड़ी दिल दरियाव, साँच को दोवड़ो ॥ १
दांताँ इम्रत-मेख, दया को बोलबौ।
ऊवटणों गुरज्ञांन, ध्यानकौ धोइबौ ॥ २
नकबेसर हरिनांव, काजलि म्हारै धरम कौ।
बिंदलो जग उजियार, तिलक ततसार कौ ॥ ३
ग्यांन अंगूठी कान, जुगति का झूठणां।
जेलड सील संतोष, नरत का घूघरा ॥ ४
पटली ब्रह्म-ग्न्यांन, हरी बर राखड़ी।
पहरि सुवागण नारि, झरोखै आ खडी ॥ ५
पतिबरता की सेज, साहिबजी पधारिया।
मीराँ हरि की सरण, परम पद पाइया ॥ ६

◈ ◈ ◈

६०–१ (उ०); (बंगा. पु. पृ. ११)
१ पाठान्तर–हो जी।
२ पाठान्तर–के। अथवा राखो तो।

६१–२ (म०); (राम. स. गु.)

पद–६२ : राग–सोहनी वा विहागड़ो : ताल–तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

ओलूं थारी आवै हो महाराजा अबिनासी
हे म्हांनैं कब दरस दिखासी। (टेर)
बिरह बियोगन बन बन डोलूं, करवत ल्यूंगी कासी ॥ १
निस दिन ऊभी पंथ निहारूं, कब मोहि धीर वंधासी ॥ २
कृपा करौ म्हारै भवन पधारौ, नहिं यो जिवड़ो जासी ॥ ३
मैं मंदभागण काहे को सरजी, पिया मोसूं रहत उदासी ॥ ४
तुम हो हमारे अंतरजामी, मैं (थारा) चरणां री दासी ॥ ५
मीराँ तो कुछ जाणत नांहीं, पकड़ी टेक निभासी ॥ ६

◈ ◈ ◈

पद–६३ : राग–सोरठ, भैरवी : ताल–तिताला

(विरह)

ओलूंड़ी लगाइ गयो हे व्रज को वासी, कब मिलि जासी हे। (टेर)
चंपले री डाल कोयलिया बोलै हे, बोलत वचन उदासी हे ॥ १
गोकुल ढूंढ बृंदावन ढूंढ्यौ, ढूंढी मथुरा कासी हे ॥ २
रैंणि दिवस मछली ज्यूं तलफां, तलफ तलफ जिवड़ो जासी हे ॥ ३
जै कोई प्रभुजी नैं आंण मिलावै, छूटत प्राण वचासी हे ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरिजी मिल्यां दुख जासी हे ॥ ५

◈ ◈ ◈

६२–१ (उ०); (राम. स. गु.)
६३–१ (उ०); (राम स. गु.)

पद–६४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उलहना)

कछु दोष नहीं कुबज्या ने, बीरी अपना श्याम खोटा। (टेर)
आप न आवे पतियाँ न भेजे, कागज का काँईं टोटा ॥ १
नौलख धेनु नन्दघर दूधे, माखन का नाँईं टोटा ॥ २
आपहि जाय द्वारिका छाये, ले समदर की ओटा ॥ ३
कुबज्या दासी कंसराय की, वे नंदजी के ढोटा ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कुबज्या बड़ी हरि छोटा ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–६५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(उपदेश)

कछु लेना न देना मगन रहना। (टेर)
नांहि किसी की कांनां सुणनी, नांहि किसी कूं [अपनी] कहना ॥१
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिये सूं मिलता रहना ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, साँवरिया [के] चरणां चित देना ॥३

◈ ◈ ◈

पद–६६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

कठण लगन की पीर रे, हरि लागी सोई जाने। (टेर)
प्रीत करी कछु रीत न जाणी, छोड़ चले अधबीच ॥ १ क०
दुख की बेला कोई काम न आवे, सुख के सब हैं मीत ॥ २ क०
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आखर जात अहीर ॥ ३ क०

◈ ◈ ◈

६४–२ (म०); (भजनमंजरी पृ. १५८)
६५–२ (म०)
६६–१ (उ०)

पद–६७ : राग–यमन : ताल–कहरवा

(प्रेम)

कनैयो मेरा प्राण श्रीवृन्दावनबासी । (टेर)
साँवली सूरत पर मन वारी, कोय करे जग हांसी ।। १ कनैयो.
राधा वर के निकट वसत है, कोन जात मेरो कासी ।। २ कनैयो.
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ३ कनैयो.

◈ ◈ ◈

पद–६८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

कनैय्यो तेरो जमुना में कूद पर्यो रे। (टेर)
कालिंदी को कालो पानी रे, पेठत कछु ना डर्यो रे ।। १
नंद जसोदा गोप गोपी सब, निरखत नीर झर्यो रे ।। २
पैठ[1] पैयारी[2] काली नाग नाथ्यो रे, फण पर नृत्य कर्यो रे ।। ३
व्रज के काज गोवर्धन धार्यो रे, इन्द्र को मान हर्यो रे ।। ४
मथुरा में प्रभु जन्म लियो है, सुनके कंस डर्यो रे ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सुर को काज सर्यो रे ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह)

कबहूँ मिलैगो मोहि आई, रे तू जोगिया। (टेर)
तेरे कारण जोग लियो है, घरि घरि अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख रैंन नहिं निद्रा, तुम बिन कछु न सुहाई ।। २
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, मिलि करि तपत बुझाई ।। ३

◈ ◈ ◈

६७–२ (म०)
६८ (का. गु. ५।१९५)
  १. पैठ–घुसना । २. पानी में ।
६९–१ (उ०); (वा.) (मी. मं. पृ. ५५ पद ११९)

पद–७० : राग–जँगला, सारंग : ताल–तिताला

(प्रेम, उत्कंठा)

कभी गली हमारी आव रे, मोरे जिया की तपत बुझाव रे।
नँदजू के प्यारे लाला ।।
तेरे साँवरे बदन पर कई कोटि काम वारे। (टेर)
तेरियाँ जुलफाँ दिल दियाँ कुलफाँ जी दोऊ नैन है सतारे।
तेरी खूबी के दरश पै लाल नयन तरसते हमारे ।। १
पिया पिया करै पपीहरा रे निशि दिन सो याद तेरी।
मेरे साँवरे सलोने मोहन आशा दरशन केरी ।। २
घायल फिरूँ दरश की पीर जाने नहिं कोई।
मोहे लागी चोट प्रेम की जिन लागी जानै सोई ।। ३
जैसे जल के सोख हुए मीन क्या जीवै बिचारे।
कृपा कीजो दरशन दीजो मीराँ माधो नन्ददुलारे ।। ४



पद–७१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह, विनय)

कभी म्हारी गली आव रे, जिया की तपत बुझाव रे,
म्हारे मोहना प्यारे। (टेर)
तेरे सांवले बदन पर, कई कोटि काम वारे।
तेरे खूबी के दरस पै, नैन तरसते म्हारे ।। १
घायल फिरूँ तड़फती, पीड़ जाने नहिं कोई।
जिन[1] लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ।। २
जैसे जल के सोखे मीन, क्या जीवें बिचारे।
कृपा कीजे दरस दीजे, मीराँ नन्द के दुलारे ।। ३



७०–(वृ. रा. र. पृ. १२०)
७१–३ (क०);
१. पाठान्तर–जोगी पीर प्रेम की जाने बिरला जाने सोई।

पद–७२ : राग–झँझोटी, गारा : ताल–तिताला

(लीला)

कमलदल लोचना, तैंने कैसे नाथ्यो भुजंग। (टेर)
पैसि पताल कालीनाग नाथ्यो, फण फण निरत करंत ॥ १
समरथ नाग महाबलि जोधा, जमना को नीर अथंग ॥ २
कूद पड़्यो न डर्‌यो जल मांहीं, और काहू नहिं संग ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, श्रीवृन्दावनचंद ॥ ४

पद–७३ : राग–सोहनी : ताल–तिताला

(कर्म-गति)

कर्म की गत न्यारी, संतो ! कर्म की गत न्यारी। (टेर)
बड़े बड़े नैन दियें निरखण को, वन वन फिरत उघारी रे ॥ १
उज्ज्वल बरन दीनी बगलन कूं, कोयल कर दीनी कारी रे ॥ २
और नदियन जल निर्मल कीनो, समुदर कर दीनी खारी रे ॥ ३
मूरख को उत्तम राज दियत हो, पंडित फिरत भिखारी रे ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, राणोजी तो कौन बिचारी रे ॥ ५

७२–२ (म०)
७३–(का.४।१७२)

पद–७४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावनी)

करनां फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे। (टेर)
कोई दिन बाड़ी तो कोई दिन बँगला, कोई दिन जंगल रहना रे ।।१
कोई दिन हाथी कोई दिन घोड़ा, कोई दिन पांवों से चलना रे ।।२
कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय में पड़ना रे ।।३
कोई दिन खाना तो कोई दिन पीनां, कोई दिन भूखे ही मरना रे ।।४
कोई दिन पहनाँ तो कोई दिन ओढा, कोई दिन चिथरा पथरना रे ।।५
मीराँ कहै प्रभु गिरधरनागर, ऐसा कूंता करना रे ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–७५ : राग–विहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह-विनय)

करम-गत टारे नाहिं टरे। (टेर)
सतवादी हरिचँद से राजा, नीच घर नीर भरे ।। १
पाँच पाण्डु अरु कुन्ती द्रोपदी, हाड हिमालय गरे ।। २
जज्ञ किया बलि लेण इन्द्रासण, सो पाताल धरे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिष से अमृत करे ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–७६ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(वैराग्य)

करियो प्रभुजी की बात सब दिन, करो प्रभुजी की बात रे। (टेर)
हस्ती घोड़ा महल खजीना, दे दोलत पर लात रे ।। १
मा बाप और बहिन भाई, कोई नहीं आवै साथ रे ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भजन करो दिन रात रे ।। ३

◈ ◈ ◈

७४–२ (म०); (वं. पु. पृ. ४४)
७५–१ (उ०)
७६–२ (म०)

पद–७७ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(दर्शनाकाङ्क्षा)

करुणा सुनि श्याम मेरी, हूँ तो होइ रही तेरी चेरी। (टेर)
दरसन कारन भई बावरी, विरह विथा तन घेरी।
तेरे कारन जोगन हूँगी, देऊँ नगर बिच फेरी,
　　　　　　　　　　　　कुंज सब हेरी हेरी ॥ १
अंग बिभूत गले मृगछाला, यो तन भसम करूँ री।
अजहूँ न मिले राम अविनासी, बन बन बीच फिरूँ री,
　　　　　　　　　　　　रोऊँ नित टेरी टेरी ॥ २
जन मीराँ कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटन सुख दे री।
रूम रूम साता भई उर में, मिटि गई फेरा फेरी,
　　　　　　　　　　　　रहूँ चरणन नित नेरी ॥ ३



पद–७८ : राग–खम्माच : ताल–धीमा पीलू

(वंशी-ध्वनि)

कलेजे म्हारे बाँसुरी री धुन लागी। (टेर)
हूँ अपने गृह काज करत रही, श्रवण सुनत उठ भागी ॥ १
खान पान की सुधि न सखी री, कल न पड़ै निसि जागी ॥ २
रैन दिनाँ गिरधरनलाल के, मीराँ रहै रंग पागी ॥ ३



७७–१ (उ०); (क. व. ३)
७८–१ (उ०); (या.-सं. रा. सं. से)

पद—७६ : राग—बिहाग : ताल—दीपचंदी

(वंशी के प्रति)

कवन गुमान भरी, बंसी ! तू कवन गुमान भरी। (टेरी)
अपने तन पर छेद परेचे, बाला तू बिछरी ॥ १
ज़ात भात तोरी मैं जानूं, तू बन की लकरी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, राधा से क्यूं झगरी ॥ ३



पद—८० : राग—सोरठ : ताल—धीमा तिताला

(इष्ट-प्राप्ति)

कहज्यो म्हारा रमइया नै, आज्यो म्हारै देस। (टेर)
थारे कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण को भेस ॥ १
बिन साबू बिन पांणियाँ रे, ऊजल कर गयौ केस ॥ २
थारे कारण सब रंग त्यागूँ, जटा बधाऊँ [सिर] केस ॥ ३
सुणत अवाज हरष भयौ जिवड़ौ, कर आयो नटवर-भेस ॥ ४
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, मिटगो मन को कलेस[1] ॥ ५



७६–१ (उ०)
८०–(उ०)
१–पाठान्तर–'तज गयो नगर नरेस'।

पद–८१ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(उलहना)

कहाँ वसियो कान्हा रातरली,
अरे तेरे मुख विच आवै मोहे वासरली। (टेर)
कहा तुमारो नाम जु कहिये, कहा तुमारी जातरली ॥ १
भगत बिरद मेरो नाम जु कहिये, जादौ हमारी जातरली ॥ २
मोहे कहै अलमस्त दिवानी, कहा लगाओ चातरली ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आन मिलो परभातरली ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–८२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(लीला)

कहाँ कहाँ जाऊँ तोरे साथ कन्हैया, वंसी के रे बजैया कन्हैया। (टेर)
वृन्दावन की कुंजगलिन में, गह लीनों मेरो हाथ कन्हैया ॥ १
दधि मेरो खायो मटकिया फोरी, लीनी भुज भर साथ कन्हैया ॥ २
लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात कन्हैया ॥ ३
कवहूँ न दान लियो मनमोहन, सदा गोकल आत जात कन्हैया ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम के नाथ कन्हैया ॥ ५

◈ ◈ ◈

८१–२ (म०); (या.-प्रति सं. ३८६। पद ४८ का)

नोट–इससे मिलता पद है–"मोहन रातड़ली कहाँ वसिया (गिरधर रातड़ली)
थाँका भँवरपटां में आवै वासड़ली।
कै सतभामाजी रे महल पधारचा, कै कुवज्या संग साथड़ली ॥

८२–२ (म०); (या.-सं. रा. क. से)

पद–८३ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(व्रजवास)

कहीं देखे री घनश्यामा। (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, कुण्डल झलकै कानाँ।
साँवरी सुरत पर तिलक बिराजै, तिससों लगे मोरे प्राना॥ १
बरसाने सों चली गुजरिया, नन्दगाम को जाना।
आगे केशो धेनु चरावै, लगे प्रेम के बाना॥ २
सागर सूख कमल मुरझाना, हंसा कियो पयाना।
भोंरा रह गये प्रीत के धोके, फेर मिलन को जाना॥ ३
बृन्दाबन की कुन्जगलिन में, नूपुर रुनझुन लाना।
मीराँबाई को दरशन दीजो, ब्रज तज अनत न जाना॥ ४



८३–१ (उ.); (बृ. रा. र. पृ. १५२)

पद–८४ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम रहस्य)

कहो तो गुण गाऊं रे भजै राम राम सुवा ।
कहो तो गुण गाऊं रे । (टेर)
सार की सळीया को सूवा पींजरो बणाऊं रे ।
पींजरा में आव सूवा हाथ सूं गिलाऊं रे ।। १
घीव कर घोवर सूवा सूवा लापसी रँधाऊं रे ।
आंब ही को रस सूवा घोल घोल पाऊं रे ।। २
कंचन कोटि महल मन्दिर मालिया झुकाऊं रे ।
मालिया में आव सूवा मोतीड़ा बधाऊं रे ।। ३
बैठक करो तो सूवा चांदणी रिलाऊं रे ।
प्रेम ही प्रताप सूवा झांझरी बजाऊं रे ।। ४
जांइ जांबू केतकी सूवा बाग भी लगाऊं रे ।
बागही में आव सूवा फूलड़ा सुंघाऊं रे ।। ५
केसर भरियो बाटको सूवा अंग चरचाऊं रे ।
मीराँ दासी सूवा की रामराती चरणां चित्त लगाऊं रे ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–८५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

कहो ने जोशी (म्हांरा) राम मिलण कब होसी । (टेर)
जो जोशी मोहे प्रभू मिलै तो, हीरा जडाऊं तोरी पोथी ।। १
जो जोशी मोहे प्रभु ना मिले तो, झूंठी पड़ो तोरी पोथी ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, राम मिले सुख होसी ।। ३

◈ ◈ ◈

८४–२ (म); (राम स. गु. पृ.)
८५–१ (उ.)

पद–८६ : राग–सोरठ, देस वा मांढ : ताल–कहरवा

(आत्मकथा)

कांई थारो लागै छै गोपाल । (टेर)
गढ़ से तो मीराँबाई ऊतरया जी, हाथ मगद को थाल ।
औरां के तो अनगन लछमी, आप फिरो कंगाल ॥ १
ऊँचा राणाजी रा गोखड़ा जी, नीची मीराँबाई री साल ।
रमतां तो पायो मीराँ काँकरो, कोई सेवा सालिगराम ॥ २
जहर पियाला राणाजी भेजिया जी, द्यो मीराँ ने जाय ।
कर चरणामृत मीराँ पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ॥ ३
साँप टिपारा राणाजी भेज्या, कोई द्यो मीराँ ने जाय ।
कर खँगवालो मीराँबाई पहरियो, कोई हो गयो नोसर हार ॥ ४
काढ़ कटारो राणाजी बैठिया, ल्यो मीराँ ने मार ।
इत मारां उत दोष लगे, कोई छत्रीधरम घट जाय ॥ ५
सांड्या सांडिया पलाणज्यो, म्हे चालां सो सो कोस ।
राणाजी का देस में कोई, जल पीबा को दोस ॥ ६
सांड्यो फिर कर देखियो जी, दीखै मीराँबाई रो देस ।
मीराँ गिरधर के रंग राची, रंच न रह्यो कलेस[1] ॥ ७

◈ ◈ ◈

पद–८७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(संदेश)

कागद कोण लई जाय रे, मथुरा मां लखो अे
प्रीत थोड़ी थोड़ी थाय रे[1] । (टेर)
प्रीत तमोनें[2] मलवाने तलखे[3], ने जशोमती अन्न न खाय रे ॥ १
वृन्दावन नी कुंजगलियन में, रोतां रजनी जाय रे ॥ २
मीराँबाई के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित चाहे रे ॥ ३

◈ ◈ ◈

८६–२ (म); (का. ह. न. १)
१ पाठांतर–'मुख से बजावे मीराँ बाँसरी नाचि रह्या मथुरेस' ।
८७–१ होना । २ आप । ३ तड़फना । (काव्यदो० भा. ७ पृ. ७१९)

पद–८८ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(उलहना)

कानो भयो(रे)दूर को दुवारकां-बासी । (टेर)
निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जन्मभूमि मथुरासी ।
गुवाल बाल सब बिलखत छोड्या, गउयें छोड़ दई प्यासी ।। १
ये ठाकुर हैं तीन लोक के, कुबज्या कंस की दासी ।
स्याम तुमारे कारण राधा, सूक गई तिणकासी ।। २
सोलह सहस्र गोपिका त्यागी, रंग महल सेझासी ।
कुबज्या के संग बिलम रह्यो है, मात छोडी जसोदासी ।। ३
झूटी थाली को पांणी पीयो, राणी करी कुबज्यासी ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सुण सुण आवे हाँसी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–८९ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

कान्हां तोरी रे जोवत रह गई बाट । (टेर)
जोवत जोवत इक पग ठाढ़ी, कालिन्दी के घाट ।। १
कपटी प्रीति करी मनमोहन, या कपटी की बात ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, दे गयो ब्रज को चाट ।। ३

◈ ◈ ◈

८८–२ (म.); (पुजा नाथु. पु. से)
८९–१ (उ.); (पुजा. नाथु. पु. से)

पद–९० : राग–माँढ, भीमपलासी : ताल–तिताला

(इष्टमहिमा)

कारी कामरवारे से जोडी, प्रीति मैं। (टेर)
अब मोहबत कौन कामकी, गिरधर बिनाहु नगोड़ी ॥ १
लोग कहै कारी कामरीवारो, म्हारे तो लाख किरोड़ी ॥ २
लोक लाज कुल की मरजादा, तिणका ज्यूं सब तोड़ी ॥ ३
कोऊ जन निन्दो कोऊ जन बन्दो, कोऊ मन मानै सो कहो री ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मेरो चित लियो उन चोरी ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–९१ : राग–बिहाग : ताल–तिताला

(उलहना)

कारे कारे सब से बुरे ओधव प्यारे। (टेर)
कारे को विश्वास न कीजे, अति से भूल परे ॥ १
काली जात कुजात कहीजे, ताके संग उजरे ॥ २
शाम रूप किये भँवरो, फूल की बास भरे ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कारे संग बिगरे ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–९२ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(आत्मवेदना)

काहूकी मैं बरजी नाहिं रहूँ। (टेर)
जो कोइ मोकूं एक कहै, मैं एक की लाख कहूँ ॥ १
सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किनसे कहूँ ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहूँ ॥ ३

◈ ◈ ◈

९०–२ (म.); (दीना. मं. मी. प. ४)
९१–१ (उ.)
९२–२ (म.); (फु. पद)

पद–९३ : राग–विहाग : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

काहे को देह धरी, भजन बिन काहे को देह धरी। (टेर)
गर्भवास की त्रास दिखाई, वाकी पीठ लुरी ॥ १
कोल बचन करि बाहर आयो, अब तुम भूल परी ॥ २
नोबत नगरा बाजे बधाई, कुटुम सब देख डरी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जननी भार मरी ॥ ४



पद–९४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

किण संग खेलूं होली, पिया तज गये हैं अकेली। (टेर)
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली ॥
मोहे दूरी क्यूं मेली ॥ १
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूं पहेली।
बहु दिन बीते अजहुं नहिं आये, लग रही तालावेली ॥
कोण बिलमाये री हेली ॥ २
श्याम बिना जिवड़ो मुरझावै, जैसे जल बिन बेली।
मीराँ कूं प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली ॥
दरस बिन खड़ी दुहेली ॥ ३



९३–१ (उ.)
९४–१ (उ.); (मीरां की प्रेमवाणी पृ. १०१)

पद–९५ : राग–अडाना : ताल–धीमा तिताला

(चेतावनी)

कितहू गये नेह लगाइ। (टेर)
प्रीति लगाइ मेरो मन हर लीनो, रस भरि टेर सुनाइ ॥ १
हमसे बैर प्रीति कुबजा से, हमैं न कहूँ सुहाइ ॥ २
मेरे(तो)मन में ऐसी आवै, मरूँगी जहर बिष खाइ ॥ ३
हम कूँ छांड़ गये बिसवासी, बिरह की नाव चढ़ाइ ॥ ४
मीराँ के प्रभु हरि अविनाशी, रहे मधुपुरी छाइ ॥ ५



पद–९६ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(चेतावनी)

कित गयो पंछी बोलतो। (टेर)
कची रे मटी दा महल चुणाया, गोखां ही गोखां डोलतो ॥ १
गुरु गोबिन्द को कह्यो न मान्यों, ऐंडो ही ऐंडो डोलतो ॥ २
ऐंठी रे टेढ़ी पाग झुकातो, छाया निरखतो चालतो ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनाशी, हरि चरणां चित ल्यावतो ॥ ४



९५–१ (उ.); (क. ब. १५)
९६–२ (म.); (क. ब. ६)

पद–९७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरद)

किरपा भई सतगुर अपने की, बेर बेर हरि नांव लियो री। (टेर)
हिरणाकुस प्रल्हाद सतायो, जार अगन बिच डाल दियो री।
राज छाँड दियो नाँव न छाँड्यो, खंभ फाड़ प्रभु दरस दियो री ॥ १
माता को उपदेश भयो जब, राज छाँड धूजी बन में गयो री।
मारग में मिल गयो नारद मुनि, तब से धूजी अटल भयो री ॥ २
सागर ऊपर सिला तिराई, दुष्ट रावण कूँ मार लियो री।
सीता सहित अवधपुर आये, भगत बिभीषण राज दियो री ॥ ३
सब भगतन की सहाय करी प्रभु, मेरी बेर कहाँ सोय गयो री।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बंसी बजा के मन मोहि लियो री ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–९८ : राग–भीमपलासी : ताल–तिताला

(मिलनोत्कण्ठा)

किसने[1] देखा कन्हैया प्यारा वे मुरली वाला। (टेर)
जमुना के तीराँ तीराँ गउवाँ चरावै, कांधे कमरिया काला ॥ १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत आला[2] ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ॥ ३

◈ ◈ ◈

९७–२ (म.)
९८–१ पा.–'काने'। २ पा.–'हीरा'।

पद–९८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

कुबज्या ने जादू डारा री, जिन मोहे श्याम हमारा । (टेर)
झरमर झरमर मेहा बरसे, झुक आये बादल कारा ।। १
निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जाय पिया जल खारा ।। २
शीतल छाँय कदम की छोड़ी, धूप सहा अति भारा ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, वोही प्राण[1] पियारा ।। ४



पद–९९ : राग–तैलंग : ताल–दादरा

(बाल-लीला)

कुंजबन में गोपाल, राधे ! कुंजबन में । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, निरखत श्याम तमाल ।। १
ग्वाल बाल रचि चारु मंडल, बाजत बंसी रसाल ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणन मन चिरकाल ।। ३



पद–१०० : राग–गौरी : ताल–धमार

(लीला आनंद । होरो)

कुंजबिहारी राधा गोरी, नव निकुंज में खेलै होरी । (टेर)
भरि भरि अरगजा लई कमोरी, छिरकत झकझोरी झकझोरी ।।१
अबीर गुलाल उडावत रोरी, डफ दुधुभी बाजत थोरी थोरी ।। २
पहुप पराग लिये भरि झोरी, पिय पर डारति हँसि मुख मोरी ।। ३
आँखि आँजि सिर गूथत मारी, झूमक गावत अंचल जोरी ।। ४
मीराँ प्रभु रससिंधु झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किशोरी ।। ५



९८–२ (म.); (भजनमंजरी, पृ.१६०)
१ पा०—'बिना भाल सुर मारा' ।
९९– (का. । उ. १।३०९)
१००–१ (उ.); या०—प्रति सं० ६९८।४५ पृ० ७५से)

पद–१०१ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

कुण बाँचै पाती, बिना प्रभु कुण बाँचै पाती। (टेर)
कागद ले ऊधोजी आये, कहाँ रहे साथी।
आवत जावत पाँव घिसा रे,(बाला) अँखियाँ भइ राती॥ १
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती।
नैन नीरज में अंब बहै रे,(बाला) गंगा बहि जाती॥ २
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे,(बाला)अन्न नहिं खाती।
हरि बिन जिवड़ो यू जलै रे,(बाला) ज्यू दीपक संग बाती॥ ३
साँचा कुल चकोर चन्दा, झोलै बहि जाती।
व्रजनारी की बीनती रे,(बाला)राम मिले मिल जाती॥ ४
मनैं भरोसो राम को रे,(बाला) डूबत तार्‌यो हाथी।
दासी मीराँ लाल गिरधर, साँकडा रो वोही साथी॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–१०२ : राग–पीलू बरवा : ताल–दादरा

(विनय)

कृष्ण मेरे नजर के आगे ठाडे रहो रे (टेर)
मैं जो बुरी श्याम और भली है, भली कि बुरी मोरे दिल रहो रे॥ १
प्रीत को पैंडो बहुत कठिन है, चार कही दस और कहो रे॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, प्रीत करो तो मेरा बोल सहो रे॥ ३

◈ ◈ ◈

१०१– (सा०)
नोट–४ अंतरेके पूर्वार्धमें शब्द कम हैं।
१०२–(म.)

पद–१०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम विनय)

कृष्ण करो जजमान, प्रभु तुम। (टेर)
ज्यांकी कीरत वेद बखानत, साखी देत पुरान ॥ १
मोरमुकुट पीतांबर शोभित, कुण्डल झलकत कान ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, दे दरसन को दान ॥ ३



पद–१०४ : राग–जोनपुरी टोडी : ताल–धीमा

(प्रेम)

कैसी जादू डारी, (अब)तूने, कैसी जादू डारी। (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोभे, कुण्डल की छबि न्यारी ॥ १
वृन्दावन की कुञ्जगलिन में, लूटो ग्वालन सारी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ॥ ३



पद–१०५ : राग–मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

कैसी रितु आई मेरो हियो लरजै हे मा। (टेर)
निस अँधियारी कारी बिजुरी चमकै, सेज चढतां जिया डरपे हे मा ॥ १
नान्ही बूंदन मेहा बरसै, ऊपर सुरपति गरजै हे मा ॥ २
सूनी सेज स्याम बिन लागत, कूक उठी पिया करिके हे मा ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मोय विधाता क्यूं सरजी हे मा ॥ ४



१०३–२ (म)
१०४–१ (उ)
१०५–२ (म.); (फु.प.)

पद–१०६ : राग–सारंग : ताल–धमाल

(प्रेम लीला)

कैसें आवौं हो लाल तेरी व्रज नगरी, गोकुल नगरी। (टेर)
इत मथुरा उत गोकुल नगरी. बीच वहे यमुना गहरी।
पाँव धर्‌यां मेरी पायल भीजै, कूदि परौं वहि जाऊं सगरी ॥ १
मैं दधि बेचन जात बृन्दावन, मारग में मोहन झगरी।
बरज यशोदा अपने लालकौं, छीन लई मेरी गगरी ॥ २
रहु रहु ग्वालिनि झूँठ न बोलो, कान्ह अकेलो तुम सगरी।
मेरो कन्हैयो पाँच बरस को, तुम ग्वालिन अलमस्त तगरी ॥ ३
जाय पुकारौं कंस राजा के, न्याय नहीं गोकुल नगरी।
वृन्दावन की कुंजगलिन में, बांह पकर राधे झगरी ॥
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, साधु संग करि हम सुधरी ॥ ४



पद–१०७ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

कैसे जीऊँ री माई, हरि बिन कैसे जीऊँ री। (टेर)
उदक दादुर मीनवत है, ज़ल से उपजाई।
एक पल जल (जो) मीन बिसरे, तलफत मर जाई ॥ १
पिय बिना पीली भई, (बाला) ज्यों काठ घुन खाई।
ओषध मूल न संचरै, (बाला) वैद फिर जाई ॥ २
बन बन होय उदास फिरूँ (रे), बिथा तन छाई।
दास मीराँ लाल गिरधर, मिलि हैं सुखदाई ॥ ३



१०६–२ (म.); (भ. र. मा. २–७)
१०७–१ (उ.)

पद–१०८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

कोई कछु कहै, मन लागा । (टेर)
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने में सुहागा ।। १
जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुरु शब्द सुण जागा ।। २
मात पिता सुत कुटँब कबीला, टूट गया ज्यूँ तागा ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१०९ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(विरह-व्यथा)

कोई कहियौ रे प्रभु[1] आवन की, आवन की मन भावन की । (टेर)
आप न आवै लिख[2] नहिं भेजै, बाँण पड़ी ललचावन की ।। १
ए दोई नैण कह्यो नहिं मानैं, नदियाँ बहै जैसे सावन की ।। २
कहा[3] करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की ।। ३
मीराँ कहै प्रभु कब रै मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दावन की ।। ४

◈ ◈ ◈

१०८–१ (उ०)
१०९–१ (उ०)
१. पा०–'मोहन' ।
२. पा०–'पतियाँ न भेजै ।
३. पा०–'कहा कहूँ कित जाऊं मोरो सजनी' ।
४. पा०–'बिनि दामन की' ।

पद–११० : राग–भैरवी व सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह-व्यथा)

कोई कहियो रे विनती जाईकैं, म्हारा प्राण पीया नाथ नैं । (टेर)
जा दिनके बिछुरे मनमोहन, कल न परे दिन रात नैं ॥ १
देस बिदेस संदेस न पूगे, बिरहिन तलफै साथ नैं ॥ २
प्यारा महरम दिल की जाणैं, और न जाणैं कोई बात नैं ॥ ३
मीराँ दरसन कारण झूरै, ज्यूँ बालक झूरै मात नैं ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१११ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम-विनय)

कोई तो बोलो महीडां मेरो लूटे । (टेर)
छोड कनैया ईंडोणी हमारी, माट मही की काना मेरी फूटे ॥ १
छोड कनैया बहियाँ हमारी, लड़ बाजू की काना मेरी टूटे ॥ २
छोड दे कनैया चीर हमारो, कोर जरी की काना मेरी छूटे ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, लागी लगन काना नहिं छूटे ॥ ४

◈ ◈ ◈

११०–२ (म.): (रा.स.गु.पृ. १४६)
१११–२ (म.)

पद–११२

(प्रेम-रहस्य)

कोई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत । (टेर)
आसण माँड अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ।। १
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छाँड गयो अधबीच ।। २
आत न दोसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ।। ३
मीराँ कहै प्रभु गिरधरनागर, चरणन लागो चीत ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–११३

(प्रेम-तन्मयता)

कोई स्याम मनोहर ल्यो री, सिर धरै मटकिया डोलै । (टेर)
दधि को नाँव बिसर गई ग्वालनि, हरि ल्यो हरि ल्यो बोलै ।। १
कृष्ण रूप छाकी है ग्वालनि, चालै होलै होलै ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चेली भई बिन मोलै ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–११४ : राग-हमीर : ताल–तिताला

(प्रेम)

क्या करूँ मैं बन में गई, घर होती तो श्याम को मनाई लेती । (टेर)
गोरी गोरी बहियाँ हरि हरि चुडियाँ, झाला देके बुला लेती ।। १
अपने श्याम सँग चोपड़ रमती, पासा डालके झिला लेती ।। २
बडी बडी अखियाँ झीणा झीणा सुरमा, ज्योत सी ज्योत मिला लेती ।। ३
बाई मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल लपटा लेती ।। ४

◈ ◈ ◈

११२–१ (उ)
११३–१ (उ.): (रा.स.गु से)
११४–१ (उ.)

पद–११५ : राग–मांड व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-उलाहना)

क्यूंकर म्हे दिन काटाँ ।
थेतो म्हाँसूं अंतर राखौ, राखौ कपटी आँटाँ । (टेर)
कुवज्या दासी कंसराइ की, फिरती कपड़ा फाटाँ ।
वाकूँ तो पटराणी कीन्हीं, पहरै रेसम पाटाँ ॥ १
बाजूवंद मूँदड़ी अँगुली, नखसिख गहणौं साटाँ ।
पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जल जमुना कै घाटाँ ॥ २
धाँन न भावै नींद न आवै, चिंता लगी निराटाँ ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, देख देख हियो फाटाँ ॥ ३



११५–१ (उ.): (राम.स.गु.)

पद–११६ : राग–सोरठ : ताल–तिताला ठांह
(चरित्र और दृढ़ता)

खेलत पायो मीराँ कांकरो,
सेवा सालिगराम, भक्ति करां जी हरिनाम की। (टेर)
रमस्यां साधां री लार संतां री लार, भक्ति करां जी दीनानाथ की ॥ १
जोसीजी मनावै मीराँ थे मानो, पतड़ा री पण राख,
भक्ति छोड़ो जी हरिनाम की ॥ २
थे घर जावो जोसी आपणे, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ॥ ३
पिताजी मनावै मीराँ थे मानो, पगड़ी री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ॥ ४
बैठो राण्यां रे मांय महलां रे मांय, भक्ति छोड़ो जी सालिगराम की ॥ ५
थे घर जावो बाबल आपने, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ॥ ६
बीराजी मनावै मीराँ थे मानो, भैया री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ॥ ७
बैठो राण्यां रे मांय महलां रे मांय, भक्ति छोड़ो रघुनाथ की ॥ ८
माताजी मनावै मीराँ थे मानो, दूधड़ला री पत राख,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ॥ ९
थे घर जावो माता आपणे, पत राखैला दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ॥ १०
राणाजी मनावै मीरां थे मानो, बैठो राण्यां रे मांय, महलां रे मांय,
भक्ति छोड़ो रघुनाथ की ॥ ११
एक कुल लाजै मीराँ आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजा लाजैजी मीरां मेड़तो चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ॥ १२
एक कुल त्यारां राणां आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजो त्यारांजी राणां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति करांजी भगवान की ॥ १३
यो मन लाग्यो वैराग से, रमस्याँ साधां री लार संता री लार
भक्ति न छूटै हरिनाम की ॥ १४

◈ ◈ ◈

पद–११७ : राग–काफी : ताल–जैत

(ज्ञान, प्रेम और रहस्य)

गली तो चारों बंद हुई, मैं हरि से मिलूं कैसे जाय । (टैर)
ऊँची नीची राह रपटणी, पाँव नहीं ठहराय ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ।। १
ऊँचा नींचा महल पिया का, हमसे चढ़्या न जाय ।
पिया दूर पंथ म्हारा झीणाँ, सुरत झकोला खाय ।। २
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार ।
हे विधना कैसी रच दीन्हीं, दूर बस्यो घरबार ।। ३
जुगन जुगन से बिछड़ी मीराँ, घर लीन्हां मैं पाय ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सतगुर दिया बताय ।। ४



पद–११८ : राग–टोडी व झिझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम)

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । (टेर)
हँस हँस मुख मोर मोर, गागर छिटकाई ।
घूंघट पट खोल खोल, साँवरो कन्हाई ।। १
यशुमति तैं भली बात, लाल को सिखाई ।
अगर बगर झगर करत, रार तो मचाई ।। २
हौं तो बीर यमुना तीर, नीर भरन धाई ।
गिरिधर के चरणन पर, मीराँ बलि जाई ।। ३



११७–१ (उ.)
११८–१ (उ.): (वृ.रा.र.पृ. ३३)

पद–११९ : राग–मांड व देस : ताल–दीपचंदी

(ऊदां सम्वाद-प्रेमोत्सुकता)

गिरधर आवणां हे, ऊदांबाई सेजड़ली सँवार। (टेर)
आवण री बिरियाँ भई जी, अब महलां ढोल्यो ढार ॥ १
अतर सुगंध मिलायके जी, घी भर दिवला बार ॥ २
जाई जूही केतकी जी, चंपाकली सुधार ॥ ३
पलकां सूं करां पाँवडा जी, अँचलां सूं मग झार ॥ ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीराँ उनकी नार[1] ॥ ५



पद–१२० : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(करुण-विनय)

गिरधर दुनियाँ दे छै बोल। (टेर)
गिरधर मेरो मैं गिरधर की, कहो तो बजाऊं ढोल[1] ॥ १
आप तो जाय द्वारिका छाये, हमको पड गये झोल[2] ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, पिछले जनम के कोल ॥ ३



११९–१ (उ.): (स.मा.मी.ली. १०) (मी.ली.प. दूधू १३)

१. पाठान्तर = दोहा–पुष्पन सों झोली भरी, रुचि रुचि सेज सँवारि।
चारूं दिस फिरती फिरै, ऊदां चमेली लार ॥
(यह दोहा मा. हरिना. ह.लि.पु. के पद के अंत में है।)

१२०–१ (उ.): (पु.नाथू.पु. से) (मीराँबाई भजन नं. ११)

१. पाठान्तर–'दुनियाँ क्यों दे बोल'। 'ये करमन के भोग'।
२. पाठान्तर–'हमको लिख दिया जोग'।

पद–१२१ : तर्ज–घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारा साँचा पति छै, मैं गिरधर री दासी हे माय । (टेर)
राणोजी म्हासूं रूस रह्यो छै, कूड़ा बचन निकासै हे माय ।। १
राणो कहै सो एक न माँना म्हे, साध दुवारे नित आसी हे माय ।। २
मीराँ के प्रभु सेज चढ़े जब, ठाडी करै खवासी हे माय ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१२२ : राग–देस व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारे मन भाया, मोरी माय, राणूंजी म्हारे दाय न आवे। (टेर)
राणाजी म्हांसे रूस रह्या छै, कूड़ा बचन सुणाया ।। १
गुरु कृपा से संत पधारया, संतां स्याम मिलाया ।। २
मीराँ की प्रभु आस पुराई, गिरधर सेजाँ आया ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१२३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–तिताल।

(प्रेम का उलाहना-पूर्वजन्म संकेत)

गिरधर रूसणूंजी कोंण गुन्हां[1] । (टेर)
कछु इक ओगुण काढो म्हांमैं, म्हे भी कानां सुणां ।। १
मैं तो दासी थारी जनम जनम की, थे साहिब सुगणां ।। २
कांई वातसूं करयो रूसणूं, क्यों दुख पावो छो मनां ।। ३
किरपा करि मोहि दरसण दीज्यो, वीते दिवस घणां ।। ४
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, थारो ही नांव भणां ।। ५

◈ ◈ ◈

१२१–२ (म)
१२२–२ (म.): (दीना·मं·मी·पृ. ८)
१२३–१ (उ.): (राम·स·गु.)
१. पाठान्तर–'गुणां' ।

पद–१२४ : राग–परज : ताल–कहरवा

(दर्शनानंद)

गोकुल के बासी भले ही आये, गोकुल के बासी । (टेर)
गोकुल की नारी देखत, आनन्द सुखरासी ।
एक गावत एक नाचत, एक करत हांसी ॥ १
पीताम्बर के फेंटा बांधे, अरगजा सुबासी ।
गिरिधर से सु नवल ठाकुर, मीराँ सी दासी ॥ २



पद–१२५ : राग–आसा मांड : ताल–दादरा

गोपाल राधे कृष्न गोविंद गोविंद । (टेर)
बाजत झांझरी और मृदंग, और बाजे करताल ॥ १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजंती माल ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपाल ॥ ३



१२४–२ (म.)

पद–१२६ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(प्रेम)

गोपाल रंग राची, मैं श्याम रंग राची । (टेर)
कहा भयो जल विष के खाये, तीनहु तें मैं वाची ॥ १
तात मात अरु लोक कुटुंब सब, तिन कीनी उपहासी ॥ २
नंद नंदन गोपीवल्लभ प्रभु, तिनके आगे नाँची ॥ ३
और सकल बंधन छाडे मैं, भक्त काछ एक काछी ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जानैं झूँठी साँची ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–१२७ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(विनय.प्रेम)

गोरस लीजे नंदलाल, रस मांगो रस लीजे । (टेर)
मैं तो हूं व्रषभान नंदिनी, तुम हो नंदजी के लाल ॥ १
मोर मुकुट मुकताफळ कुंडळ, उर बैजंती माल ॥ २
मैं दधि बेचन जाती बृन्दाबन, रोकत है बिन काज ॥ ३
वाई मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ॥ ४

◈ ◈ ◈

१२६–१ (उ.); (या.–सं.रा.क. से)

नोट–हमारे संग्रह में इस पद के पाठान्तर के पद ये हैं—

१. राणाँजी मैं सांवरे रंग राची ।

२. सखीरी मैं गिरधर के रंग राची ।

१२७– (का.उ. २।३४७)

पद–१२८ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(प्रेमोत्सुकता)

गोविन्द कब रे[1] मिले पिय मेरा । (टेर)
चरण कँवल को हँसि कर देखूँ, राखूँ नैनन नेरा ।। १
निरखण रो मोहे चाव घणेरो, कब मुख देखूं तेरा ।। २
पिया मिलण कूँ हुई हूँ उदासी, मिलवू मिंत सवेरा ।। ३
व्याकुल तातें भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा ।। ५



पद–१२९ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा

(विष प्रयोग)

गोबिन्द का गुण गास्यां । (टेर)
राणोजी रूसैला तो गांम राखैला, हरि रुठ्यां कुमलास्यां ।। १
राम नाम की जहाज चलास्यां, भवसागर तिर जास्यां ।। २
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्यां ।। ३
बिषरा प्याला राणोजी भेज्या, इमरत करि गटकास्यां ।। ४
यो संसार विनास जानिकै; ताको संग छिटकास्यां ।। ५
लोक लाज कुल काणिहु तजिकै, निरभै निसाँण घुरास्यां ।। ६
मीराँ के प्रभु हरि अविनाशी, चरणकमल बलि जास्यां ।। ७



१२८–१ (उ.); (दीना.मं.मी.प. ३२) (मी.ली.प.दूधू १८) (स.मा.भी.ली. १३)
१. पाठान्तर–'कवहूँ' ।
२. पाठान्तर–'व्याकुल प्राण वल नहिं धीरज' ।
३. पाठान्तर–'व्याकुल भई मैं वन वन डोलूं ऊपर जम का घेरा ।
१२९–१ (उ.); (क.व. २०)
(देखो–राणाजी म्हे तो गिरधररा गुण गास्यां)

पद–१३० : राग–झिंझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम-दृढ़ता)

गोविन्द सूं प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी । (टेर)
अबतो बात फैल गई, जैसे बीज बटकी ।
बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी ।। १
अबै चूकै ठौर नाहि, जैसे कला नट की ।
साँवरे को सीस धरे, सुरत प्रेम भटकी ।। २
घर घर में घणी होत, बाणी घट घट की ।
हरिजी सों प्रीति राखि, लोक लाज पटकी ।। ३
वाणी घुलि-गांठ परी, रसना गुण रटकी ।
अब छुटायें छूटे नहीं, भोत बार झटकी ।। ४
मदमांते हसती सम, फिरत प्रेम लटकी ।
मीराँ के प्रभु गिरधर बिन, कौन जाने घट की ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–१३१ : राग–परज : ताल–इकताला

(तन्मयता)

गोहने[1] गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मन में ।
अवलोकत वारिज बदन, विवस भई तन में । (टेर)
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ ।
आछी गोप भेष मुकट, गोधन सँग चारूँ ।। १
हम भई गुल कामलता, वृन्दावन रैनां ।
पसु पंछी मरकट मुनी, श्रवन सुनत वैनां ।। २
गुरुजन कठिन कानि, कासों री कहिये ।
मीराँ प्रभु गिरधर मिली, ऐसें ही रहिये ।। ३

◈ ◈ ◈

१३०–१ (उ.); (क.ब. २५) (राम.स.गु.पृ. २२३)
१३१–२ (क.)
१. पाठान्तर–'जोहनें' ।

पद–१३२ : राग–मांड : ताल–तिताला

(विरह वेदना)

घड़ी एक नहिं आवडे, तुम दरशण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवन होय ॥ १
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ, मेरा दरद न जाणे कोय ॥ २
दिवस तो खाय गमाइयो रै, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरतां रै, नैण गमाया रोय ॥ ३
जो मैं ऐसा जानती रै, प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती रै, प्रीत करो मत कोय ॥ ४
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–१३३ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

घर आँगन न सुहावे, पिया बिन मोहि न भावै (टेर)
दीपक जोय कहा करूँ सजनी, हरि परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक सिसक जिय जावे
नयन निद्रा नहिं आवे ॥ १
कबकी ऊभी मैं मग जोऊँ, निस दिन विरह सतावे ।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे
हरी कब दरस दिखावे ॥ २
ऐसो है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ।
वा बिरियाँ कब होगी मुझको, हरि हँस कंठ लगावे
मीराँ मिलि होरी गावै ॥ ३

◈ ◈ ◈

१३२–१ (उ.)
१३३–१ (उ.)

पद–१३४ : राग-अडाणा : ताल–तिताला

(लीला)

चंचल चवैया री आली, यशोदा को लाल देखो (टेर)
हों दधि बेचन जात रही ब्रज, नाहक रार मचाई ।
मेरी चेरी मेरे चेरे की चेरी, ऐसे नाँच नँचाई ।। १
हमरे संग की दूर निकस गई, मोहन बइयाँ मरोरी ।
सास ननदिया रिसावैगी मोसों, मुख मल दीनी रोरी ।। २
मैं तो हूँ बरसाने की ग्वालिन, तुम हलधर के बीर ।
मीराँ के प्रभु फगुवा लीन्हों, मोहन श्यामशरीर ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१३५ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(विरह)

चरण[1] रज महिमा मैं जानी (टेर)
येही चरण से गंगा प्रगटी,
भागीरथ कुल तारी ।। १
येही चरण से विप्र सुदामा,
हरि कंचन धाम दीन्ही ।। २
येही चरण से अहल्या उधारी,
गौतम की पटरानी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
येही चरणकमल लिपटानी ।। ४

◈ ◈ ◈

१३४–२ (म.), (या०–सं०रा०क०से)
१३५–३ (क.)
१. पा.–"चरणन की हे जी" ।

पद–१३६ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस (टेर)
कहो तो कसूँबी सारी रँगावां, कहो तो भगवाँ भेस ।। १
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सुनियो विरद के नरेस ।। ३



पद–१३७

(प्रेम रहस्य)

चलो अगम के देश काल देखत डरे ।
(जहाँ) भरा प्रेम का हौज हंस केलाँ करे (टेर)
ओढन लज्जा चीर धीरज को घाघरो ।
छिमता काँकण हात सुमत को मूँदरो ।। १
काँचों है विस्वास चूड़ो चित ऊजलो ।
दिल दुलड़ी दरियाव साँच को दोवड़ो ।। २
दाँतां अमृत मेख दया को बोलणों ।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणों ।। ३
कान अखोटा ज्ञान जुगत को भूटणों ।
बेसर हरि को नाम काजल है धरम को ।। ४
जेंहरि सील सँतोष निरत को घूँघरो ।
बिंदली गज और हार तिलक गुरु ज्ञान को ।। ५
सज सोलह सिंगार पहिरि सोने राखड़ी ।
साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ी ।। ६
पतिबरता की सेज प्रभूजी पधारिया ।
गावे मीराँ बाई दासी कर राखिया ।। ७



१३६–२ (म.)
१३७–१ (उ.) (आ. भ. पृ. ६२)

पद–१३८ : राग–भैरवी सिन्ध : ताल–तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

चालो मन गंगा जमुना तीर (टेर)
गंगा जमना निरमल पाँणी, सीतल होत सरीर ।। १
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिया वलबीर ।। २
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल झलकत हीर ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल पै सीर ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१३९ : राग–बहार : ताल–तिताला, कहरवा

(निश्चय)

चितनंदन[1] आगे नाचूंगी (टेर)
नाच नाच पिय तुमहिं रिझाऊं, प्रेमीजन को जाचूँगी ।। १
प्रेम प्रीति का बाँध घूँघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगां जा पोढूंगीं, मीराँ हरि रँग राचूँगी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१४० : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरह वेदना)

चितनंदन विलमायि, बदरा ने घेरि माई (टेर)
इत घन गरजै उत घन गरजै, चमकत बिज्जु सवाई ।। १
उमड घुमड चहुँ दिशा से आया, पवन चलै पुरवाई ।। २
विरहनि तेरी प्राण झुरत है, दाधी बेलि सिंचाई ।। ३
मीराँ[1] को प्रभु दर्शन दीजे, प्राण रखो सरणाई ।। ४

◈ ◈ ◈

१३८–२ (म.)
१३९–१ (उ.)
१. पाठान्तर–'रघुनंदन । 'नँदनंदन' ।
१४०–२ (म.), (वं.पु.पृ. २१)
१. पाठान्तर–'प्राण रहत मोकूं' । ऐसा पाठ बंगाली पुस्तक में है ।

पद–१४१

(भगवतलीला प्रेम)

चीर दीज्यो बिहारी, मुरारी काना (टेर)
ले कर चीर कदम चढ़ बैठो, हम जल माँहि उघारी ।। १
तेरो चीर हम जब ही देंगे, हो जाओ जल से न्यारी ।। २
जब हम जल से न्यारी होयँगी, जावैगी लाज तुम्हारी ।। ३
या तुम प्रभुजी कैसी बिचारी, तुम हो पुरुष हम नारी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–१४२ : राग–सोरठ देश : ताल–कहरवा

(भगवतलीला प्रेम)

छाँडो[1] लँगर मोरी बहियाँ गहो ना (टेर)
मैं तो नारि पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ।। १
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन[2] जोर मेरे प्राण हरो ना ।। २
बृन्दाबन की कुञ्जगलिन में, रीत छोड़ अनरीत करो ना ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित[3] टारे टरो ना ।। ४

◈ ◈ ◈

१४१–२ (म.)
नोट–ऐसा ही पद चन्द्रसखी का है ।

१४२–२ (म.), (बृ.रा.र. पृ. ३१)
१. पाठान्तर–'छोडो डगर' । २. पाठान्तर–'नयन मिलाय' ।
३. पाठान्तर 'टारयो टरो ना' ।

पद–१४३ : राग–भैरवी सिंध : ताल–तिताला

(विनय)

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे (टेर)
चाल कुचाल चलो जिन चंचल, ऐसी अनीति तैंने करनी विचारी रे ।। १
सखी संग की देखत ठाडी, चरचा करेंगे सब पुर नरनारी रे ।। २
मैं सुकुमार खड़ी काँपत हों, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरे चरणकमल बलिहारी रे ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१४४ : राग–कामोद वा छाया : ताल–कहरवा

(प्रेम विनय)

छोड मत जाज्यो जी महाराज (टेर)
मैं अबला बल नाँय गुसाँई, तुम मेरे सिरताज ।। १
मैं गुणहीन गुण नाँय गुसाँई, तुम समरथ महाराज ।। २
थाँरी होयके किणरे जाऊँ, तुम हिवड़ा रो साज ।। ३
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखो अबके लाज ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१४५ : राग–बहार : ताल–तिताला

(लीला-वर्णन)

छोड़ो चुनरिया, छोड़ो चीर, मनमोहन, मन मोह लिया रे (टेर)
नंदजी के लाल, संग चलै गोपाल, धेनु चरत चपाल,
बीन बाजै रसाल, चीर छोड़ो ।। १
कान्हा माँगत है दाँन, गोपी भई........., सुनों उनका बयान,
घबरा गया उनका प्रान, चीर छोड़ो ।। २
मीराँ के गिरधारी मुरारी, राखो लाज प्रभुजी हमारी,
मैं हूँ दासी सदा तुमारी, तुम हो भले विहारी, चीर छोड़ो ।। ३

◈ ◈ ◈

१४३–२ (म.), (गोपीराम व्रजवासी से प्राप्त)
१४५–(का । उ. २ । ३४०)
नोट—इस पद के अंतरों में लेखक[न] दोष थे सो सुधारे हैं । (सं०)

पद–१४६

(भगवतदर्शन वर्णन)

जब तैं मोहि नंदनँदन दृष्टि परयो माई ।
तबतैं परलोक लोक, कछु नाँ सुहाई[1] (टेर)
मोरन की चंद्रकला[2], सीस मुकुट सोहै ।
केसर को तिलक भाल, तीन लोक मोहै ।। १
कुंडल की अलक झलक, कपोलन पर छाई ।
मानो मीन सरवर तजि, मकर मिलन आई ।। २
भृकुटि कुटिल चपल नयन[3], चितवन से टौना ।
खंजन अरु मधुप मीन, मोहै मृग छौना ।। ३
अधर बिम्ब अरुणनयन[4], मधुर मन्द हाँसी ।
दसन दमक दाडिम द्युति[5], दमकै चपला सी ।। ४
कंबुकंठ भुज विसाल, ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर को भेष मानु, सकल गुण विसेखा ।। ५
छुद्रघंट[6] किंकिनी अनूप धुन सुहाई ।
गिरधर के अंग अंग, मीराँ बलि जाई ।। ६

◈ ◈ ◈

१४६–१ (उ.), (ट.) (बृ.रा.र. पृ. ११६)। (दीना.मं.मी.म. १)।
(जमा.राम. ३)। (स.मा.मी.ली. ६) । (मी.प. २०) ।

नोट–इसीसे मिलता-जुलता सूरदासजी का पद भी है ।

१. पाठान्तर–'कहा कहूँ सुंदरता बरणी नहिं जाई' ।

२. पाठान्तर–'चंद्रिकासु' । ३. पाठान्तर–'अति बिसाल' ।

४. पाठान्तर–'नासिकासु अति अनूप' ।

५. पाठान्तर–'दसन बरण दामिनिद्युति' । ६. पाठान्तर–'छुद्रघंटिका अनूप नूपुर धुनि सोहै । गिरिधर के चरणकमल मीराँ मन मोहै' ।

पद–१४७ : राग–कामोद वा बडहंस : ताल–दीपचन्दी

(उपदेश)

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार[1] (टेर)
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार ॥ १
कांई रे खाइयो कांई रे खरचियो, कांई रे कियो उपकार ॥ २
दियो रे लियो तेरे संग चलेगो, और नहीं चलै (थारी) लार ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भज उतरो भव पार ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१४८ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(लीला-वर्णन)

जमुना में मैं कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ, बीच खड़ा देखो लाल कन्हैया (टेर)
वृंदाबन से मथुरा नगरी, पानी भरन कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ ॥ १
हाथ में मेरे चूड़ा भरा है, कंगन लहेरा देत मोरे सैयाँ ॥ २
दधि मेरा खाया मटकी फोडी, अब कैसे बुरी बात बोलूं मोरे सैयाँ ॥ ३
सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, पतली कमर लचकै मोरे सैयाँ ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१४९ : राग–पटदीप : ताल–तिताला

(लीला-वर्णन)

जल भरन कैसे जाऊँ री जसोदा, जल भरन कैसे जाऊँ (टेर)
बाटेर घाटे पानी माँगे, मारग में कैसे धाऊँ ॥ १
परली कोर गंगा, वोली कोर जमना, बीच सरस्वती में न्हाऊँ ॥ २
वृंदावन में रास रच्यो है, नृत्य करत मन भाऊँ ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हेत हरीगुण गाऊँ ॥ ४

◈ ◈ ◈

१४७–२ (म.), (स्फुटपद) (रा.स. गुटका पृ. १३७)
१. पाठान्तर–'राम किन कहै रे गंवार'।
१४८– (का., उ. २-३३४)
१४९– (का., उ. २-३३३)

पद–१५० : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(गोपी-संशय)

जल कैसे भरूं जमुना तट री[1] । (टेर)
खडी भरूं तो कृष्ण दिखत है, बैठ भरूं तो भीजे चूनड़ी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, छुम छुम बाजत मुरली ।। २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल की मैं चेरी ।। ३



पद–१५१ : राग–कालँगडा : ताल–कहरवा
(उपालंभ)

जसोदा मैया नित सतावे कनैया ।
वाकी हरकत क्या कहूं मैया ।। (टेर)
बैल लावे भीतर बांधे, छोर देवत सब गैयां ।। १
सोते बालक आन जगावे, असो ढीठ तेरो कनैया ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि लागूं तोरे पैयाँ ।। ३



पद–१५२ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा
(उलहना)

जसोदा मैया तेरो लडको नीको । (टेर)
बछवा छुडाय मोरी गउवाँ चुखाय दीनी ओर उतारयो महीको ।। १
दूध दही की कमारी फोरी (मथनिया फोरी) माँट फोरवो गह छींको ।।२
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि बिन सब जग फीको ।। ३



१५०–(का. ५ । १६८)
१. 'किनारा'
१५१ (का. ५ । १६६)
१५२ ३ (क.), (या०—सं. रा. क. से)

पद–१५३ : राग–सोरठ वा धनाश्री : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढता)

जहर दियो सो जाँणी, राणाजी म्हाँने, (जहर दियो सो जाँणी)। (टेर)
हरष शोक म्हारे मन नांहीं, नहीं लाभ नहिं हानी ॥ १
कंचन लेर अगन में राख्यो, निकस्यो बाराबानी ॥ २
अबतो प्रभु तुमही पत राखो, छाणों दूधरु पाँणी ॥ ३
राणाजी यो बचन उचार्‌यो, सुणज्यो म्हारी बाँणी ॥ ४
साधाँ रो सँग परो निवारो, थाँनें कराँ पटराँणी ॥ ५
कोट भूप वाराँ संतन पर, जिनके हाथ बिकाँणी ॥ ६
हथलेवो मैं थाँसूँ जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ॥ ७
पीहर म्हारो देश मेड़तो, छाँडी कुलकी काँणी ॥ ८
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाँणी ॥ ९

◈ ◈ ◈

पद–१५४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढता)

जहर दियौ म्हे जानी राणाजी थे तो । (टेर)
अपने कुल को परदो कर लौ मैं अबला बौरानी ॥ १
मेरो (तेरो) न्याव प्रभु के आगे, छाणैं दूध'र पाणी ॥ २
जैसे कंचन कसत कसौटी, होत है बाराबानी ॥ ३
कोटि नृपति वारूं संतन पर, जिनके हाथ बिकानी ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटानी ॥ ५

◈ ◈ ◈

१५३–२ (म.), (दीना. मं. मी. प. २३)
नोट–४-५ अंतरे विचारणीय हैं, पटराणी शब्द के कारण। और सब उत्तम है।
१५४–१ (उ.), (मा. ह. ह. पु. २)

पद–१५५ : राग–सोरठ वा वागेश्वरी, कानडा : ताल–तिताला

(राणा संवाद)

जहर दियो म्हे जाणी, राणाजी म्हाँनें । (टेर)
हरष सोग मेरे मन नाहीं, नहीं लाभ नहीं हानी ॥ १
कंचन लेर अग्निमें राख्यो, निकस्यो बाराबाँनी ॥ २
अबतो प्रभु तुमही पति राखो, छाणों दूध'र पाँणी ॥ ३
राणों वचन उचारिया जी, सुणजो म्हारी बाँणी ॥ ४
साधाँरो सँग परो निवारो, थाँने कराँ पटराँणी ॥ ५
कोटभूप वारों साधाँ पर, संतां हाथ बिकाँनी ॥ ६
हथलेवो म्हे थाँसूं जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ॥ ७
पीहर म्हारो मेड़तो जी, छांडी कुलकी काँणी ॥ ८
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल लिपटानी ॥ ९

◈ ◈ ◈

पद–१५६ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(उलहना-प्रेमोपालंभ)

जाओ हरि निरमोह ड़ारे, जाणी थाँरी प्रीत ।(टेर)
लगन लगी जब और प्रीत छी, अब[1] क्यों भये नचीत ॥ १
अमृत पाय विष क्यूँ दीजे, कौण गाँव की रीत ॥ २
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, आप गरज के मीत ॥ ३

◈ ◈ ◈

१५५-२ (म.), (मा. हरिना. जीकी पु. ह.) (मी. ली. प. दूधू ९)
देखो–'राणाँजी जहर दियो म्हे जाणी' ।

१५६-२ (म.)
१. पा.–'अब कुछ अँवलीं रीत' ।

पद–१५७

जाके मथुरा कहानाने गागरियां फोरी ।
गागरियां फोरी दुलरि मोरी तोरी ।। (टेर)
ऐसी रीत तुझे कौन सिखावै, किसन करत बाराजोरी ।। १
सास हटेली, ननद चुगेली, दिवर देवत मुझे गारी ।। २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल चित्त हारी ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१५८ : राग–ललित : ताल–दादरा
(प्रार्थना)

जागिए गिरधारीलाल, भक्तन हितकारी । (टेर)
दासी हाजर खवास, कंचन ले झारी ।। १
सउच करो दंतधावन, स्नान की तयारी ।। २
वस्त्र और पुष्पमाल, तुलसी अति प्यारी ।। ३
रत्नजटित आभूषण, मुकुट लटक वारी ।। ४
धूप दीप नैवेद्य, आरती सँवारी ।। ५
मीराँ प्रभु विधि विधान, चरणन चित धारी ।। ६

◈ ◈ ◈

१५७–(का. ५ । २०७)
१५८–२ (म.), (स. मा. मी. ली. ३)

पद–१५९ : राग–झाड : ताल–रूपक

(प्रेम रहस्य)

जागो म्हारा जगपतिराइ, हँसि बोलो क्यूँ नहीं ।
हरि थे छो जी हिरदा मांहि, पट खोलो क्यूँ नहीं । (टेर)
तन मन सुरति सँजोइ, सीस चरणाँ धरूँ ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम, जहां सेवा करूँ ।। १
सदकै करूँजी सरीर, जुगै जुग वारणौं ।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिब तेरे कारणौं ।। २
थोड़ी थोड़ी लिखूं सिलाम, वहोत करि जाणज्यौ ।
वंदी हूं खानाज़ाद, महरि करि मानज्यौ ।। ३
हां हो म्हारा नाथ सुनाथ, विलम नहिं कीजियै ।
मीराँ चरणां की दासी, दरस अब दीजियै ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१६० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा तिताला

(स्तुति)

जागो बंसीवारे प्रभुजी, जागो मोरे प्यारे । (टेर)
रज़नी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे ।। १
गोपी दधी मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे ।। २
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाड़े द्वारे ।। ३
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय शब्द उचारे ।। ४
माखन रोटी हात में लीन्हीं, गौअन के रखवारे ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सरण आये को तारे ।। ६

◈ ◈ ◈

१५९–२ (म.)
१६०–२ (म.)

पद–१६१ : राग–भैरवी : ताल– धीमा तिताला

(उलहना)

जावा दे री जाबा दे, जोगी किसका मीत। (टेर)
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ॥ १
बोलत बचन मधुर से मीठे, जोरत नाहीं प्रीत ॥ २
हूँ जाणूँ या पार निभैगी, छोड़ चला अधबीच ॥ ३
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, प्रेमपियारा मीत ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१६२ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(विनय और उपालंभ)

जाबा दे गुमानी कृष्ण म्हारे घरे काम छै। (टेर)
थे हो लंगर नन्द महर के ब्रज वरसाने म्हारो गाम छै ॥ १
जाणो नाही तो पूछ लीज्यो श्री राधा म्हारो नाम छै ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर नाम थांको बदनाम छै ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१६३ : राग–कालँगड़ा : ताल–तिताला

(प्रेम उलहना)

जावो (ला) कठेरे, रामा रैवो अठे, साँवलिया (रामा)। (टेर)
गोकुल वसवो फीकोई लागै, मथुरा में काँई (थारे) लाड़ू बटै[1] ॥ १
नित काँई ज़ावो नित काँई आवो, नितका जायाँ से मान घटै ॥ २
गोकुल में काँई धेनु चरावो, मथुरा में काँई (थारे) राज लटै ॥ ३
राधाई रुकमण और सतभामा, कुब्जा काँई (थारे) संग पटै[2] ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरां सूं म्हांको संकट कटै[3] ॥ ५

◈ ◈ ◈

१६१–२ (म.)
१६३–२ (म.)
१. महावरा है। अर्थ लाभ होना।
२. पाठान्तर–'कुबज्या दासी थारै आई पटै'।
३. पाठान्तर–'थारे दरस म्हारो पाप कटै'।

पद–१६४ : रागनी–पीलू : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

जो तुम तोड़ो पिया मैं नहिं तोड़ूं,
तेरी प्रीत तोड़ि प्रभु कौन सँग जोड़ूं । (टेर)
तुम भये तरुवर मैं भई पँखियाँ,
तुम भये सरवर मैं तेरी मछियाँ ॥ १
तुम भये गिरवर मैं भई मोरा,
तुम भये चंदा भई मैं चकोरा ॥ २
तुम भये मोती, (तो) मैं भई धागा,
तुम भये सोना, भई मैं सुहागा ॥ ३
बाई मीराँ के प्रभु व्रज के वासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ४



पद–१६५ : राग–वागीश्वरी : ताल–तिताला

(विरह विनय)

जोगिया छाइ रह्या परदेस । (टेर)
जब का बिछड़्या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ॥ १
या तन ऊपर भसम रमाऊँ, खार करूँ सिर केस ॥ २
भगवाँ भेष धरूं तुम कारण, ढूँढूँ चारूं देस ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जीवनि जनम अनेस ॥ ४



१६४–२ (म.), (बं पु. पृ. ३९)
१६५–२ (म.), (का. दो. ४४)

पद–१६६ : राग–देश सोरठ : ताल–कहरवा धीमा

(विरह-कातरता)

जोगियाजी निसदिन जोऊं बाट ।
पांव न चाले पंथ दुहेलो, आज औघट घाट । (टेर)
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ ।
मैं भोली भोलापण कीन्हो, राख्यौ नहीं बिलमाइ ।। १
जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीत्या, अजहूं आयो नांहि ।
विरह बुझावण अन्तर आवो, तपत लगी तन मांहिं ।। २
कै तों जोगी जग में नाँहीं, कै'र बिसारी मोइ ।
काँई करूँ कित जाऊँरी सजनी, नैण गुमाया रोइ ।। ३
आरति तेरी अंतरि मेरे, आवो अपणी जाण ।
मीराँ ब्याकुल विरहिणीरे, तुम बिन तलफत प्राण ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–१६७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उत्कंठा)

जोगियाजी आवो ने या देस ।
नैणज देखूँ नाथ मेरो, ध्याइ करूँ आदेस । (टेर)
आया साँवण मास सजनी, भरे जल थल ताल ।
रावल[1] कुण विलमाइ राख्यो, बिरहनि है बेहाल ।। १
बिछड़ियाँ कोई भौ भयो (रे जोगी) ऐ दिन अहला जाइ ।
एक बेरी देहु फेरी, नगर हमारे आइ ।। २
वा मूरत मेरे मन वसे (रे जोगी) छिन भी रह्यौ न जाइ ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनाशी, दरसन द्यौ हरि आइ ।। ३

◈ ◈ ◈

१६६–२ (म.), (मंजुपदावली ४५)
१६७–२ (म.), (मंजुपदावली ४६)
१. पाठान्तर–'साँई' ।

पद–१६८ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

जोगिया तू कब रे मिलैगो आई । (टेर)
तेरे हि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख, रैण नहिं निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मिल कर तपत बुझाई[1] ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१६९ : राग– सोरठ : ताल–रूपक कहरवा

(विरह)

जोगिया दरस दीज्यौ राज ।
कर जोड़्यां करुणा करूं म्हारी वांह गह्यां की लाज । (टेर)
लोकलाज बिसारि डारी, छांड्यौ जग उपदेस ।
बिरह अगनि में प्राण दाझै, सुणि लीज्यौ आदेस ।। १
पांच मुद्रा भाव कंथा, नखसिख साजे साज ।
जोगणि होइ जग ढूँढिस्यूँ, म्हारी घरि घरि फेरी आज ।। २
दरददिवांनी तन जानि अपनी, मिलिया राम दयाल ।
मीराँ कै मन आनंद उपज्यौ, रोम रोम खुसियाल ।। ३

◈ ◈ ◈

१६८–१ (उ); (शब्दावली) ।
१ पा०–दीर्घ ई के स्थान में ह्रस्व इ का भी पाठ है ।
१६९–२ (म); (राम स० गु. पृ. १७३) ।

पद–१७० : राग–मांड : ताल–दादरा

(विरह)

जोगिया ने कहियो रे आदेस ।
आऊँगी मैं. नाँहि रहूँगी, कर जोगन को भेस[1] । (टेर)
चीर को फाड़ूँ कंथा पहिरूँ, लेऊँगी उपदेस ।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उंगलियां की रेख ।। १
मुद्रा माला भेष लूं रे, खप्पड़ लेऊँ हाथ ।
जोगिन होय जग ढूँढसूँ रे, रावलिया के साथ[2] ।। २
प्राण हमारा वहाँ बसत है, यहाँ तो ख़ाली खोड़ ।
मात पिता परिवार सूं रे, रही जु तिनका तोड़ ।। ३
पांच पचीसों वस किये, मेरा पला न पकड़े कोय ।
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, कोई आन मिलावे मोय ।। ४

◈ ◈ ◈

१७०–२ (म); (शब्दावली) । (मी. ली. प. दूघू. १७) ।

१ पा०–'कर जटाधारी भेस' । २ पा०–यहां पर एक अंतरा यह है—

'दंड कमंडल गूदड़ी रे वाला, कियो नवेलो नेह ।
प्रीतम ओजूं न आइया, म्हारे हिवड़े बड़ो संदेह ।।'

२ पा०–यहां यह अंतरा और भी है—

'गुरु को सबद कान में पहरूं, अंग विभूत रमाऊँ ।
जा कारण मैं जग तजो रे, वाला वाही पास मैं जाऊँ ।।

पद–१७१ : राग–पहाड़ी : ताल–दादरा

(विरह)

जोगिया नैं कहज्यो जी आदेस ।
जोगियो चतुरसुजांण सजनी ध्यावै संकर सेस । (टेर)
माला मुद्रा मेखला रे बाला, खपरा लागी हाथ ।
जोगण होइ जुग ढूंढसूं, म्हारा रावलिया री साथ ।। १
करि किरपा प्रतिपाल मो परि, राखै नैं अपनैं देस
आऊंगी मैं नां रहूंगी, म्हारा पीव बिना परदेस ।। २
सांवण आवण कह गयो रे बाला, करि गयो कोल अनेक ।
गिणतां गिणतां घसि गई सजनी, आँगलियाँ री रेख ।। ३
प्राण हमारा वहां बसै जी बाला, यहां है खाली खोड़ि ।
मात पिता परिवार सूं जी, हूँ रही तिणका ज्यूं तोड़ि ।। ४
पीव कारण पीली पड़ी रे, जोबन गया बाली बेस ।
दासि मीराँ राम भजि कैं, तन मन कीन्हौं पेस ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–१७२ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(वेदना)

जोगियारी प्रीतड़ी है, दुखड़ा रो मूल । (टेर)
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ।। १
तोड़त देर करत नहिं सजनी, जैसे चमेली के फूल ।। २
मीराँ के प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगे हिवड़े में शूल ।। ३

◈ ◈ ◈

१७१–राम स० गु. पृ. १९०।
१७२–१ (उ)।

पद–१७३ : राग–खमाच : ताल तिताला

(प्रेम विरह)

जोगियारी सूरत मन में वसी । (टेर)
नितप्रति ध्यान धरत हूँ दिल में निसदिन होत खुसी ।। १
कहा करूँ कित जाउँ मोरी सजनी, मानों सरप डसी ।। २
मीराँ कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली वसी ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–१७४ : राग–विहाग : ताल–तिताला

(विरह)

जोगिया सों प्रीत कियाँ दुख होय । (टेर)
प्रीत कियाँ सुख नहिं मोरी सजनी, जोगी मींत न कोई ।
रात दिवस कल नाहि परत है, तुम मिलियां विन मोई ।। १
ऐसी सूरत या जग माहीं, फेरि न देखी सोई ।
मीराँ के प्रभु कव रे मिलोगे, मिलियाँ आनँद होई ।। २

◈ ◈ ◈

पद–१७५ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(अनुराग)

जोगियो आँणि मिल्यो अनुरागी । (टेर)
ससा* सोक अंग नहिं त्रिसना, दुबध्या सब ही त्यागी ।। १
मोरमुकुट पीतांवर सोहै, स्यामबरण वडभागी ।। २
जनम जनम को साहिव म्हारो, वाही सों लो लागी ।। ३
अपणा पिव सों हिल मिल खेलां, हरि दरसण अनुरागी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, अब भई मैं सुभागी ।। ५

◈ ◈ ◈

१७३–१ (उ) ।
१७४–२ (म); (राम स० गुटका) ।
१७५–१ (उ); (मी. ली. पा. दूधू २३) ।
* पा०–'संसय' । १ पा०–'मित्र' । २ पा०–'अधरसुधारस पागी' ।
३ पा०–'मीराँ तो गिरधर मन मानी ।' ४ पा०–'अव तो भई है सुहागी' ।

पद–१७६ : राग-भैरव : ताल–तिताला ।

(विरह, विनय)

जोगी आ जा आ जा, जोगी पाँइ परूँ मैं हौं चेरी तेरी । (टेर)
प्रेम-भक्ति को पैंडो न्यारो, हमकूँ गैल बता जा ॥ १
अगर चंदन की चिता बनाऊँ, अपने हाथ जला जा ॥ २
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अङ्ग लगा जा ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, ज्योति में ज्योति मिला जा ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१७७ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

जोगी म्हाँने दरस दियाँ सुख होइ ।
नातरि दुखी जग मांहि जीवड़ो, निसिदिन झूरै तोइ । (टेर)
दरस दिवानी भई बावरी, डोली सब ही देस ।
मीराँ दासी भई है पंडुरी, पलट्या काला केस ॥ १

◈ ◈ ◈

१७६–१ (उ); (पुजा. नाथू. पु. से), (शब्दावली पृ. १९) ।

१. पा०–शब्दावली में आगे लिखा पाठ एक अन्तरे में विशेष है—
'उलटो ही तू आ जा' ।

१७७–२ (म); (राम स. गू.) ।

पद–१७८ : राग खमाच तिलँग : ताल—धीमा तिताला

(संयोग)

ज़ोसीड़ा ने लाख बधाई रे, अब[1] घर आये स्याम । (टेर)
आजि[2] आनंद उमँगि भयो है, जीव लहै सुख धाम ॥ १
पांच सखी मिलि पीव परसि कैं आनंद ठामूं ठाम[3] ॥ २
बिसरि गई दुख निरखि पिया कूं, सुफल मनोरथ काम ॥ ३
मीराँ के सुखसागर स्वामी[4], भवन गवन कियो राम ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१७९

(विरह)

ज्यां संग मेरा न्याहा लगाया, वांको मैं धूँडने जाऊंगी । (टेर)
जोगन बन के वन वन धूँडूँ, आंग बभूत रमाऊंगी ॥ १
गोकुल धूँड़ूँ मथुरा धूँड़ूँ धूँड फिरूं कुछ बसियां रे ॥ २
मीराँ दासी सरण जो आई, श्याम मिले तहाँ जाऊँ रे ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१८० : राग : प्रभाती ताल–कहरवा

(प्रेम-रहस्य)

ज्याँरा चित चरणां से लागा, वे ही सवेरे जागा । (टेर)
पहले भूप भरतरी जागा, शहर उजीणी त्यागा ।
सुँण सुँण बचन साहब सतगुरु का, गोपीचंद उठ भागा ॥ १
साहबसैन बलख रा राजा, बांण बिरह रा लागा ।
आठूँ पहर कबीरा जागा, मरण जीवण भय भागा ॥ २
राणाँ रूस्याँ भय मोरे नाहीं, चित साहब से लागा ।
मीराँबाई तो शरणे आया, लोक लाज भय त्यागा ॥ ३

◈ ◈ ◈

१७८–२ (म); (राम स. गु. पृ. १४१) ।
१. पा०–'आज' । २. पा०–'अति' । ३. पा०–'पंच सखी मिलि परसि पियाकू आनँद आठूं जाम' । ४. पा०–'मीरां के प्रभु सुख के सागर' ।
१७९–सा०—(का./उ. २/३७७) ।
१८०–२ (म); (नवनिधि कुँवरबाईजी से प्राप्त) ।

पद–१८१

(भक्ति)

ज्यूँ अमली से अमल अधारा ।
यूँ रमैया प्राण हमारा । (टेर)
कोई निन्दै बन्दै दुख पावै ।
मौकूँ तो रमैयो भावै ।। १



पद–१८२ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(प्रेमोत्कंठा)

ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो सजन सुध, ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो । (टेर)
हूँ तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो[1] ।। १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कबहुँक याद करीज्यो । २
आवत जावत जीमत सोवत, सुपने दरस मोये दीज्यो ।। ३
मैं पतिबरता नार प्रभूजी, काहू तैं न पतीजो ।। ४
साँचो प्रेम प्रीत को नाँतो, ताही तैं तुम रीझो ।। ५
रात दिवस मोये ध्यान तिहारो, आय दरस मोये दीज्यो ।। ६
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चित चरणाँ में लीज्यो ।। ७



१८१–३ (क); (बं. पु. पृ. ४१) ।
१८२–१ (उ); (दीना. मं. मी. प. ३६) ।
(देखो शब्दावली का पद 'म्हारी सुध ज्यूं जानें')

१. पा०–एक अंतरा अधिक ऐसा मिलता है—'तुम बिन मेरे और न कोऊ, कृपा रावरी कीजै' । 'वासर भूख न रैन न निद्रा, यह तन पल पल छीजै । मीरां के प्रभु गिरधर नागर अब, मिल बिछुडन नहिं कीजै' । (राम स. गु. १६ पृ. २५-२६)।

पद–१८३ : राग–विहाग सोरठ वा कानड़ा शंकरा : ताल–रूपक वा चौताल

(भक्ति)

ज्यो चित ल्याय हरि जप करै, ज्यो मन लाय हरि जप करै ।
अमर होय मरे न कबहूँ, काल जासै डरै । (टेर)
भक्ति तो प्रहलाद की सी, साँच उर में धरै ।
भक्ति के बस स्यामसुंदर, सिंह को बपु धरै ॥ १
कोटि बैरी तृण बराबर, कहा वाको करै ।
ओट जिनकी नन्दनन्दन, कौन तासे अरै ॥ २
भक्ति को परताप ऐसो, कुटिल गनिका तरै ।
दास मीराँ लाल गिरधर, शरण हरि की परै ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१८४ : राग–दुर्गा, विभास : ताल–कहरवा

(संयोग)

झकोलो लाग्यो जी रंग गिरधर को आन । (टेर)
गिरधर गिरधर काईं करो, कोई गिरधर स्याम सुजाण ॥ १
मीराँ तो चंदा भई कोई, गिरधर ऊग्यो भान ॥ २
ऊदाँ थे तो बावली कोई, नहचै कर ल्यौ ध्यान ॥ ३
आपाँ दोन्यूं मिल भजाँ कोई, ज्यों गोप्यां बिच कान ॥ ४
मीराँ नै गिरधर मिल्या जी, भगताँ रो राख्यो मान ॥ ५

◈ ◈ ◈

१८३–१ (उ); (मी. प. जमा. राम. १) ।
१८४–१ (उ); (स्फुट पत्र) ।

पद–१८५ : राग–काफी : ताल–जैत

(झूला और फाग-लीला)

झूलत राधा संग गिरधर झूलत राधा संग। (टेर)
अबीर गुलाल की धूम मचाई, डारत पिचकारी रंग ॥ १
लाल भयो बृंदाबन जमुना, केसर चुवत अनंग ॥ २
नाचत ताल आधारे सुर सुंदरी, डारी डारी बाजे ताल मृदंग ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की बहुत उमंग ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१८६ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(राणा संवाद – प्रार्थना – प्रत्यक्षानुभव)

डब्बा में सालगराम बोलत क्यों नहियाँ। (टेर)
हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरैयाँ ॥ १
यह भवसागर अगम भरो है, काढ लेहु गहि बैयां ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुम ही मोरे सैयाँ ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१८७

(विरह)

डार गयो री मनमोहन पासी। (टेर)
बिरह दुखारी मैं तो बन बन दौड़ी, प्राण तजूंगी लूंगी करवत कासी ॥ १
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन की दासी ॥ २

◈ ◈ ◈

---

१८५ (का./उ.१/३१०)।
१८६–२ (म); (स. मा. मी. ली. १९)।
१८७–२ (म); (का./उ.३/३६९)।

पद–१८८ : राग–देश : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

डारि गयो मनमोहन फाँसी । (टेर)
आँबा की डाल कोइलि इक बोलै,
मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ॥ १
विरह की मारी मैं बन बन डोलूँ,
प्राण तजूँ करवत ल्यूँ कासी । २
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१८९ : राग–सोरठ वा तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर । (टेर)
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर ॥ १
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर ॥ २
तुम से हमकूं तो तुम ही हो, हम सी लाख करोर ॥ ३
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूं, अरज करत भयो भोर ॥ ४
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, दूंगी प्राण अकोर ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–१९० : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विरह-उत्सुकता)

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़्या, अब मोहि क्यों तरसाओ । (टेर)
विरह-व्यथा लागी उर अन्दर, सो तुम आय बुझाओ ॥ १
अब छोड़्यां नहिं बनै प्रभूजी, हंस कर तुरत बुलाओ ॥ २
मीराँ दासी जनम जनम की, अंग सूं अंग लगाओ ॥ ३

◈ ◈ ◈

१८८–२ (म); ।
१८९–१ (उ.ट.); (राम स. गु. ५६) ।
१९०–१ (उ); (वं. पु. पृ. २०) ।

पद–१९१ : राग–देश : ताल–कहरवा

(विनय)

तुम आज्योजी रामा, आवत आस्यॉं स्यामा। (टेर)
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरै मनोरथ कामा ॥ १
तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसैं सूरज घामा ॥ २
मीराँ मनकों और न मानै, चाहे सुन्दर स्यामा ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१९२ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(विरह)

तुम आवो हो कृपानिधान नाथ बेग ही[1] । (टेर)
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसे कही ।
महल हूं न आये मैं दोदार देख ही[2] ॥ १
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसी क्यूं गये ।
दीन के दयालजी कठोर क्यूं भये ॥ २
दीपक मेरै हाथ लियाँ बाट जोवती ।
रांमहू न आये सारी रैंणि रोवती ॥ ३
पीया के दरस बिनां फिरूं डोलती[3] ।
मीराँ तो तुम्हारी दासी रांम बोलती ॥ ४

◈ ◈ ◈

१९१–१ (उ.ट.); (बं. पु.) ।
१९२–२ (म.); (राम स. गु. पृ. १६७) ।
१. पा०–'बेगदी' । २. 'देखदी' । ३. 'झूरती' ।

पद–१९३ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(सेवा, राजभोग)

तुम जीमो गिरधरलालजी । (टेर)
मीराँ दासी अरज करै छै, जीमूं परम दयालजी ।
छप्पन भोग छतीसों बिंजन, पावो जन प्रतिपाल जी ॥ १
राजभोग अरोगो गिरधर. सन्मुख राख्यो थाल जी ।
मीराँ दासी चरण उपासी, कीजे बेग निहाल जी ॥ २

◈ ◈ ◈

पद–१९४ : राग–सारंग वा टोडी : ताल–कहरवा

(सेवा, भोग)

तुम जीमो गिरधरलाल जू । (टेर)
मीराँ दासी अरज करै छै, मोकूं करो निहालजू ॥ १
या बिरियाँ है बालभोग की[2] , लीज्यो चिंत में धार जू ॥ २
केसर अतर पुष्प के हरवा, इण विध करो सिंगार जू ॥ ३
छप्पनभोग छतीसोंविंजन, लाई भर भर थाल जू ॥ ४
पान गिलोरी सुगँध मिला कर, कीनी है सब त्यार जू ॥ ५
मीराँ दासी किई परिक्रमा, मोकूं करो निहाल जू ॥ ६

◈ ◈ ◈

१९३– (उ.ट); (स. मा. मी. ली.)।
२ (म०)।

पद–१९५ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–दीपचंदी आसावरी

(विरह)

तुम देख्यां बिनि कल न परत है,
भली ए बुरी कोई लाख कहो जी । (टेर)
नेह को पैंडो बोहोत कठण है,
च्यारि कही दस और कहो जी ॥ १
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी,
प्रीत करी तौ बोल सहो

◈ ◈ ◈

पद–१९६ : राग–सिंध भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

तुम विन मेरी कौन खबर ले, गोवरधन गिरिधारी । (टेर)
मोरमुकट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छवि न्यारी ॥ १
भरी सभा में द्रोपदि ठाढ़ी, राखो लाज हमारी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल बलिहारी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–१९७ : राग–कालँगड़ा : ताल–धमाल

(विनय)

तुम बिन स्याम सुने(गो) कौ(न) मेरी । (टेर)
ठाढ़ी खेवटणी अरज करत है, मलवा ने नाव पछिम को फेरी ॥ १
नदिया गहरी नाव पुराणी, अधपर बीच भँवर ने घेरी ॥ २
बोदी है प्रभु पार लगावो, डूब जाय तो कहा रहै तेरी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कुल को त्याग शरण लई तेरी ॥ ४

◈ ◈ ◈

१९५–२ (म.ट.); (राम स. गु. पृ. १३३)।
१९६–२ (म); (बृ. भ. र. पृ. १७)।
१९७–२ (म); (मी. प. जमा. राम. ४)।

पद–१६८ . राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताल

(विनय)

तुम ह्याँ ही रहो राम रसिया,
थारी साँवरी सुरति (म्हैं) मन वसिया। (टेर)
क्यांनैं तो रामजी घोड़ा सिणगारो, क्यांनैं पाषर कसिया ॥ १
चुण चुण कलियाँ सेज सँवारूँ, ऊपर गादी तकिया[1] ॥ २
बोहोत दिना की पंथ निहारूँ, तुम आयाँ रंग रचिया ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, चरणकमल मन वसिया ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–१६६ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विनय)

तुम सुनों दयाल म्हारी अरजी। (टेर)
भोसागर में वही जात हूँ, काढो तो थारी मरजी ॥ १
यो संसार सगो नहिं कोई, साँचा सगा रघुवरजी ॥ २
मात पिता और कुटुँव कवीलो, सव मतलब का गरजी ॥ ३
मीराँ की प्रभु अरजी सुन ल्यो, चरण लगाओ गिरधरजी ॥ ४

◈ ◈ ◈

१६८–(म); (राम स. गु. पृ० २२१)।
१. नोटः—एक अंतरा 'भजनमंजरी' में यह हैः—
'सिरै गाय का दूध मँगाया चावल गेसा भर पसिया'।
१६६–२ (म.ट.); (वं. पु पृ. २६)।
१. पा०–'चरण लगाऊं थारी मरजो'।

पद–२०० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

तुमसों तो मन लाग रह्यो तुम जागो मोहन प्यारे । (टेर)
भोर भई चिड़ियाँ चहचई, कागा बोले कारे ।
कामनियों ने चीर सँभाले, घर घर खुले किंवारे ॥ १
सारी गउएँ निकस गईं यमुना, लेकर संग लवारे ।
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, दाँईदार तिहारे ॥ २
घर घर ग्वालन दही बिलोवें, कर कंगन भनकारे ।
वस्तर भूषण तन पर धारो, पगियाँ पेच सँवारे ॥ ३
या ब्रज के प्रभु भूषण तुम हो, तुम ही प्राण हमारे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आमीं शरण तिहारे ॥ ४



पद–२०१ : राग–प्रभाती : ताल–तिताला, कहरवा

(निहोरा)

तुमसों मनवा लागि रह्यो, तुम जागो मोहन प्यारे । (टेर)
रजनी बीती भोर भई है, घर घर खुले दुवारे ।
घर घर गोपी मही बिलोवे, करै कञ्चन भुनकारे ॥ १
गउ वछरा सब बन कूं ध्याये, लारे लाग लवारे ।
ग्वाल वाल सब द्वारे ठाढ़े, दाँईदार तुमारे ॥ २
गंगा जागी जमुना जागी, जागे नदी और नाले ।
धरती को राजा बासग जागे, तुम जागो मोहन प्यारे ॥ ३
बन में तो चिड़ियाँ चूंचाई, कव्वा बोल्या कारे ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सब्र संतन रिछपाले ॥ ४



२००–२ (म.ट,) ।
२०१–३ (क); (पुजा.ना थू. पु.से) ।

पद–२०२ : राग–काफी : ताल कहरवा

(राणा संवाद)

तुलसाँ की माला हिवड़ै लागा जी (मेवाडा राणा)।
राम तणा गुण गास्याँ। (टेर)
लिख पत्तर राणूं मीराँ नै भेज्यो,
संग साधाँ से पिसतास्यो जी ॥ १
लिखरे पत्तर मीराँ राणाजी ने भेज्यो,
साधूड़ाँ रे सँग सुख पास्यां जी ॥ २
बिष रा पियाला राणाजी भेज्या,
पिवताँ पिवताँ म्हाँनै आवै हाँसी जी ॥ ३
मीराँ के प्रभू गिरधरनागर,
हरि चरणाँ में चित लास्याँ जी ॥ ४



२०२-(सा०) स्फुट पद)।

पद–२०३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(कथोपकथन-चरित)

(तू तो) सांवलडी गोरी नार, मारग बिच क्यों खड़ी । (टेर)
(मीराँ) काँई थारी दूखै छै आँख, कै घर सास लड़ी ।। १
(मीराँ) काँई थारो पीयो परदेस, सँदेसै यों खड़ी ।। २
(तू तो) चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे तो मेरी क्या रे पड़ी ।। ३
(तू तो) उड़ रे हरिया बन का सूवटा, उड़ रे द्वारिका में जाय,
साँवरिया ने कहियो ओळमा ।। ४
(मीराँ) क्याँ पर लिखोला सलाम, क्यां पर तो करड़ा ओळमा ।। ५
सूआ, चूँचाँ पै लिखूंली सलाम, पंखां पै करड़ा ओळमा ।। ६
मीराँ, ग्यारस ने करो जी निरार, बारस ने खोलो पारनो ।। ७
मीराँ, तेरस ने चालै दीनानाथ, चौदस ने हरि आ मिलै ।। ८
राणा, थे छो म्हारा झूंठा भरतार, साँचा छै श्रीहरि साँवरा ।। ९

◈ ◈ ◈

पद–२०४ : राग–आसा माड : ताल–कहरवा

(विरह चरित)

तू मत बरजे माइडी, साधाँ दरसण जाती ।
राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती । (टेर)
माइ कहे सुन धीहडी, काहे गुण फूली ।
लोक सोवे सुख नींदड़ी, तूं क्यूं रैंणज भूली ।। १
गेली दुनियाँ बावली, ज्याँकूँ राम न भावे ।
ज्याँरे हिरदे हरि बसे, त्याँकूँ नींद न आवे ।। २
चोमासा की बावड़ी, ज्याँको नीर न पीजे ।
हरि नाळे अमृत झरे, ज्याँकी आस करीजे ।। ३
रूप सुरंगा रामजी, मुख निरखत जीजे ।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, हरि अपणी कर लीजे ।। ४

◈ ◈ ◈

२०३ (सा.) (का. ह. नं. १) ।
२०४–१ (उ.ट.); (शब्दावली–मंजु.) ।

पद–२१४ : राग–अलैया : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

तोसों लाग्यो नेह रे प्यारे नंदकुमार ।
मुरली तेरी मन हर्‌यो, विसर्‌यो घर ब्यौहार । (टेर)
जब तें श्रवननि धुनि परी, घर अँगणा न सुहाय ।
पारधि ज्यूँ चूकै नहीं, मृगी बेधि दइ आय ॥ १
पानी पीड़ न जानई ज्यूँ मीन तड़फ मरि जाय ।
रसिक मधुप के मरम को नहिं समझत कमल सुभाय ॥ २
दीपक को तो दया नहिं उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीराँ प्रभु गिरधर मिले जैसे पाणी मिलि गयो रंग ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२१५ : राग–सारंग : ताल–तिताला

(विनय)

तोरी साँवरी सूरत नंदलालाजी । (टेर)
जमुना रे तीर तीर धेनु चरावत, काली कामलीवालाजी ॥ १
मोर मुकुट पीताँबर सोहे, कुंडल झलकत लालाजी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपालाजी ॥ ३

◈ ◈ ◈

२१४–१ (उ.); (भजन सं. भा. ३ । पृ. ७९ । पद ७७ । ५वां सं.) ।
२१५ (का. उ. १।३०३) ।

पद–२१० : राग–काफी : ताल– दीपचंदी

(विरह)

तैं दरद नहिं जान्यूं, सुनि रै बैद अनारी। (टेर)
तू जा बैद घर आपणैं रे, तुझे खबर मोरी नांहीं।
मोरे दरद को तू मरम न जांणैं, करक कलेजा रै मांहीं ॥ १
प्रांण जांण का सोच नहीं मोहि, नाथ दरस द्यौ आरी।
तुम दरसण बिनि जीव यूं तरसै, ज्यूं जल बिनि पनवारी ॥ २
कहा कहूं कछु कहत न आवै, सुणिज्यौ आप मुरारी।
मीराँ के प्रभु कब 'र मिलोगे, जनम जनम की मैं थारी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२११

(प्रेम लीला)

तैं मेरी गैंद चुराई, गुवालन। (टेर)
अबही आन परी तेरे अंगना, अंगियाँ बीच छुपाई ॥ १
ग्वाल बाल सब मिल कर आये, झगरत झोंका आई[1] ॥ २
साँचे कनैया झूंठ मत बोलो, जाँण पड़ी चतुराँई[2] ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जाई ॥ ४

◈ ◈ ◈

२१०–२ (म.) (राम स. गु. पृ. ३४६)।
२११–(सा.) (का. ।३०२।३५६)।
१. पा. 'ग्वाल वाल सव ढूंढ़न लागे, एक गई दो पाई'।
२. पा. 'छूट पड़ी चतराई'।
यह पद 'भजन रत्नावली' मोटी के पृ. १६१ पर है। थोड़ा अंतरों में भेद है—सं.।

पद–२१२ : राग–माड : ताल–दादरा

(प्रेमलीला)

तोती मैना राधा कृष्ना बोल । राधे कृष्ना बोल । (टेर)
एक हि तोती ढूंडत आई, लटक दिवानी मोल ॥ १
दाना खावै तोती पानी पीवै, पिंजरे में करत कलोल ॥ २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि के चरण चित डोल ॥ ३

* * *

पद–२१३ : राग–कामोद : ताल दीपचंदी

(विरह)

तोसों लाग्यो नेहरा, (तू) नागर नन्दकुमार ।
मुरली तेरी मन हर्यो, बिसर्यो घर व्योहार । (टेर)
जब तें स्रवननि धुनि परी, घर अँगना न सुहाइ ।
पारधि ज्यूं चूकै नहीं, मृग वेधि दई आइ ॥ १
पानी पीर न जानई, मीन तलफि मरि जाइ ।
रसिक मधुप के मरम कों, नहिं समुझत कमल सुभाइ ॥ २
दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीरां प्रभु गिरधर मिले, (जैसे) पाणी मिल गयो रंग ॥ ३

* * *

२१२–३ (क.) ।
२१३–२ (म.); (राम स. गुटका से) ।

पद–२०५ : राग–माढ वा सोरठ : ताल–दादरा

(रहस्य प्रेम)

तेरा कोई नहिं रोकणहार, मगन होय मीराँ चली। (टेर)
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी।
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकली हूँ ज्ञान गली॥ १
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण सेज विछी।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली॥ २
बाजूवंद कड़ूला सोहे, माँग सिंदूर भरी।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हां, सोभा अधिक भली॥ ३
सेज सुखमणा मीराँ सोवै, धन सुभ आज घरी।
तुम जावो राणा घर अपने, मेरी तेरी नाहिं सरी॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२०६ : राग–झँझोटी : ताल–त्रिवट

(राणा सम्बन्धी दुविधा)

तेरा मेरा जियड़ा यक कैसे होय, राम। (टेर)
हमने कहा सुरझावन राणाँ, तुम जाते उरझाय, राम।
हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय, राम॥ १
तेल जले तो जलती है वाती, दिवरा झलमल सोय, राम।
जल गया तेल रु बुझ गई वाती, लच्चर लच्चर होय, राम॥ २
हमने कहा आँखिन का देखा, तुम कानों सुनि सोय, राम।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, होनहार सो होय, राम॥ ३

◈ ◈ ◈

२०५–२ (म.ट.) (शब्दावली–मंजु.)।
२०६–२ (म.) (आ. सा. १ भाग पृ. १३७)।

पद–२०७ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(छवि वर्णन)

तेरे साँवरे मुख पर वारी वारी बलिहारी। (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर शोभे, कुण्डल की छवि न्यारी ॥ १
वृन्दावन में धेनु चरावे, मुरली बजावत प्यारी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२०८ : राग–अडाणा : ताल–तिताला

(उपालंभ)

तेरो कान्ह कालो माई, मेरी राधा गोरी। (टेर)
ऐसी राधे रूप बनी, कंचन सी देह ठनी,
ऐसे काले कान्ह पर, कोटीं राधे वारी ॥ १
गोकुल उजाड़ दीनी, मथुरा बसाय लीनी,
कुबजा कूँ राज दीनों, राधे कूँ बिसारी ॥ २
बिनती सुनो ब्रजराय, लागूँगी तुम्हारे पाय,
मीराँ प्रभू सूँ कहियो जाय, सेवक तुम्हारी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२०९ : राग–कालंगडा : ताल–कहरवा

(रहस्य)

तेरो मरम नाहिं पायो, रे जोगी। (टेर)
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो ॥ १
गल बिच सेली हाथ हाजिरियो, अंग बिभूति रमायो ॥ २
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, भाग लिख्यो सोही पायो ॥ ३

◈ ◈ ◈

२०७–२ (म.)।
२०८ (का. उ. १।३१३)।
२०९–२ (म.) (मंजु. ६५)।

पद–२१७ : राग–बिलावल : ताल– कहरवा

चरित्र—ऊदां व मीराँ संवाद

(ऊदाँ) थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानों बात हमारी । (टेर)
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जारी ।
कुलकै दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रहि भारी ॥ १
साधाँ रे संग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी ।
बड़ाँ घराँ थे जनम लियो छै, नाँचो दे दे तारी ॥ २
बर पायो हिंदवाणो सूरज, थे काँई मन में धारी ।
मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ॥ ३
(मीराँ) मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँबाई समझो सुघर सयानी ।
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी ॥ ४
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी ।
राणा नैं समझावो जावो, मैं तो बात न मानी ॥ ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सन्तां हाथ बिकानी ॥
(ऊदाँ) भाभी बोलो वचन बिचारी
साधाँ की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ।
छापा तिलक गलहार उतारो, पहरो हार हजारी ॥ ६
रतन जड़ित पहरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीराँजी थे चलो महल में, थांनैं सोगन म्हारी ॥ ७
(मीराँ) भावभगत भूषण सजे, सील संतोष सिंगार ।
ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार ॥ ८
ऊदाँबाई मन समझ, जावो अपने धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूँ काम ॥



२१७–१ (उ.ट.); (शब्दावली) ।

पद–२१८ : राग–माढ़ : ताल–कहरवा

(उत्सुकता)

थाँनै काँई काँई कह समझाऊँ म्हारा बाल्हा गिरधारी । (टेर)
पूरब जनम की प्रीति हमारी, अब नहीं जात निबारी ॥ १
सुंदर बदन जोवते सजनी, प्रीति भई है भारी ॥ २
म्हारै घराँ पधारो गिरिधर, मंगल गावै नारी ॥ ३
मोती चोक पुराऊँ बाल्हा, तन मन तो पर वारी ॥ ४
म्हारो सगपन तोसूँ साँवलिया, जग से नहीं बिचारी ॥ ५
चरण शरण है दासी तोरी, पलक न कीजे न्यारी ॥ ६
मीराँ कहै गोपिन कों बाला, हमसूं भये ब्रह्मचारी ॥ ७

◈ ◈ ◈

पद–२१९ : राग–टोडी जोनपुरी : ताल–धीमा तिताला

(उत्सुकता)

थाँरी छूँ रमईया मोसूँ नेह निभावौ[1] । (टेर)
थाँरे कारण सब सुख छोड्या, (अब) क्यूँ हमकूँ तरसावौ ॥ १
बिरह बिथा लागी उर अंदर, सो तुम आय बुझावौ ॥ २
अब छोड़्याँ नाहीं बणैं प्रभूजी, हँस कर तुरत बुलावौ ॥ ३
मीराँ दासी जनम जनम की, अंग सूं अंग लगावौ ॥ ४

◈ ◈ ◈

२१८–१ (उ.); (बं. पु. पृ. २३) ।
२१९–१ (उ.ट.); (राम स. गु. पृ. ३००) ।
१. पा०– 'थारा छाँ' । 'म्हांसू' ।

पद–२२० : राग–सिंध भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(छवि-वर्णन)

थारी छवि प्यारी लागै राज, राधावर महाराज । (टेर)
रतनजटित सिरपेच कलंगी, केसरियाँ सब साज ॥ १
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, रसिकाँ रा सिरताज ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँने मिल ग्या ब्रजराज ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(प्रेम)

थारी बोली लागे म्हांने मीठी हो म्हारा साँवरिया । (टेर)
थे तो साँवरिया म्हारा सिरका जी सेवरा,
मैं थारे हाथ की अँगूठी ॥ १
कुंजगली में म्हाँनें मोहन मिलिया,
किस विध फिरूं अपूठी ॥ २
सास बुरी म्हारी ननद हठीली,
जलबल होय जाय अँगीठी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर,
भेजी मरम की चीठी ॥ ४

◈ ◈ ◈

२२०-१ (उ.); (या०-सं. रा. क. से)।

पद–२२२ : राग–देस : ताल–कहरवा

(उलाहना)

थारे कुबजा ही मन मानी म्हाँसूँ अनबोलना हो राज । (टेर)
हमसे कहै सुहाग उतारो, दृग अन्जन सब ही धो डारो ।
माँथे तिलक चढावो, पहरो चोलना हो राज ।। १
हमरी कही बिषै सम लागै, घर घर जाय भँवर रस पागै ।
उनही के सँग रहना, हँसना बोलना हो राज ।। २
बृन्दाबन में धेनु चरावैं, बंसी में कछु अचरज गावैं ।
बाँकी तान सुनावें, छतियाँ छोलना हो राज ।। ३
हमरी प्रीत तुम्ही सँग लागी, लोकलाज सब कुल की त्यागी ।
मीराँ के प्रभु गिरधर, बन बन डोलना हो राज ।। ४



पद–२२३ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

थारै रंग रीझी रसिक गोपाल[1] । (टेर)
निसवासर मैं रटूं निरंतर, दरसण द्यो नंदलाल ।। १
सो पतिब्रत टरै जिन टारयो, मति बिसरो नंदलाल[2] ।। २
कोउ कहै नंदो कोउ कहै बंदो, चलां भावती चाल ।। ३
सो मध भक्ति करौ जिन साधो, म्हारो मणि उरमाल ।। ४
प्रेम भरी मीराँ जिन गरवै[3], हिरदै गिरधरलाल ।। ५



२२२–१ (उ.ट.); (स. मा. मी. ली. २४)
२२३–१ (उ.ट.); (मी. ली. प. दूधू । ११) (मा. ह. ना. जी की पु०) ।
१. पा०–'थारे गुण' । २. पा०–'हिरदै गिरधरलाल' । ३. पा०–'गरजै' ।

पद–२२४ : राग–प्रभाती : ताल–धीमा तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

थे तो पलक उघाडो दीनानाथ, मैं हाजिर (नाजिर) कद की खडी।
(टेर)

साजनिया दुसमन होय बैठ्या, सब नैं लगूँ कड़ी[1] ।
तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी ।। १
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदरा, सूकूँ खड़ी खड़ी ।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ।। २
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीराँ में कहिये, सौ पर एक घडी[2] ।। ३



पद–२२५ : राग–कालँगड़ा : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

थे म्हारै घर आज्यो जी, प्रीतम प्यारा । (टेर)
मो निगुणी में गुण नहिं एको, थेही बकसणहारा ।। १
तन मन धन न्यौछावर करस्याँ, जतन कराँ म्हे थारा ।। २
मीराँ को प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिन प्राण दुख्यारा ।। ३



२२४–१ (उ.ट.)

१. पा०–'थे' के स्थान में 'तुम' । 'साजथें' 'साजनिया' के स्थान में ।

२. पा०–यहां एक अन्तरा विशेष है—'गुरु रैदास मिले मोहि पूरे, धुर से कलम भिड़ी । सतगुरु सेन दिई तव आ के, जोत में जोत रली ।' (सं०)

२२५–१ (उ.ट.); (स.मा.मी.ली. ११), (दीना. मं. मी. प. १६) ।

पद–२२६ : राग–माढ : ताल–कहरवा

(पराभक्ति रहस्य)

थोड़ी थोड़ी पावो गिरधारीजी भोली[1] म्हांने आवैं । (टेर)
नंदन बन सूं बूँटी आई, जोग ध्यान दरसावैं ।
या बूँटी दुरलभ देवन कों, सेस सहसमुख गावै ।। १
शिव बिरंचि जाको ध्यान धरत हैं, वेद पुराण सुनावै ।
मीराँ तो गिरधर रँग राची, भक्ति पदारथ पावै ।। २

◈ ◈ ◈

पद–२२७ : राग–माढ़ : ताल–रूपक

(चरित)

द्वारिका को बास हो मोहि द्वारिका को बास । (टेर)
संख चक्र हुं गदा पद्म हूं, ते मिटै जम त्रास ।। १
सकल तीरथ गोमती में करत निवास ।। २
शंख झालरि झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ।। ३
तज्यो देसौ वेस पति गृह, तज्यो सम्पति राजि ।। ४
दासि मीराँ सरन आई, तुम्हैं अब सब लाजि ।। ५

◈ ◈ ◈

२२६–१ (उ.ट.); (स. मा. मी. ली. १४) ।
१. पा०–'आवै–चढ़ै' ।
२२७–२. (म.); (मीराँबा. जी. च. (१८ द) पृ. २४) ।

पद–२२८ : राग–खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

दरस बिन दूखन लागे नैन । (टेर)
जबसे तुम बिछुड़े मोरे प्रभुजी[1], कबहु न पायो चैन ॥ १
शब्द सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लागे (तुम) बैन ॥ २
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छ मासी रैन ॥ ३
विरह विथा कासूं कहुँ सजनी, वह गई करवत ऐन ॥ ४
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन ॥ ५



पद–२२९ : राग-खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

दरस बिन दूखन लागे नैन । (टेर)
पिया मिलन की है मन मांही, कल न पड़त दिन रैन ॥ १
कबहु मिलैंगे प्रीतम प्यारे, अधर धरे मृदु बैन ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिन देखे नहिं चैन ॥ ३



२२८–१. (उ.ट.); (वं.पु. पृ० १५) ।
१. पाठा० 'सांई' ।
२२९-१. (उ.); (मा. ह. की पु. ह.)

पद–२३० : राग–सिन्ध : ताल–कहरवा

(लोला)

दसियो मोहन किस दानी । (टेर)
आवँदा जावँदा नजर न आवै, अजब तमाशा इस दानी ॥ १
दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी, लोभी यह गोरस दानी ॥ २
मात यशोदा दही बिलोवै, गोरस ले ले नसदानी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, लूं लूं दे विच रसदानी ॥ ४



पद–२३१ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(सँदेशा)

दासी म्हारा म्हारूड़ा[1] मारुजी से कहना ।
मोय नींद न आवे नैना । (टेर)
जे मेरा गोबिंद दूर बसत है, मोय सँदेशो देना ॥ १
जे मेरा गोबिंद गाली देवे, सनक सनक सुन लेना ॥ २
जे मेरा गोबिंद बैन बजावै, प्रेम मगन होय कहना ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरन कमल चित देना ॥ ४



२३०–२. (म.); (बृ. रा. र. पृ. ५१८) ।
२३१–२. (म.); (भ. मं. पृ. १५८) ।
१. 'मारूड़ा' के स्थान में स्यात 'मुजरा' होगा, लिपि-दोष से अथवा अन्य किसी दोष से अपभ्रंश हुआ ज्ञात होता है ।

पद–२३२ : राग–माढ़ : ताल–रूपक

(चरित)

दीज्यो म्हानैं द्वारिका को बास, रूडा रणछोडजी हो। (टेर)
सुथान बासो नाम हरि को, झालरिये[1] झुणकार।
सकल तीरथ गोमती रे बाला, साँवरियो सिरदार॥ १
पपैया नैं मेघ प्यारो, मांछली मध नीर।
म्हांनैं[2] तो गिरधर हि प्यारो, छांड्यो जगत सूँ सीर॥ २
तजियो पीहर सासरो, तजियो सह उपहास।
राणाजी रो बास तजियो, राखो रावल बास[3]॥ ३
मथुरा[4] में हरि जनमिया जी, कियो द्वारिका बास।
सहँस गोप्यांरो बालमो, गावै मीराँ दास॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(मान)

दूरो रह रे कँवर नंदना रे, परो रह रे कँवर नंदना रे। (टेर)
कारी कामरी वारा तुमैं कानजी ओ।
थे तो रीज्या रीज्या सालूड़ा री कोर(जी) पे ओ॥ १
गज मोत्याँ वारी राणी राधिकाजी रे।
श्री राधा गोरी जी ज्याँको नाम छै रे॥ २
बाला हात जोड़ी ने कराँ बीनती रे।
म्हारो अबला को खयोड़ो जादू मानजो रे॥ ३
मीराँ मेड़तणी रा म्हैलाँ उमाइया रे।
वै तो रीज्या रीज्या साधूड़ां रा साथ में रे॥ ४

◈ ◈ ◈

२३२–३. (क.)।
१. पा०–'जिनरो मोज न पार'।
२. पा०–'म्हांनै तो म्हारो साहिव प्यारो, छांड्यो जगत को आस'।
३. पा०–'पास'।
४. पा०–'गोकुल से प्रभु मथुरा आये, भये द्वारका बास'।
२३३.–३. (क.)।

पद–२३४ : –रेखता : ताल–कहरवा

(विरह)

देख्या कोई नंद के लाला, बता द्यौ बंसरी वाला। (टेर)
मेरो मन ले गयो हेली, लगी तन में तालाबेली ।। १
लगी कोई कान में दूती, तजी मोहि सेज में सूती।
बिरह का बाण भर मार्‌या, कलेजा छेद कर डार्‌या ।। २
देख्यां बिन जीव अति तरसैं, नैनों में नीर अति बरसै।
जहां ऊ कान्ह कारो री, मुझे ले जाय डारो री ।। ३
तज्या सब षांन पानी री, नहीं मेरी पीड़ जानी री।
मोहन मोहन पुकारूं री, सोवन सिर केस सँवारूं री ।। ४
ढूंढ्या बन बाग सारा री, मिल्या नहीं प्राणप्यारा री।
हेलो हरिजन मिलावौ री, मीराँ के प्राण बचावौ री ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–२३५ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(चरित)

देखत राम हँसे सुदामाँ कूँ देखत राम हँसे। (टेर)
फाटी तो फुलडियां पांव उभाणे, चलतैं चरण घसे ।। १
बालपणे का मित सुदामा, अब क्यों दूर बसे ।। २
कहा भावज ने भेट पठाई, ताँदुल तीन पसे ।। ३
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल कसे ।। ४
कित गई प्रभु मोरी गउ अरु बछिया, द्वारों बिच हस्ती फसे ।। ५
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, सरणैं तोरे बसे ।। ६

◈ ◈ ◈

२३४–३ (क); (राम स. गु. पृ. २६२)।
२३५–३ (क.)।

पद–२३६ : राग–मलार : ताल–कहरवा

(प्रेमानन्द)

देखी बरषा की सरसाई, मोरे पियाजी की मन में आई । (टेर)
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमकै झर लाई ।। १
स्याम घटा उमडी चहुँ दिस से, बोलत मोर सुहाई ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आनँद मंगल गाई ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–२३७ : राग–विहाग, सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

देखो सइयाँ हरि मन काठो कीयो । (टेर)
आवन कह गयो अजहुँ न आयो, करि-करि वचन गयो ।। १
खांन पांन सुध बुध सब बिसरचा, कैसे करि न जियो ।। २
बचन तुम्हारे तुम हि विसारो, मन मेरो हरि लियो ।। ३
मीराँ कहै प्रभु गिरधरनागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–२३८ : राग–देस : ताल–कहरवा

(प्रेम)

देरी अब माई म्हांको गिरधरलाल । (टेर)
प्यारे चरन की आन करत हूँ, और न लूँ मनि माल ।। १
नातो सगो परिवारो सारो, मने लगे ज्यों काल ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनलाल की, छवि लखि भई निहाल ।। ३

◈ ◈ ◈

२३६–२ (म.) ।
२३७–१ (उ.); (वं. पु. पृ. ५) ।
२३८– (ट.); (स. मा. मी.ली. २) ।

पद-२३९ : राग-कालँगडा : ताल-कहरवा

(भक्ति दृढ़ता)

धत्ताँ लग्यो हे माय, राम रंग धत्ताँ लग्यो। (टेर)
किण विध कहूँ कहण नहिं आवै, रह्यो[1] घुमाय घुमाय ॥ १
गुरु प्रताप साधाँ री संगत, हरिजन मिलिया आय ॥ २
किरपा[2] करो तो प्रभु ऐसी कीज्यो, दूजी नाँहि सुहाय ॥ ३
राणाँजी बिष रो प्यालो भेज्यो, म्हे सिर लियो चढ़ाय ॥ ४
चरणामृत को नाम ज लीन्हों, पी गी प्रेम अघाय[3] ॥ ५
पीवत ही अति चढ़ी खुमारी, रह गई कहत लुभाय ॥ ६
जिन मीराँ मतवारी कीन्ही, पूरब जनम के भाय ॥७



पद-२४० : राग-आसावरी : ताल-कहरवा

(ज्ञान प्राप्ति)

धन आज की घरी, सतसंग में परी। (टेर)
श्रीमद्भागोत श्रवण सुनी, रसना रटत हरी ॥ १
मन डूबत लीलासागर में, देही प्रीति धरी ॥ २
गुरु संतन की सोहनि सूरति, उर बिचि आइ अरी ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, सरणै राखि हरी ॥ ४



२३९- (उ.ट.); (दीना. मं. मी. प. २४) (मो. ली. प. दूधू १०.)
(देखो—'योतो रंग धत्ताँ लाग्यो हे माय')
१. पा.—'चढ्यो'।
२. पा.—'कृपा करी मोही अपणाई, सब दुख दियो मिटाय
३. पा.—'बढ़ाय'।
४. पा.—'अब थिर रह्यो न जाय'।
२४०-१ (उ.ट.); (क.त. ११)।

पद–२४१ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(प्रेम जोगी संवाद)

धूतारा जोगी एका सूँ हँसि बोल। (टेर)
जगत बिदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।। १
अंग बिभूति गले मृगछाला, तू जन गुढियाँ खोल ।। २
वदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।। ३
सेली नाद विभूति न वटवा, अजूं मुनी मुख खोल ।। ४
चढ़ती वैस नैंण अणियारे, तूँ घरि घरि मत डोल ५
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, चेरि भई बिन मोल ।। ६



पद–२४२ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(प्रेम)

नंद को बिहारी म्हारे हिवड़े बस्यो छै। (टेर)
कटि पर लाल काछनी काछे, हीरा मोती वालो मुकुट धरचो छे ।। १
गहि रह्यो डाल कदम की ठाडो, मोहन मो तन हेरि हरचो छे ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, निरखि दृगन में नीर भरचो छे ।। ३



२४१–२ (म.)।
२४२–१ (उ.); (या०—प्रति सं० ३८६।४८)।

पद–२४३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

नंदजी के लाला ठाडी ब्रजबाला दरसन दीजिये। (टेर)
ब्रजबाला बिनती करे, सुनियो स्याम पुकार।
बिन दरसन फीको लगै, सबही हार सिंगार॥ १
सुन्दर स्याम मनोहर मूरत, शोभा अधिक अपार।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, गल पुष्पन को हार॥ २
शिव सनकादिक गन्धर्व गावै, कर रहे वेद पुकार।
शेष सहसमुख रटत रातदिन, कोइ यन पावे पार॥ ३
नाम अनन्त नहिं आवै, हो सब के करतार।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुमरे ही आधार॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२४४ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(बधाई और आनंद)

नंदजी रे आज बधावनो छै। (टेर)
गहमह हुई रंग रावल मैं, निरखि नैना पावनो छै॥ १
भाभीजी म्हे थाँसूँ पूछाँ, आजि रो द्योस सुहावनो छै॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधर जनमिया, हुवो मनोरथ भावनो छै॥ ३

◈ ◈ ◈

२४३–१ (उ.); (पुजा. नाथू. पु. से)।
२४४–२ (म.); (ब्रजनि. ग्रंथा. पृ. २३३)।

पद–२४५ : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरह)

नंद नंदन बिलमाई, बदरा ने घेरी माई । (टेर)
इत घन गरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ॥ १
उमड घुमड चहुँ दिस से आये, पवन चले पुरवाई ॥ २
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल शब्द सुनाई ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित लाई ॥ ४



पद–२४६ : राग–आसावरी, भैरवी : ताल–तिताला

(अनन्य भक्ति)

नंद नंदन सूं मन मान्यौ मेरो, कहा करैगौ कोय री । (टेर)
अब तो चरणकमल रुचि बाढ़ी, जो भावै सोई होय री ॥ १
पिता रिसाय माय घर मारै, हँसै वटाऊ लोग री ।
अब तो जिय ऐसी बनि आई, विधना रची सोइ होय री ॥ २
अरी जै मेरौ यह लोक जात है, वह परलोक जिन जाव री ॥ ३
पिय अपने कूं तऊ न छाँडूं, मिलूं निसान बजाय री ॥ ४
बहुरि कहां यह तन धर पैहौं, बालम भये मुरार री ।
मीराँ प्रभु गिरधर के ऊपर, सरवस डारूं वार री ।



२४५-१ (न.) ।

पद–२४७ : राग–माँझ वा देश : ताल–तिताला

(भक्ति-दृढ़ता)

न भावै थारो देसड़लो (जी) रूड़ो रूड़ो[1] । (टेर)
हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग[2] बसे सब कूड़ो ॥ १
माँग और पाटी उतार धरूंगी, ना[3] पहिरू कर चूड़ो[4] ॥ २
मीराँ हठीली कहे संतन सों, बर[5] पायो छै मैं पूरो ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२४८ : राग-विलावल : ताल–कहरवा

(स्तुति)

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी । (टेर)
जाके दरस परस अघ नासे, महिमा बेद पुराण बखानी ॥ १
साखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लपटानी ॥ २
धन तुलसी पूरब तप कीन्हां, सालिगराम भई मनमानी ॥ ३
छप्पन भोग धरे हरि आगे, बिन तुलसी प्रभु एक न मानी ॥ ४
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की बरषा बरषानी ॥ ५
प्रेम प्रीति करि हरि बस कीन्हें, साँवरी सूरत हृदै समानी ॥ ६
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, खोजत फिरें महा मुनि ज्ञानी ॥ ७
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति दान दीजे महारानी ॥ ८

◈ ◈ ◈

२४७–१ (उ.); (अ. सा. भा. १ पृ. १३५) ।
. पा०—'लगे छै मन रूड़ो' ।
२. पा०—'राणाजी के देश भगति नहिं भावै' ।
३. पा०—'पाटी न पारूँ माँग नाँ सँवारूँ' ।
४. पा०—'नाँ बाँधूं सिर जूड़ो' ।
५. पा०—'मीराँ के प्रभु गिरधरनागर' ।
२४८–२ (म.); (मीराँबाई के भजन नं० १४) ।

पद–२४६ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(चेतावनी)

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार ।
क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुषा अवतार । (टेर)
बढ़त पल पल घटत छिन छिन, चलत न लागे बार ।
बिरछ के ज्यों पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार ॥ १
भवसागर अति जोर कहिये, विषम औखी धार ।
सुरत का नर बाँध बेड़ा, बेग उतरो पार ॥ २
साधु सन्ता ते गहन्ता, चलत करत पुकार ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, जीवना दिन चार ॥ ३

* * *

पद–२५० : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला

(लीला)

नहिं तेरी बरजोरी राधे, नहिं तेरी बरजोरी । (टेर)
जमुना के नीराँ तीराँ धेनु चरावै, छीनि लिई बंसी तोरी ॥ १
सब गोपन हस खेलन बैठे, तुम रहत करि चोरी ॥ २
हम नहिं चलें तुमारे घरन को, तुम हो बहुत लबारी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ॥ ४

◊ ◊ ◊

२४६– ३ (म.)
२५०–(का.।उ. २।३३६) ।

पद–२५१ : राग–खमाच वा सोरठ वा काफी वा माढ : ताल–कहरवा

(अनन्य भक्ति रहस्य)

नहीं जाऊँ सासरै माई, म्हाँने मिलिया छै सिरजणहार। (टेर)
सासू हरी सुमरना रै सुसरो परम संतोष,
जेठ जुगांरो राजवी रै पीव रह्यौ निरदोष ॥ १
देवर कै दोइ डीकरी रै दोन्यौं ही राजकुमारि,
एकैं सब जग मोहियौ रै एक रही ब्रह्मचारि ॥ २
लख चौरासी चूड़लो रै बाला पहर्यो पियाजीरै काज,
बाँह पकड़ि हरि लैचल्या मोहि दीनों छै अविचल राज ॥ ३
साधाँ मैं म्हारो सासरो रै पीया को बैकुंठाँ मैं बास,
फेरि न क़ल मैं आवस्याँजी यूँ गावैंछै मीराँ दास ॥ ४



पद–२५२ : राग–विलावल : ताल–कहरवा

(महिमा)

नागरनंदा रे मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा। (टेर)
बनस्पती में तुलसी बड़ी है, नदियन में श्रीगंगा ॥ १
सब देवन में शिवजी बड़े हैं, तारन में बड़ा चंदा ॥ २
सब भक्त में भरथरी बड़े हैं; शरण राखो गोविन्दा ॥ ३
मीराँ क़े प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित फंदा ॥ ४



२५१–१ (उ.ट.); (क. ब. ८)।
२५२– (का० ३।१३२)।

नोट– ऐसा पद 'चंद्रसखी' का वृ० रा० र० में 'मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा' इस टेर से है, पृ. २०४। अंतरों में थोड़ा अंतर है। सं०

पद–२५३ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

नातो हरिनाम को मोसूँ तनक न तोड्यो जाइ । (टेर)
पीया काज पीरी पडी री, लोग कहैं पँडु रोग ।
छानै लाँघन मैं किया री, सजनी राम मिलन के जोग ।। १
खिण आँगण खिण डागलै रे, (बाला) खिण खिण ऊभी होइ ।
घाइल ज्यूं घूमत फिरूँ री, म्हारो मरम न जाँणैं कोइ ।। २
बावल बैद बुलाइया, म्हारी पकड दिखाई बाँहिं ।
मूरख बैद न जानई, म्हारे करक कलेजा माँहिं ।। ३
जा जा बैद घर आपणें रे, म्हारो तू नाम न लेहि ।
मैं तो दाधी बिरहकी रे, तू काँईं देखै देहि ।। ४
रे रे पापी पपीहरा रे, पिया को नाम न लेहि ।
कोइक बिरहनि साम्हलै रे, तो पीव कारण जीव देहि ।। ५
काढ़ि करेजो मैं धरूँ रे, उड़ि कागा (कौवा) ले जाइ ।
ज्याँ देसाँ म्हारो पी बसै रे, वै देखैं तू खाइ ।। ६
पीव मिल्याँ जीऊँ खरी रे, नाँतर तजिहूँ देह ।
इसी मीराँ राम राती, हरि विन किसो सनेह ।। ७

◈ ◈ ◈

पद–२५४ : राग–सोरठ हुजाज : ताल–

(विनय)

नाथ तुम जानत हो सब घट की, मीराँ भक्ति करै सटपट की । (टेर)
राम मंदिरमें मीराँजी नाँचै, ताल वजावै और चिटकी ।। १
विषरा पियाला राणाँजी भेज्या, ……… ……… ।। २
कर चरणामत पीगई मीराँ, कर अमरत की गुटकी ।। ३

◈ ◈ ◈

२५३–१ (उ.); (क. व. १०) ।
२५४–३ (क.); (मी. प. जमा. राम.) ।

पद–२५५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विनय)

निजर भर न्हालो, नाथजी, हूं तो थारै चरणांरी दासी । (टेर)
मैं अबला तुम सबला स्वामी, नहीं मिलण कौ टालौ रे ।
फूँक फूँक पग धरूँ धरणि पर, मती लगाज्यौ कोई कालौ रे ।। १
आप तो जाइ द्वारिका छाये, हमसूं दे गया टालौ रे ।
बालपणे की बाल सनेही, प्रीतिबचन प्रतिपालौ रे ।। २
च्यारि महीनाँ आयौ सीयालो, च्यार महोना ऊन्हालौ रे ।
कृपा कर म्हांनैं दरसण दीज्यौ, अब ऋतु आयौ बरसालौ रे ।। ३
सब जग म्हारी निन्दा करत है, कीन्हूँ मूँढौ कालौ रे ।
सरण तुम्हारी लई साँवरा, तुम भी दियो छै म्हाँसूं टालौ रे ४
म्हारा घट में भयो अँधारौ, आँण करौ उजियालौ रे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, विरह अगनि मति जालौ रे ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–२५६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(रूप वर्णन)

निपट बंकट छवि नैना अटके (टेर)
देखत रूप मदनमोहन को, पियत पियूष न मटके ।। १
वारिज भवाँ अलक टेढी मानो, अति सुगंध रस अटके ।। २
टेढी कटि टेढी कर मुरली, टेढी पाग लर लटके ।। ३
मीराँ प्रभु के रूप लुभानी, गिरिधर नागर नटके ।। ४

◈ ◈ ◈

२५५–१ (उ.); (राम. स० गु. से) ।
२५६–१ (उ.); (बृ. रा. र. पृ. ५६०) ।

पद–२५७ : राग–नट : ताल–तिताला

(अटल विश्वास)

निपट बिकट ठौर अटके, री नैंना मेरे (टेर)
सुख संपति के सब कोई साथी, बिपति परे सब सटके ।। १
तजि खगराज छुड़ायो हाथी, टेर सुने नाहीं कहुँ अटके ।।२
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मूरख अनतहि भटके ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–२५८ : राग–विहाग : ताल–तिताला

(विरह)

निरमोहीड़ो नेह न जोड़ै[1] छै (टेर)
यो मन मस्त कह्यो नहीं मानै, अमृत में बिष घोरै छै ।। १
आप तो जाइ द्वारिका में छाए, हमकूं विरहा झोरै छै ।। २
कुबज्या दासी कंसराइ की, आप सरब सुख लोरै छै ।। ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, लागी प्रीति क्यूँ तोड़ै[2] छै ।। ४

◈ ◈ ◈

२५७– (व्रजनिधि ग्रंथावली पृ. २२६) ।
२५८–१. जोरै । २. तोरै ।

पद–२५९ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

नित न्हाने से हरी मिलै तो, जल जंतु होई । (टेर)
फल मूल खाके हरी मिलै तो, बाँदर-बाँदरा होई ।। १
तिरन भखन से हरी मिलै तो, बहुत मृगी अजा ।
स्नेह छोड़के हरी मिलै तो, बहुत हैं खोजा ।। २
दूध पीके हरी मिलै तो, बहुत वत्स बाला ।
मीराँ कहै बिन प्रेम कें, नहीं मिलै नँदलाला ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–२६० : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(प्रेम-दृढ़ता)

निन्दा म्हारी भलांई करोनै सोनैं काट न लागै । (टेर)
जोग लियो जग ज़ातौ देख्यौ, हरि भजबाकै काजै ।
जो कोई करणीं में चूक पड़ै तो, सतगुरु म्हारा लाजै ।। १
धन रे लोका थांरी करणां, कीड़ीरौ कुंजर बणायौ ।
अणदीठी अण सांमले रे, बद बद बाद उठायौ ।। २
कुल कूं छाँडि कडूंबो[1] छाँड्यौ, छाँडी ममता माई ।
और दुनियां कौ दावौ छोड्यौ, छोडी लोभ बड़ाई ।। २
पर गल दोई में पलो बिछायौ, मन भावै ज्यूं कहीयौ ।
यो जस मीराँ बाई गावै, ज्यूँ कहियौ ज्यौं सहियौ ।। ४

◈ ◈ ◈

२५९–३ (क); (बं. पु. पृ. ४३) ।
२६०–१ (उ.); (राम स. गु. पृ.) ।
१. कडूंबो = कबीलो ।

पद–२६१ : राग– बागेश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

नींद नहिं आवै जी सारी रात। (टेर)
करवट लेकर सेज टटोलू(रूँ) पिया नहीं मोरे साथ ॥ १
सगली रैन मोये तड़फत बीती, सोच सोच जिया जात ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आन भयो परभात ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२६२ : राग–खमाच : ताल– धीमा तिताला

(विरह)

नीदड़ली नहिं आवे सारी रात, किस विध होइ परभात। (टेर)
चमक उठी सुपने सुख भूली, चन्द्रकला न सुहात ॥ १
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीनानाथ ॥ २
भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात ॥ ३
मीराँ कहे बीती सोइ जाणे, मरण जीवण उन हात ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२६३ : राग–जैजैवन्ती : ताल–धमार

(विनय)

नेहा समद विच नाव लगी है, बाल[1] न लगत बही ज़ात अकेली। (टेर)
लाज को लंगर छूट गयो है, वही जात बिन दाम की चेरी।
मलहन कर से छाँड दई है, आस बड़ी गोपाल ज्यो तेरी ॥ १
अब के पार लगावो नांतर, लोग हँसेंगे बजा के हतेरी।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यो प्रभु अ न सवेरी ॥२

◈ ◈ ◈

२६१–१. (उ.); (फु. प.)।
२६२–१. (उ.)।
१. पाल।

पद–२६४ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

नैणां मोरे बाण पड़ी, साँईं मोहि दरस दिखाईं। (टेर)
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवण मूर जड़ी ॥ २
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपणे भवन खड़ी ॥ ३
मीराँ प्रभु के हात बिकानी, लोग कहे बिगडी ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२६५ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

नैणांरी हो पड़ गई याही बांण। (टेर)
बेर[1] बेर निरखूँ मुख सोभा, छूट गई कुल[2] कांण ॥ १
कोई भलां कहो कोई बुरां कहो, मैं सिर लीनी तांण ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, पूरबली पिछांण[3] ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२६६ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(रस्हय)

नैनन बनज बसाऊं री, जो मैं साहिब पाऊँ री। (टेर)
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाँऊँ री ॥ १
त्रिकुटी महल में बना है झरोका, तहां से झाँकी लगाऊँ री ॥ २
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बार बार बलि जाऊँ री ॥ ४

◈ ◈ ◈

२६४–१ (उ.)।

२६५–१ (उ.); (दीना. मं. मी. प ६) (मी. ली. प. ढूधू ४)।

१. पा०—'नैंक निहारें'। २. पा०—'कुलकी'। ३. पा०—'पहिचांण'।

२६६–१ (उ.)।

पद–२७२ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

प्रभु बिन ना सरै माई।
मेरा प्राण निकस्या जात री, प्रभु विन ना सरै माई। (टेर)
मीन दादुर बसत जलमें, जल से उपजाई।
तनक जल से बाहर कीना, तुरत(ही) मर जाई॥ १
काठ लकरी वन परी, काठ घुन खाई
ले अगन प्रभु डार आये, भसम हो जाई॥ २
बन बन ढूंढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहिं पाई।
एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई॥ ३
पात ज्यों पीरी परी अरु, विपत तन छाई।
दास मीराँ लाल गिरधर, मिल्यां सुख छाई॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२७३ : राग– : ताल–

(विरह विनय)

प्रीत मत तोड़ो गिरधरलाल। (टेर)
तुम ही साहूकार तुम ही बौहोरा, व्याज मूल मत जोड़ो॥ १
साँवरियाकै कारणै मैंने बाग लगायौ, काची कलियाँ मत तोड़ो॥ २
साँवरियाकै कारणै मैं सेज विछाई, सूनी सेज़ मत छोड़ो॥ ३
मीराँके प्रभु हरि अविनासी, इमरतमें बिष मत घोरो॥ ४

◈ ◈ ◈

२७२–२ (म.)।
२७३–३ (क.); (राम स. ग

पद—२७४ : राग—भोपाली : ताल—कहरवा

(प्रेम)

प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी रे। (टेर)
जल जमुना ना भरवा गया ताँ, हती गागर माथे हेमनी रे ॥ १
काँचे ते ताँतणे हरिजी ये बाँधी, जेम खेचे तेम तेमनी रे ॥ २
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, साँवली सुरत शुभ एमनी रे ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद—२७५ : राग—मीराँ की मल्हार : ताल—चोताला

(शृंगारवर्णन)

प्यारीके चिहुर[1] विथुरे मानो मानो धाराधर[2] की श्याम घटा उनई,
ता मध्य पहुप छुटि परे तैसें बड़ी बड़ी बूंदें। (टेर)
लाल सारी पहिरै हरी कोर मघायनिसो[3] घूँघट करि चली,
पीठ पाछेतैं तरकै कंचुकी तनीकी फूँदैं ॥ १
महँदीसों आरक्त नख बीरी[4] बहौरी ऐसी पावस बनिता मिली,
मीराँ लाल गिरधरको ले कामप्रीति काम हार गूँदैं ॥ २

◈ ◈ ◈

२७४—१. (उ.); (काव्यदोहन गु.)।
२७५—१ (उ.)। (या०—ह. लि. पदमुक्तावली से)
१. 'चिकुर-वाल'। २. 'मेघ'। ३. 'मघयामिनीसी'। ४. 'वीरवहूटी'।

नोट— इस पद के पाठ में कई शब्द स्पष्ट नहीं। इसी से अर्थ और भाव समझने में कठिनता है—सं०

पद–२६७ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(दर्शन लालसा)

नैनाँ अटके रुपसों, पल पल नहिं लागे ।
निसवासर यों ही रहै, सोये नहिं जागे ॥ (टेर)
असन बसन भूषण तजे, पिय के अनुरागे ।
मदन मूरत हिरदै बसी, अलबेलीसी पागे ॥ १
मीराँ प्रभु गिरधर मिले, भल संत समाजे ।
छटी छार तिन पर परो, जे या प्रणतें भाजे

* * *

पद–२६८ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह)

नैनां लोभी रे वहुरि सके नहिं आय । (टेर)
रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ॥ १
मैं ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय ।
सारंग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय ॥ २
लोक कुटंबी बरज बरज ही, बतियाँ कहत बनाय ।
चंचल चपल अटक नहिं मानत, पर हत गये बिकाय ॥ ३
भली कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर के विन, पल भर रह्यो न जाय ॥ ४

* * *

२६७– (या०—प्रति सं० ६९८।४५ पृ. ७५ से) ।
पा०—'छटी छार तिनकी परों जे या प्राण ते भाजे' ।
२६८–१ (उ.) ।

पद–२६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह विनय)

नैया मोरी हरि तुम ही खेवैया, तुम्हरी कृपा ते पार लगैया । (टेर)
गहरी नदिया नाव पुराणी, पार करो बलभद्र के भैया ॥ १
अजामेल गज गणिका तारी, अहल्या द्रोपदी लाज रखैया ॥ २
मीराँके प्रभु गिरिधरनागर, बार बार तुमरे बलि गइया ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२७० : राग–विहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह विनय)

प्रभुजी थे कहाँ गया नेहड़ो लगाय । (टेर)
छोड़ गया विश्वास सँगाती, प्रेमकी बाती बराय ॥ १
विरह समदमें छोड गया छो, नेहकि नाव चलाय ॥ २
मीराँ के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिना रहा न जाय ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२७१ : राग–भूपाली : ताल– तिताला

(उपालम्भ)

प्रभू तुम कैसे दीनदयाल, कैसे दीनदयाल । (टेर)
मथुरा नगरीमें राज करत है, बैठे नंदके लाल ॥ १
भकतनके दुख जानत नांहीं, षेलै गोपी गवाल ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, भकतनके प्रतिपाल ॥ ३

◈ ◈ ◈

२६९–२ (म.) ।
२७०–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ६) ।
२७१–२ (म.) ।

पद–२७६ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(प्रेम)

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम, बाँसुरी बजावत गावत कल्यान । (टेर)
कबकी मैं ठाडी भैयाँ सुधबुध भूल गैयाँ, छोने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ॥ १
जब धुन कान पैया देह की न सुध रहिया, तन मन हर लीनो बिरहो वाले कान ॥ २
मीराँबाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया, देहसों विदेह भैया लागो पग ध्यान ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२७७ : राग–विहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारी हट मांड्यौ छै जी मांझल रात । (टेर)
कबकी ठाढ़ी अरज करत हूं, होइ जासी परभात ॥ १
तलफत तलफत बौहौ दिन बीते, कबहुँ न बूझी बात ॥ २
जब के गये म्हारी सुधि नहीं लीनी, तुम बिन फीको (म्हारो) गात ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, कर मींडत पछितात ॥ ४

◈ ◈ ◈

२७६–२ (म.) ।
२७७–२ (म.) ।

पद–२७८ : राग-भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारे दर्शन दीजो आय, तुम बिन रह्यो न जाय। (टेर)
जल बिन कमल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजा खाय ॥ १
दिवस न भूख नींद नहिं रैनां, मुख से कथन न आवै बैनां।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय ॥ २
क्यों तरसाओ अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
मीराँ दासी जनम जनम की, परी तुमारे पांय ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२७९ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

पगे घूघरू बाँध मीराँ नाची रे। (टेर)
मैं सपने तो नारायणकी, हो गई आपही दासी रे ॥ १
विषका प्याला राणाजीने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे ॥ २
लोक कहे मीराँ भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे ॥ ३
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणांकी दासी रे ॥ ४

◈ ◈ ◈

२७८–१ (उ.); (बं. पु. पृ. १९)।
२७९–२ (म.)।

पद–२८० : राग–जोनपुरी, टोडी : ताल–तिताला

(मान)

पतियाँनें कूंण पतीजे, आणि[1] खबरि हरि लीजे । (टेर)
झूंठी पतियाँ लिख लिख भेजे, क्या लीजे क्या दीजे ।। १
ऐसा है कोई बांच सुणावें, मैं बांचूँ तो[2] भीजे ।। ३
मीराँके प्रभु हरि अबिनासी, चरण कँवल चित दीजे ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–२८१ राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यौये[1] न जाइ । (टेर)
बात कहूँ मोहि बात न आवै, नैन रह्या (छै) झर लाइ ।। १
कलम भरत मेरो कर कंपत है, हिरदो रह्यो घबराइ ।। २
किस बिध चरणकमल मैं गहस्यूँ, सबही अंग थरराइ ।। ३
मीराँके प्रभु हरि अबिनासी, चरण रहूं लपटाइ ।। ४

◈ ◈ ◈

२८०–१ (उ.); (राम स. गु. पृ. ३२४) ।
१. पा०—'म्हारो अंसुवां सूं अँचलो भीजे' ।
२. पा०—'मैं वांचूं तन छीजे ।
२८१–१. (उ.); (क. व. १४) (वं. पु. पृ. ८) ।
१. पा०—'लिखिहि न जाइ' ।

पद–२८२ : राग–देश मल्हार : ताल–झूमरा

(विरह)

पपीया रे पीवकी वानी न बोलि ।
सुनि पावेगी बिरहनि रालैली पाँखाँ मरोड़ि । (टेर)
चोंच कटाऊँ पपीया रे, ऊपर कालो रे लोंण ।
पीव हमारे मैं पीवकी रे, तू पीव कहै सो कौंण ॥ १
थारा सवद सुहावणां रे, जैं पीव मिलावै आज ।
चोंच मँढाऊँ थारी सोहनी, तू म्हारै सिरताज[1] ॥ २
पीतमकूँ पतियाँ लिखूँ, कागा तू ले जाइ ।
पीतमकूँ तू यौं जाइ कहियौ, थारी विरहनि अन्न[2] न खाइ ॥ ३
तुम मति जानो पीतमा हो, तुम बिछड़्यां मोहि चैंन ।
मोहि चैंन जब होइगो, भरि भरि देखूँ नैंन ॥ ४
मीराँ दासी वारणै हो, पिव पिव करत बिहाइ ।
बेगि मिलौ प्रभु अन्तरजामी, तुम बिन रह्यो न जाइ ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–२८३ : राग–कालेंगडा : ताल–कहरवा

(विरह)

परम सनेही रामकी निति ओलूँ रे आवै । (टेर)
राम हमारे हम है रामके, हरि बिन कछु न सुहावै ॥ १
आँवण कह गये अजहूं न आये, जिवड़ो अति अकुलावै ॥ २
तुम दरसणकी आस रमइया, कब हरि दरस दिखावै ॥ ३
चरण कमल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै ।
मीराँकूँ प्रभु दरसण दीज्यो, आनँद वरण्यूँ न जावै ॥ ५

◈ ◈ ◈

२८२–१ (उ. ट.); (क. ब. ७) ।
१. पा०—'राज' । २. पा०—'धान' । ३. पा०—'व्याकुली रे' ।
२८३–१ (उ. ट.) ।

पद–२८४ : राग–वागीश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

पलक न लागै मेरी स्याम बिन । (टेर)
हरि बिन मथुरा ऐसी लागै, शशि बिन रैन अँधेरी ॥ १
पात पात बृन्दाबन ढूंढ्यो, कुंज कुंज ब्रजके री ॥ २
ऊँचे खेड़ै मथुरा नगरी, तलै बहै जमुना गहरी ॥ ३
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणन की चेरी ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२८५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

पाछो रथ फेरो द्वारका-हारा । (टेर)
सूरज तलफै चंदा तलफै, तलफै नौलख तारा ॥ १
गऊ भी तलफै बच्छा भी तलफै, तलफै गुवाल बिचारा ॥ २
जोगी भी तलफै जंगम तलफै, तलफै तपसी सारा ॥ ३
गंगा भी तलफै जमुना भी तलफै, तलफै समदर खारा ॥ ४
मीराँके प्रभु हरि अबिनासी, तुम जीते हम हारा ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–२८६ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(प्रेम रहस्य)

पानीमें मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवत हाँसी । (टेर)
आतमज्ञान बिन नर भटकत है, कहां मथुरा कहां कहां कासी ॥ १
भवसागर सब हार भरा है, ढूंढत फिरत उदासी ॥ २
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, सहज मिले अबिनासी ॥ ३

◈ ◈ ◈

२८४–२ (म.); (फु. पद) ।
२८५–२ (म.); (राम. स. गु.) ।
२८६–२ (म.) ।

पद–२८७ : राग–आसा, माड : ताल–कहरवा

(चरित प्रेम)

पायो जी मैं तो राम रतन धन पायो । (टेर)
बस्तु अमोलक ही मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो ॥ १
जनम जनमकी पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ॥ २
खरचै नहि कोइ चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ॥ ३
सतकी नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ॥ ४
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, हरष हरष जस गायो ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–२८८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(लोला)

पायो म्हारो ईडूंणीको चोर, सुणज्यो ब्रजके बासी लोग । (टेर)
तू मत जाणे ईंडी घास फूसकी, ईंडी (म्हारी) सारी मथुरा को मोल ॥ १
ए छैं बड़े बड़े हीरा मोती जड़ियाजी, बिच (बिच) लाल लाख किरोड़ ॥ २
मीराँके प्रभु गिरधरनागरजी, ईंडो लाये नागर नंद किशोर ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२८९ : राग–सोरठ, देश : ताल–कहरवा

(विनय)

पिया अब घर आज्यो मोरे, तुम मोरे हूँ तोरे । (टेर)
मैं जन तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ॥ १
अवध वदीती अजहुँ न आये, दुतियनसूं नेह जोरे ॥ २
मीराँ कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दर्शन बिन दिन दोरे ॥ ३

◈ ◈ ◈

२८७–१ (उ.ट.) ।
२८८–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से) ।
२८९–१ (उ.); (बं. पु. पृ. १२) ।

पद–२९० : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

पिया इतनी विनती सुन सुन मोरी, कोई कहियो रे जाय। (टेर)
औरनसूं रस वतियां करत हो, हमसे रहे चित चोरी ॥ १
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ॥ २
आवन कह गये अजहुँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ॥ ३
मीरांके प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करै कर जोरी ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२९१ : राग–शंकरा : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पियाकी खुमार मैं तो बावरी भई ये माय। (टेर)
[1]अमल न खायो आयो मोकूं, यो इचरज देखो भार ॥ १
या तन की मैं वीणा बजाऊँ, रग रग बांधूं तार ॥ २
समझ बूझ मिल जाय दुलारो, जद रीझै रिझवार ॥ ३

◈ ◈ ◈

२९०–१ (उ.); (वं. पु. पृ. ६)।
२९१–१ (मीरा. मं. मी. प., ३४) १ पा.—'अपार'।

पद-२९२ : राग-भैरव : ताल-कहरवा

(विरद)

पिया तेरे नाम लुभाणी हो ।
नाम लेत तिरता सुण्यां, जैसे पाहण पाणी हो । (टेर)
सुकरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी हो ।
गणिका कीर पढ़ावतां, वैकुण्ठ बसाणी हो ॥ १
अरध नाम कुंजर लियो, बाकी अवध घटाणी हो ।
गरुड छांडि हरि धाइया, पसु जूण मिटाणी हो ॥ २
अजामेल से ऊधरे, जम त्रास नसाणी हो ।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ॥ ३
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो ।
मीरां दासी रावली, अपणी कर जाणी हो ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद-२९३ : राग-भैरवी : ताल-धीमा तिताला

(विरह विनय)

पिया तैं कहां गयौ नेहरा लगाय । (टेर)
छांडि गयौ अब कहां विसासी, प्रेमकी बाती बराय ॥ १
विरह समुद्र[1] में छांडि गयौ पिव, नेहकी नाव चलाय ॥ २
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, तुम विनु रह्यो न जाय ॥ ३

◈ ◈ ◈

२९२-१ (उ.); पा०-'सोही वेद बखाणी हो' ।
२९३-१ (उ.); १. 'समद'-लय के लिये उपयुक्त ।

पद–२९४ : राग–मालकोस : ताल–तिताला

(विरह)

पिया बिन रह्यो न जाइ। (टेर)
तन मन मेरो पिया पर वारूं, बार बार बलि जाइ ॥ १
निस दिन जोऊँ बाट पियाकी, कब र(रे) मिलोगे आइ ॥ २
मीराँके प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–२९५ : राग–आसावरी : ताल–धीमा तिताला

(चरित-विरह)

पिया बिन सूनूं सारो[1] देस, जतन करो हे आली हे। (टेर)
है कोई ऐसा पिया मिलावै, तन मन धन करूं भेट ॥ १
तेरे कारण बन बन डोलूं, कर जोगिनको भेष ॥ २
अवधि विदीती अजहुं न आये, पीरे पड़ गये केस ॥ ३
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, ध्यावै शेष महेस[2] ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–२९६ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विनय)

पिया म्हारै नैनां आगै रहज्यो जी। (टेर)
नैनां आगै रहजो म्हाने, भूल मत जाज्यो जी ॥ १
भोसागरमें बही जात हूं, वेग म्हारी सुध लीज्यो जी ॥ २
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ॥ ३

◈ ◈ ◈

२९४–२ (म.)।
२९५–१. पा०–'म्हारो देस'।
२. पा०–'मीराँ के प्रभु हरि अविनासी तजि दियो नगर नरेस।
२९६–२ (म.); (वं. पु. पृ. २७)

पद–२६७ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(बारहमासिया विरह)

पिया मोहि दरसण दीजै हो ।
बेर बेर मैं टेरत टेरत हूं, अहे कृपा (किरपा) कीजे हो । (टेर)
जेठ महीने जल बिना, पंछी दुख होई हो ।
मोर असाढ़ा कुरलहे, घन चात्रक सोई हो ।। १
सावणमें झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो ।
भादरवै नदियाँ वहै, दूरी जिन मेलै हो ।। २
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजां सोई हो ।।
देव कातीमें पूजहे, मेरे तुम होई हो ।। ३
मंगसर ठंढ बहोत पड़ै, मोहि बेगि सम्हालो हो ।
पोस महीं पाला घणां, अबही तुम न्हालो हो ।। ४
माह महीं बसंत पंचमी, फागां सब गावै हो ।
फागुण फागां खेल हैं, वणराइ जरावै हो ।। ५
चैत चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो ।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो ।। ६
काग उडावत दिन गया, बूझूं पिंडत जोसी हो ।
मीराँ बिरहणि ब्याकुली, दरसण कब होसी हो ।। ७

◈ ◈ ◈

२६७–२ (म.)

पद–२९८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

पिये मोहि आरत तेरी हो।
आरत तेरे नामकी, मोहि साँझ सवेरी हो। (टेर)
या तनके दिवला करूँ, मनसा करूँ बाती हो।
तेल जलाऊँ प्रेमका, बालूँ दिनराती हो॥ १
पटिया पारूँ ज्ञानकी, मन माँग सँवारूँ हो।
पिया[1] तेरे कारणै धन जोबन वाँरू हो॥ २
सेजड़िया बहुरंगिया, बहु फूल बिछाया हो।
रैंन[2] गई तारा गिनत, प्रभु अजहुँ न आया हो॥ ३
आया सावन भादवा, बरसा ऋतु आई हो।
मेहा घटा[3] घन घेरि, नैनन झर लाई हो॥ ४
मात पिता तुमको दियो, तुमही भल गैलो हो।
तुम तजि और भरतारको, मन मैं नहिं आनों हो॥ ५
तुमहो[4] पूरे साँइयाँ, पूरा सुख दीजे हो।
मीराँ व्याकुल बिरहनी, अपनी कर लीजे हो॥ ६



२९८–१(उ.) : १. पा०–'तो पर मेरा सांइयां'। २. पा०–'रैंन गई मग जोवतां'। ३. पा०–'बीज झलाझल हो रही'। ४. पा०–'तुम पुरातम पूरवा'।

पद–२९९ : राग–मांड वा मारू : ताल–दादरा

(चेतावनी)

पिरथिवी मायाजालमैं पड़ी ।
तूं तो समझि सुहागण सुरता नारि पलक मेरी रामसूं लगी। (टेर)
लगती लहँगो पहरि सुहागण, बीतौ जाइ विव्हार ।
धन जोवन दिन च्यारका, जात न लागै बार ॥ १
रामनामको चुड़लो पहरौं, सुमरण काजल सार ।
माला ल्यौ हरिनाँवकी, उतरि चलौ पैली पार ॥ २
ऐसा बरकौं काँई बराँजी, जनमत ही मर जाय ।
वर वरस्यां म्हारो साँवरोजी, अमर चूड़ा होइ जाइ ॥ ३
जनमैं मरैं करैं घर केता, बिष राता नरनारि ।
मीराँ राती रामसूँ जी, साँवरियो भरतार ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३०० : राग–क़ाफी : ताल–दीपचन्दी

(रहस्यवाद)

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे। (टेर)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे ॥ १
विन सुर राग छतीसूं गावे, रोम रोम रंग सार रे ॥ २
शील सन्तोषकी केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे ॥ ३
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे ॥ ४
घटके सब पट खोल दिये हैं, लोकलाज सब डार रे ॥ ४
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ॥ ६
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहार रे ॥ ७

◈ ◈ ◈

२९९–३ (क.); (राम स. गु. पृ. २५७) ।
३००–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ३३) ।

पद—३०१ राग—खमाच : ताल—कहरवा

(विनय)

ब्रजमें आवोलाजी ब्रजबासी, रामाँ थां बिन भौमि उदासी। (टेर)
बृन्दाबन थारी सूखण लागी, कुञ्ज कुञ्ज कुमलासी।
घन नख मुख मूर नही है, सखियाँ धर्म निभासी॥ १
जन्मभौमि मथुराकी छोड़ी, अब हुये द्वारिका बासी।
सीतल जल जमुना को छोड्यो, अब खारो कैयाँ भासी॥ २
बलदाऊके भैया किरपा कीज्यो, जन्म जन्मकी (मैं) दासी।
किरपा कीज्यो सुध मोरी लोज्यो, नाहि करो लोग में हाँसी॥ ३
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडल की छबि खासी।
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, काटो जन्म की फाँसी॥ ४

◈ ◈ ◈

पद—३०२ : राग—प्रभाती : ताल—कहरवा

(प्रेम प्रवाह)

बंसी बजावै नित जमुना तट आवै। (टेर)
हों जमुना जल भरन जात ही, चित दे चित्त चुरावै॥
भोर गई वहैं बोरैं सजनी, बावरीसी जाँनो मोहि बोरावै॥ २
मीराँके प्रभु गिरधरनागर, ठगपैं कौन ठगावै॥ ३

◈ ◈ ◈

३०१—२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से)
३०२—१ (उ.); ('रासपदसंग्रह' से)

पद–३०३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

बंसी वारा आयो म्हारे देस, थारी साँवली सूरत वाली बेस। (टेर)
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा, कर गया कोल अनेक ॥ १
गिणताँ गिणताँ घिस गई उँगली, घिस गई उँगली की रेख ॥ २
मैं बैरागण आद की, थारे म्हारे कद को सँदेस ॥ ३
बिन पाणी बिन सावण साँवरा, हुई गई धुई सफेद ॥ ५
जोगण हुई जंगल सब हेरूँ, तेरा नाम न पाया भेद ॥ ४
तेरी सुरत कै कारणै, धर लिया भगवाँ भेस ॥ ६
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस ॥ ७
मीराँ के प्रभु गिरधर मिलि गये, दूना बढ़ा सनेस ॥ ८

◈ ◈ ◈

पद–३०४ : राग–झंझोटी: ताल–अद्धा

(विनय)

बंसी वारा हो कान्हा मोरी रे गगरी उतार।
गगरी उतार मोरो तिलक संभार। (टेर)
जमुना के नीरे तीरे बरसैलो मेह, छोटे से कन्हैयाजी से लाग्यो म्हारो नेह ॥ १
बृन्दाबन में गउएं चरावै, तोड़ लियो मोरे गरवा को हार ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मैं तो तेरे गई बलिहार ॥ ३

◈ ◈ ◈

३०३–१ (उ.)।
३०४–२ (म.); (या०—सं० रा० क० से)।

पद–३०५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(प्रेम)

बंसीवारे की चितवन सालति है। (टेर)
मोरमुकुट मकराकृत कुंडल, ता पर कलंगी हालति है ॥ १
मैं तो छकी तुमरी छबि ऊपर, जो न छकै तेहि नाल[लान]ति है ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल चित लागति है ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३०६ : राग–कान्हडो : ताल–तिताला

(विरह)

बड़ी बड़ो अँखियन वारो साँवरो, मो तन हेरो हँसके री। (टेर)
मैं जमुनाजल भरन जात ही, सिर पैं गागर लसके री[1]।
सुंदर स्याम सलोनी मूरत, मो हियरे गई बसके री ॥ १
जंतर मंतर लिख के लावै, ओषद लावै घसके री।
जो कोई लावै स्याम वैद को, तो उठ बोलूं हँस के री ॥ २
भृकुटी कमान बान वाके लोचन, मारत है तक कस के री।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कैसे रहूं घर बस के री ॥ ३

◈ ◈ ◈

३०५–२ (म.)।
३०६–१ (उ.); (स. मा. मी. ली. २०)।
१. लसके–लचके।

पद–३०७ : राग–कामोद : ताल–कहरवा

(चरित)

बड़े घर ताली लागी रे, म्हारा मन री उणारथ भागी रे (टेर)
छीलरिये म्हारो चित नहीं रे, डाबरिये कुण जाव ।
गंगा जमुनाँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरियाव ।। १
हाल्याँ मोल्याँ सूँ काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार ।
कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब करूं दरबार ।। २
काच कथीर सूं काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपा सूँ काम नहीं रे, म्हारे हीरां रो बोपार ।। ३
भाग हमारो जागियो रे, भयो समद सूं सीर ।
अमृत प्याला छाँडि कै, कुण पीवे कड़वो नीर ।। ४
पीपा कूँ प्रभु परच्यौ दीन्हौ, दिया रे खजीना भरपूर ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिल्या छै हजूर ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३०८ : राग–श्यामकल्याण : ताल–कहरवा

(उत्कंठा)

बता दे सखि साँवरिया को डेरो किती दूर । (टेर)
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे यमुना-पूर ।। १
मथुराजी की मस्त गुवालिन, मुख पर बरसे नूर ।। २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, साँवरे से मिलना जरूर ।। ३

◈ ◈ ◈

३०७–२ (म.) ।
३०८–३ (क.); (प्रकीर्णक पद) ।

पद–३०९ : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(प्रेम)

बदला रे तू जल भरि ले आयो। (टेर)
छोटी-छोटी बूँदन बरसन लागी, कोयल सवद सुनायो ॥ १
गाजै बाजै पवन मधुरिया, अंवर वदरा छायो ॥ २
सेज सँवारी पिय घर आये, हिल मिल मंगल गायो ॥ ३
मीर के प्रभु हरि अविनासी, भाग भलो जिन पायो ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३१० : राग–कनड़ी, तिलक, कामोद : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

बन्दे बन्दगी मत भूल। (टेर)
चार दिनां की कर ले खूबी, ज्यूं दाड़िम दा फूल ॥ १
आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, रहना वे हजूर ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३११ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(प्रेम)

बन जाऊँ चरण की दासी रे, दासी मैं भई उदासी रे। (टेर)
और देव कोई न जाणूं, हरि बिन गई उदासी ॥ १
न न्हाऊँ गंगा न न्हाऊँ जमना, न न्हाऊँ प्रयाग कासी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल की प्यासी ॥ ३

◈ ◈ ◈

३०९–१ (उ.)।
३१०–२ (म.)।
३११–२ (म.)।

पद–३१२ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(रूप-वर्णन)

बनाजी थाँरी अँखियाँ कामणगारी, हो बनाजी । (टेर)
मोही छे जी थारी लटक चाल पर बरसाने की नारी ॥ १
जंतर मंतर जादू टोना, कर कर बहुत ही हारी ॥ २
मीराँ ने बकसियो गिरधारी साँवरी सूरत प्यारी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३१३ : राग–बिहाग : ताल–तिताला

(दृढ़ता)

बरजी नांही रहूंगी, म्हारो स्यामसुंदर भरतार । (टेर)
इक वर बरजी दोय वर बरजी, बरजी सो सो बार ॥ १
सासू बरजी नँणदी बरजो, राणोंजी दावादार ॥ २
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, पूरणब्रह्म अपार ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३१४ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(दृढ़ता)

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ । (टेर)
सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ॥ १
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ, जगसूँ (मैं) दूरी रहूँ ॥ २
तन धन मेरो सब ही जावो, भल मेरो सीस लहूँ ॥ ३
मन मेरो लागो सुमिरन सेती, सबको (मैं) बोल सहूँ ॥ ४
मीराँ कहे प्रभु गिरिधरनागर, सतगुरु सरन रहूँ ॥ ५

◈ ◈ ◈

३१२–१ (उ.) । (या०—सं० रा० के० से)
३१३–२ (म.); (राम स० गु० पृ १४३)
३१४–१ (उ.)।

पद–३१५ : राग–व्रहार : ताल–तिताला

(प्रेमानन्द)

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की । (टेर)
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि ग्रावन की ॥ १
उमड़ घुमड़ चहुँ दिश से ग्राया, दामिन दम कै भर लावन को ॥ २
नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा वरसे, शीतल पवन सोहावन की ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, ग्रानंद मंगल गावन की ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३१६ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा

(विनय रूप-वर्णन)

वसो मेरे नैनन में नँदलाल । (टेर)
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल ॥ १
ग्रधर सुधारस मुरली राजित, उर वैजन्ती माल ॥ २
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शव्द रसाल ॥ ३
मीराँ के प्रभु संतन सुखदाई, भक्तवछल गोपाल ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३१७ राग– : कल्याण : ताल–कहरवा

(प्रेमलीला)

बाँके साँवरिया ने घेरी मोहि ग्रान के । (टेर)
हों जो गई जमुनाजल भरने, मारग रोक्यो मेरो ग्रान के ॥ १
बृन्दाबन की कुंजगली में, मुरली बजावै ग्रान तान के ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, प्रीति पुरातन जान के ॥ ३

◈ ◈ ◈

३१५–१ (उ.); (वं. पु. पृ. ३१)
३१६–१ (उ.)
३१७–१ (उ.); (वृ. रा. र. पृ. ४६५)

पद–३१८ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

वांहड़लो जो गहो रामजी म्हारी वांहड़ली जो गहो। (टेर)
भवसागर की तीक्षण धारा, थेई हो न नीमो (निभो) ॥ १
मेहू तो[2] छां ओगण का भरिया, थेई हो[1] न सहो ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, विड़द की लाज गहो ॥ ३

पद–३१९

(प्रेमलोला)

वांसुरी सुनूंगी मैं तो वांसरी सुनूंगी। वा वंसीवाले को जाने न दूंगी। (टेर)
वह वंसी वाला मुझे एक कहेगा, एक की लाख सुनाऊँगी ॥ १
वृन्दावन की कुंजगलिन में, भ्रमर व्हे फूल चुनूंगी ॥ २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, वीच में जाय अड़ाऊँगी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल बलि जाऊँगी ॥ ४

३१८–१ (उ.); (सूर्यनारायणजी दाधीचसे प्राप्त)
१. पा०–'लेर'।
२. पा०–'म्हांमें ओगण घणा छै साँवरिया थे ही सहो तो सहो'।
३१९–२ (म.); (का०।उ०२।३४९)

पद–३२० : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(वैराग्य)

बाई[1] म्हारै नैना[2] रावल भेष । (टेर)
वै स्यामी[3] वहो जटाधारी, अबही अंजन रेख ॥ १
स्वेत वरण[4] रँग कंथा पहरया[5] भिक्षा माँगा[6] देस ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, करहूँ[7] अलख अलेख ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(प्रेम लीला)

बाजन दे गिरधरलाल मुरली बाजन दे । (टेर)
सप्त सुरन मुरली बजी, कहुँ कालिन्दी के तीर ।
श्रवन[1] सुनत सुध नां रही, मेरी कित गागर कित चीर ॥ १
बैठ कदम के चौंतरा, सब ग्वालन लिये बुलाय ।
गैल[2] रोक ठाडो भयो, मेरो गोरस लियो छिनाय ॥ २
पासा डारे प्रेम के, मेरो सब धन ले गयो लूट ।
मीराँ के प्रभु साँवरे, तुम अब कित जावोगे[3] छूट ॥ ३

◈ ◈ ◈

३२०–२ (म.)

१. पा०–'बाई थारा नैन रावल भेष'। २. पा०–'नैण'। ३. पा०–'बरनी श्याम'। 'बिना श्याम सखी मैं जटाधारी'। ४. पा०–'विराजत'। ५. पा०–'अरुण'। ६. पा०–'मांगत'। 'माँगूं'। ७. पा० 'करत'। 'करूँगी'।

३२१–२ (म.); (स. मा. मी. ली. २६)

१. पा०–'सोर'।

२. पा०–'खेलत रोकत ग्वालिनी मुरली शब्द सुनाई'।

३. पा०–'जैहो'।

पद-३२२ : राग- : ताल-

(उत्कंठा)

बाजे छे रे बाजे छे, पैला बन मांही मीठी बेणु बाजे छे ।
हाँ रे दुर्जन को डर लागे छे । (टेर)
सासू सूती म्हारी सुख निद्रा में, जाऊँ तो नणदल जागे छे ॥ १
ससुरोजी म्हारो परम सोहागो, देवरियो दिल में दाझे छे ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण भय भागे छे ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद-३२३ : राग-कालिंगड़ा : ताल-कहरवा

(प्रेमोपालंभ)

बाटड़ली निहारूँ जी मैं[1] हारी ठाडी ठाडी । (टेर)
आप न आवै पतियाँ न भेजै, छतियाँ करी अति[2] गाढ़ी ॥ १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना बह रही[3] आडी ॥ २
आप जाय मथुरा में वैठे, पीतड़ली[4] बोह बाढ़ी ॥ ३
हमको लिख लिख जोग पठावै[5], आप[6] दूल्हे कुबजा लाडी ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कहा[7] कहूं जमना आडी ॥ ५

◈ ◈ ◈

३२२-(का.।उ.। २।३५०)
३२३-१ (उ.); (दीना. मं. मी. प. २९)
१. पा०-'हूँ हर घड़ी' । २. पा०-'हरि' । ३. पा०-'बहैछै' ।
४. पा०-'प्रीत हिये अति बाढी' । ५. पा०-'पठावत' । ६. पा०-'कुबजा कीनी लाडी' । ७. पा०-'प्रीत में असी अडि कांई मांडी' ।

पद–३२४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

बात क्या कहूं नागरनट की, नागरनट की नागर नट की । (टेर)
मैं दधि बेचन जात वृन्दाबन, छीन लिई मोरी दधि की मटकी ॥ १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, अति सोभा उस कौस्तुभ मनि की ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, प्रीत लगी उस मुरलीधर की ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३२५ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा

(चेतावनी विरह)

बादल देख डरी हो, स्याम मैं बादल देख डरी । (टेर)
काली पीली घटा उमंगी, बरस्यो एक घरी ॥ १
जित जाऊं तित पानि हि पानी, हुई सब भोम हरी ॥ २
जाका पिव परदेस वसत है, भीजै बार खरी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, कीज्यो प्रीत खरी ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३२६ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विरद)

वाना-रो बिडद दुहेलो रे । (टेर)
वानो पहर कहा गरबायो, मुक्ति ने हामी खेलो (रे) ॥ १
वाना-रो प्राण प्रहलाद उबार्यो, वैर पिता से झेल्यो (रे) ॥ २
आगा धर पीछा मत ताको, दफतर नांहि चढैलो (रे) ॥ ३
मीराँजी ने भक्ति कमाई, जहर पियालो झेल्यो (रे) ॥ ४

◈ ◈ ◈

३२४–२ (म.) ।
३२५–२ (म.) ।
३२६–३ (क.); (फु. प.) ।

पद–३२७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(निर्गुण प्रेम)

बाल्हा[1] मैं वैरागिण हूँगी हो ।
जीं जीं भेस म्हारो साहिब रीझे, सोई सोई भेस धरूँगी हो । (टेर)
सील संतोष धरूं घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो ।
जाको नाम निरंजण कहिये, ताको ध्यान धरूँगी हो ।। १
गुरू ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी हो ।
प्रेम प्रीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी हो ।। २
या तन की मैं करूँ कींगरो[2], रसना नाम रटूँगी हो ।
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, साधाँ संग रहूँगी हो ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३२८ : राग–माड : ताल–कहरवा

(प्रेम)

बावरो कहै रे साधो बावरी कहै (मीराँ बाई ने दिवानी दुनियाँ बावरी कहै) । (टेर)
बन के तमोलन कतरूँ पान, पान के खवैया मेरे श्याम सुजान ।। १
बन मालिन गूँथूँ बनमाल, उर पहरावै मीराँ गिरधरलाल ।। २

दोहा

मीराँ हर की लाडली, नित प्रति रहे हजूर ।
साधाँ रे सनमुख बसै, दगाबाज से दूर ।। ३

◈ ◈ ◈

३२७–१. पा०—'लाला' ।
३२८–३ (क.) ।

पद–३२९ : राग–भैरवी वा काफी : ताल–कहरवा

(प्रेमानन्द)

बिक्या जी हरि प्यारीजो रे हाथ बिक्या । (टेर)
कृपा करो जी म्हे सोही सिरधाराँ, सोभा देखि छक्या ।। १
जा दिन ते मेरी लगन लगी है, और न द्वार थक्या ।। २
अनरागी मनमस्त है राणाजी, गरुड के अगड़ जुप्या ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरणाँ चित्त टक्या ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–३३० : राग–तिलक कामोद : ताल–रूपक

(विरहाधिक्य)

बिरहनी बावरी सो भई । (टेर)
ऊँची चढ़ चढ़ अपने भवन में, टेरत हाय दई ।। १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूंछत, उघरे गात सही ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिछुरत कछु नां कही ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३३१ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(पुकार)

वेग पधारो साँवरा कठिन बनी है,
आप बिना म्हारो कुण धनी है ? (टेर)
दुखिया कूं देख देर मत कीजो, देर की बिरियाँ और घनी है ।। १
दिन नहीं चैन, रैंन नहिं निद्रा, दुशमन के हिये हरष घनी है ।। २
गहरी गहरी नदिया, नाव पुरानी, पार करो घनश्याम धनी है ।। ३
जमड़ाँ की फौजाँ प्रभु आन पड़ी हैं, बेग हटावो मोटा आप धनी हैं ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बिच आन खड़ी है ।। ५

◈ ◈ ◈

३२९–१ (उ. ट.) (निज संग्रह से)
३३०–१ (उ.); (भक्त प्रहलादजी का पाना २)
३३१–२ (म.)

पद–३३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद को मारो नाँहि रे माई, बैद को नहिं सारो। (टेर)
कहत ललिता बैद बुलाऊँ, आवै नंद को प्यारो।
वो आयाँ दुख नाहिं रहेगो, मोहिं पतियारो ॥ १
बैद आय कर हात जो पकड़्यौ, रोग है भारो।
परम पुरुष की लहर व्यापी, डस गयो कारो ॥ २
मोर-चंदो हात ले हरि, देत है झारो।
दासी मीराँ लाल गिरधर, बिष कियो न्यारो ॥ ३



पद–३३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद बण आयजो स्वामी म्हारा, व्याकुल भयो है सरीर। (टेर)
मोर मुकुट कट काछनी रे, बाला केसर खोर चढ़ायजो।
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे, भुज भर अंग लिपटायजो ॥ १
ओषद है हरिनाम की रे, म्हारे जोही अंग लगायजो।
ज्याँ श्रीचरणाँ से म्हारो दुख जासी, चरण खोळ जल पायजो ॥ २
दरद दिवानी मीरां बैद साँवलियो, सूती नै आण जगायजो।
मीराँ तो दासी थारी जनम जनम की, चरणकमल चित लायजो ॥ ३



३३२–२ (म.)
३३३–२ (म.)

पद–३३४ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

बोल मां बोल मां बोल मां रे,
राधा कृष्ण विना बीजुं बोल मां (रे) । (टेर)
साकर शेलड़ीनो[1] स्वाद तजीने, कड़वो लीवडो घोल मां रे ।। १
चांदा सूरजनुं तेज तजोने, आंगिया संगा थे प्रीत जोड़ मां रे ।। २
हीरा माणेक मूंगो तजीने, कथीर संगाते मलि तोल मां रे ।। ३
मीराँ कहे प्रभु गिरिधरनागर, शरीर आप्युं सम लोल मां रे ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–३३५ : राग–गौड़ सारंग : ताल–कहरवा या धीमा

(विनय)

बोल सूवा राम राम बोलै तो बलि जाऊँ रे । (टेर)
सार सोना की सल्या मँगाऊं, सूवा पींजरो बणाऊँ रे ।
पींचरा री डोरी सूवा, हाथ सूं हलाऊँ रे ।। १
कंचन कोटि महल सूवा, माळिया बणाऊँ रे
माळिया में आय सूवा, मोतियाँ बँधाऊँ रे ।। २
चंपला री डार सूवा, पींजरो बँधाऊँ रे ।
घृत घेवर सोलमा, लापसी परसाऊँ रे ।। ३
आमला रो रस सूवा, घोलि घोलि पाऊँ रे ।
बैठक के तो कारणे सूवा, चानणी बिछाऊँ रे ।। ४
प्रेम के प्रताप सूवा (पाँव में पहरान सूवा) झाँझण बणाऊँ रे ।
केसर भरियो वाटको तेरे अंग सैं लगाऊँ रे ।। ५
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, सरणे आयाँ सुख पाऊँ रे ।। ६

◈ ◈ ◈

३३४–१ पा०—'शेरडीनों'
२ (म.)
३३५–२ (म.) (क. व. ५)

पद–३३६ : राग–मल्हार : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

बोलै झीणाँ मोर, राधे तारा डूंगरिया पर। (टेर)
ए मोर ही बोलै पपैया ही बोलै, कोयल करै घन शोर ॥ १
आभा माँ भली बिजली चमकै, बादल हुवा घनघोर ॥ २
झरमर झरमर मेहूलो बरसै, भीजै मारा सालूड़ा नी कोर ॥ ३
बाई मीराँ के प्रभु गिरधरना गुण, प्रभु(जु)मारा चितड़ा नो चोर ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३३७ : राग एमन : ताल–तिताला

(विरह)

भई हों बावरी सुनके बांसुरी। (टेर)
श्रवण सुनत मोरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तामें मन की गांसु री ॥ १
नेम धरम कोन कीनो मुरलिया, कौन तिहारे पासु री ॥ २
मीराँ के प्रभु वश कर लीने, सप्त सुरनताननि फांसु री ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३३८ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(लीला)

भज केशव गोविंद गोपाला, हरि राधे पहिने बनमाला। (टेर)
मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल भूले नंदलाला ॥ १
गोपी के कन्हैया बलभद्रजी के भैया, वत्सल प्रभु रछपाला ॥ २
पूतना को जननी गति अधम-उधार नंदलाला ॥ ३
मोरमुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ॥ ४
यमुना के तीर धेनु चरावें, मुरली बजावें नंदलाला ॥ ५
बृन्दाबन हरि रास रच्यो है, मीराँ जी को करो प्रतिपाला ॥ ६

◈ ◈ ◈

३३६–१ (उ.); (या.—का. दो. से)
३३७–२ (म.)
३३८–३ (क.) (भ. मी. बा. हि. पु. मथुरा)

पद–३३९ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चितावनी)

भज मन चरन कँवल अविनासी। (टेर)
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी॥ १
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्यां उठि जासी॥ २
कहा भयो है भगवा पहरयां, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी॥ ३
अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, काटो जम की फांसी॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–३४० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेमानन्द)

भजि मन श्री राधे गोपाल। (टेर)
मोर मुकुट पीतांवर सोहै, गल बैजन्ती माल॥ १
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, बिन देखे वेहाल॥ २
मीराँ (के) प्रभु गिरधरनागर, छवि देखि भई हूँ निहाल॥ ३

◈ ◈ ◈

३३९–१ (उ.)
३४०–(या०—नागरीदासजी की ह. लि. पदसार सं. से)

पद–३४१ : राग–मांड . ताल–कहरवा

(प्रेम)

भर मारी रे बाना मेरे सतगुरु बिरह लगाय के। (टर)
पाँवन पंगा कानन बहिरा, सूझत नाँही नैना ।। १
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम न कोई जाना ।। २
सतगुरु ओषध ऐसी दीन्ही, रूम रूम भई चैना ।। ३
सतगुरु जस्या बैद न कोई, पूछो वेद पुराना ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, अमरलोक में रहना ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विनय)

भरमायो म्हारो मारूडो, भरम रह्यो। (टेर)
अरज करूँ मथुरा मत जावो, मानो जी म्हारो कह्यो ।। १
हावभाव से बस कर लीना, बाँध्यौ छै जी नेहड़ो नयो ।।
जुलम किया सोकँण कुबज्या ने, ब्रजनँद मोह लियो ।। ३
चतुर नार के नैनभाल से, बाँध्यौ छै जी राज रो हियो ।। ४
सोलह सहस गोपिका तज कर, कुबज्या री लार भयो ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़न क्यों कियो ।। ६

◈ ◈ ◈

३४१–२ (म.)
३४२–१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)

पद–३४३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विनय)

भवनपति तुम घरि आज्यौ हो। (टेर)
विथा लगी तन माहिने, म्हारी तपत बुझाज्यो हो ॥ १
रोवत रोवत डोलताँ, सब रैण बिहावै हो ॥ २
भूख गई निदरा गई, पापी जीव न जावै हो ॥ ३
दुखिया कूं सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो ॥ ४
मीराँ व्याकुल बिरहणी, अब बिलम न कीजै हो ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–३४४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(संभाषण)

भाभी बोलो बचन विचारी। (टेर)
साधाँ की संगत दुख भारी, मानो वात हमारी।
छापा तिलक गल माल उतारो, पहिरो हार हजारी ॥ १
रतन जटित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी।
मीराँजी थे चलो महल में, थानै सोगन म्हारी ॥ २
(मीराँ वचन) भाव भगत भूषण सजे, शील सन्तोष सिंगार।
ओढ़ी चूनड़ प्रेम की, गिरधरजी भरतार ॥ ३
ऊदाँ बाई मन समझ, जावो अपणे धाम।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम ॥ ४

◈ ◈ ◈

३४३–१ (उ.)
३४४–३ (क.)

पद–३४५ : राग–सोरठ : ताल–दादरा

(प्रकीर्णक)

(ऊदाँ) भाभी मीराँ कुल ने लगाई गाल,
ईडरगढ़ का आया जी ओलंबा। (टेर)
(मीराँ) बाई ऊदाँ थाँरै म्हांरे नातो नाहिं,
बासो बस्यां का आया जी ओलंबा ॥ १
(ऊदाँ) भाभी मीराँ साधां का संग निवार,
सारो सहर थारी निंदा करे।
(मीराँ) बाई ऊदाँ करे तो पड्या झक मारो,
मन लाग्यो रमता रामसूँ ॥ २
(ऊदाँ) भाभी मीराँ पहरो नी मोत्यां को हार,
गहणो पहरो रतन जडाव को।
(मीराँ) बाई ऊदाँ छोड्यो मैं मोत्यां को हार,
गहणो तो पहर्यो सील संतोष को ॥ ३
(ऊदाँ) भाभी मीराँ ओराँ के आवे जी आछी रूडी जान,
थारे आवें छै हरिजन पावणा।
(मीराँ) बाई ऊदाँ चढ़ चोबारां झाँक,
साधाँ की मँडली लागे सुहावणी ॥ ४
(ऊदाँ) भाभी मीराँ लाजे लाजे गढ चीतौड़,
राणोजी लाजे गढ़ रा राजवी।
(मीराँ) बाई ऊदाँ तार्यो तार्यो गढ़ चीतौड़,
राणाजी तार्या गढ़ रा राजवी ॥ ५
(ऊदाँ) भाभी मीराँ लाजे लाजे थारा माय न बाप,
पीहर लाजे जी थांरो मेड़तो।
(मीराँ) बाई ऊदाँ तार्या मैं तो माय न बाप,
पीहर तार्यो जी मेड़तो ॥ ६
(ऊदाँ) भाभी मीराँ राणाजी कियो छै थां पर कोप,
रतन कचोलो विष घोलियो।

(मीराँ) वाई ऊदाँ घोल्यो तो घोलणदो,
कर चरणामृत वाही मैं पीवस्यां ।। ७
(ऊदाँ) भाभी मीराँ देखतड़ां ही मर जाय,
यो विष कहिये बासक नाग को ।
(मीराँ) बाई ऊदाँ नहिं म्हांरे माय न बाप,
ग्रामर डाली धरती झेलिया ।। ८
(ऊदाँ) भाभी मीराँ राणाजी ऊभा छै थांरे द्वार,
पोथी मांगे छै थारा ज्ञान की ।
(मीराँ) बाई ऊदाँ पोथी म्हारी खाँडा की धार,
ज्ञान निभावण राणो है नहीं ।। ९
(ऊदाँ) भाभी मीराँ राणाजी रो बचन न लोप,
उन रूठ्यां भीड़ी कोउ नहीं ।
(मीराँ) बाई ऊदाँ रमापति ग्रावे म्हारी भीड़,
ग्ररज करूं छूं तासूं बीनती ।। १०



पद-३४६ : राग-सोरठ : ताल-कहरवा

(प्रकीर्णक)

भाभी मीराँ हो साधां को संग निवारि, थाहरी लोक निन्दा करै ।(टेर)
बाई ऊदाँ हो लोकाँ ने लोकाँ रो भाव, म्हे म्हांको राम लडावस्यां ।
भाभी मीराँ हो लाजै सैंस मेवाड़, लाजै कुंभाजी रो बैसणो ।। १
भाभी मीराँ हो लाजै नोकोटी मारवाड़, लाजै दूदाजी रो मेड़तो ।
भाभी मीराँ हो लाजै माई मोसाल, लाजै हो पीहर थारो सासरो ।। २
भाभी मीराँ हो थांपरि राणों कोपिया, बाटकडे विष घोलने ।
बाई ऊदाँ हो थे दीज्यो माहरै हाथ, म्हे ग्रमरत करि ग्रारोगस्यां ।। ३
वाई ऊदाँ हो साथरि सेज विछाइ, नैणां में विष संचर्यौ ।
वाई ऊदाँ हो मंदर हुग्रो छै उजास, सही साधाँ रो तारण ग्रावई ।। ४
वाई ऊदाँ हो दूधां पखालूं हरि रा पाँव, रतनजड़ित गोविन्दजी नै बैसणो।
बाई ऊदाँ हो मोत्यां थाल भराइ, करस्यां गोविन्दजी री ग्रारती ।। ५

राणाजी रा बाघेला थे ल्यो ने मीराँजी री खबरि, मुईक जोवै मीराँ मेड़ती
राणा सीसोद्या बाजै छै ताल मृदंग, बाजै छै गोविन्दजी रा घूघरा ।
राणा सीसोद्या झालर रो झणकार, नारद संग मीराँ निरत करै ।। ६
भाभी मीराँ हो खोलो ने धरमदुवार, ऊभो राणोजी बीनती करै ।
बाई ऊदाँ हो राणा नै रावले मेल्हि, कुल रो तो नातो म्हारै कोई नहीं ।। ७
भाभी मीराँ हो खोलो ने धरमदुवार, पंथीडो दिखावो तांहरा देवरो ।
बाई ऊदाँ हो पंथड़ो खांडा री धार, पंथड़ो निवाहन हारो कोई नहीं ।। ८
साँचा साहिबजी यह दुख सह्यो न जाइ, हीवड़ो तो सूभर भर्‌यो ।
साँचा साहिबजी बहुतैं बिड़द री लाज, कर जोरै मीराँ बीनती करै ।। ९



पद–३४७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

भावना को भूखो सांवरो म्हारो भावना को भूखो । (टेर)
शबरी के बोर सुदामा के तन्दुल, भर भर मूठ्या ठूंको ।। १
दुर्योधन का मेवा त्यागा, साग विदुर घर लूखो ।। २
करमा के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नहीं सूखो ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ४



पद–३४८ : राग–सोरठ मल्हार : ताल–रूपक

(विरद)

भीजे म्हारो दाँवनचीर, सावणियो लूम रह्यो रे । (टेर)
आप तो जाय विदेसां छाये, जिवड़ो धरत न धीर ।। १
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ, कब घर आवे म्हारो पीव ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, दरसन दो ने बलबीर ।। ३



३४६–(क. ब. २३)
३४७–(आनन्दस्वरूपजी से प्राप्त)
३४८–१ (उ.)

पद–३४९ : राग–पीलू वरवा : ताल–तिताला

भीजे मेरी नवरंग चूनरी, कान्हा लागूं तोरे पाय। (टेर)
गोरस ले कर चाली मथुरा, सिर पर घड़ा झोला खाय ॥ १
त्रिभंगी चालन गोवर्धन धर लियो, छिन भर मुरली बजाय ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित लागो मन भाय ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–३५० : राग–देश : ताल–कहरवा

(विरह)

भीड़ छाँडि बीर बैद मेरै पीर न्यारी है। (टेर)
करक कलेजै भारी वोषद न लागै कारी,
तुम घर जावो बैद मेरै पीर भारी है ॥ १
बिरहिन बिरह बाढ्यौ तातैं दुख भयो गाढ़ो,
बिरह के बान ले ले बिरहिनी मारी है ॥ २
चितही पिया की प्यारी नैंकहू न होवै न्यारी,
मीराँ तो आजारबंध बैद गिरधारी है ॥ ३

◈ ◈ ◈

३४९–(का. । उ. २ । ३३६)
३५०–१ (उ.)

पद-३५१ : राग-छाया, कामोद : ताल-कहरवा

(विरह विनय)

भूल मत जाना मेरी ओर निभाना जी काना । (टेर)
हमरी तुमरी लगन लगी है, नित प्रति आना जाना ।
मन भावै सो कहै जगत सब, नेक नहीं सरमांना ॥ १
घट-घट बासी अन्तरयामी, प्रेम का पन्थ पिछांना ।
जो तू मेरो नाम न जाने, मेरो नाम दिवांना ॥ २
सूरज सांमी पोर हमारी, चन्दन-चौक निसांना ।
हमरे अँगना में तुलसी का बिरवा, जाके हरे हरे पांना ॥ ३
जो कान्हा मेरो गाम न जाने, मेरो गाम बरसांना ।
कै तो ठाकुर दर्शन दीज्यो, नातर लीज्यो प्राना ॥ ४
जब से सुनी भनक मुरली की, तब से जिव घबरांना ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, लगे प्रीत के बांना ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद-३५२ : राग-भैरवी : ताल-तिताला

भूली मोतिन नो हार, सखी तट जमना किनारे । (टेर)
एक एक मोती मारूँ लाख टका नूँ, परोव्यूँ सुवरण केरे तार ॥ १
सासु अमारी अति बढकारी,[1] बाल्हा नणदल बिषड़ा नूँ झार ॥ २
परण्यो अमारो परम सोहागी, बाल्हा मारचा छै मोह ना बाँण ॥ ३
बाई मीराँ के प्रभु गिरधरनागुण, चरण कमल चित ध्यान ४ ॥

◈ ◈ ◈

३५१-१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)
३५२-१. 'लड़ोकड़ी' (या०—का. दो. से)

पद–३५३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

भोलानाथ दिगंबर ये दुख मेरा हरो रे। (टेर)
शीतल चंदन बेल पतरवा, मस्तक गंगा धरो रे। १
अर्धांगी गौरी पुत्र गजानन, चन्द्र की रेख धरो रे ।। २
शिव शंकर के तीन नेत्र हैं, अद्भुत रूप धरो रे ।। ३
आसन मार सिंहासन बैठे, शान्त समाधी धरो रे ।। ४
मीराँ के प्रभु का जस गावत, शिवजी के पैयाँ परो रे ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३५४ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी-धमार

(मान-लीला)

मत कर माधोजी की बात, ए जी तुम सुण ऊधो महाराज। (टेर)
ज्यो कोई बात करे माधो की, हिये (में) करोत बहजात ।। १
एक समै हरी रास रचायो, छै महिनां की रात ।। २
एक समै कालिन्दी तट पर, ग्वाल बाल सब लार ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरनकमल बलिहार ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–३५५ : राग–जँगला : ताल–कहरवा

(मान)

मत आवै रे नंद का म्हाँकी गली। (टेर)
म्हाँकी गली की बाँकी गुवालिन, मतना लोग हँसावै रे ।। १
सास बुरी मेरी नँणद हटीली, पाड़ोसण लख जावै रे ।। २
कोउ गलियों में लुकतो छिपतो, म्हांके कानो आवै रे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, झूँठो ही जी ललचावै रे ।। ४

◈ ◈ ◈

३५३–१ (उ.)।
३५४–(म.); (२५) (पुजा. नाथू. पु.से)।
३५५–(क.) (फु.प.)।

पद–३५६ : राग–काफी : ताल–दीपचंद

(फाग)

मत डारो पिचकारी मैं सगरी भीज गई सारी । (टेर)
जिन डारो सो सनमुख रहियो नहिं तो मैं देऊँगी गारी ।। १
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी, भीज गई तन सारी ।। २
लाल गुलाल उडावन लागे, मैं तो मन में विचारी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, चरनकमल बलिहारी ।। ४



पद–३५७ : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरद)

मतवारो बादल आयो रे, हरि को सँदेशो नहिं लायो रे । (टेर)
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनायो रे ।। १
कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहन अति डर पायो रे । २
गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लायो रे ।। ३
फूकै (काली) नाग बिरह को जारी, मीराँ मन हरि भायो रे ।। ४



पद–३५८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मदरो सो बोल मोरा, मोरा स्याम बिना जीव दोरा । (टेर)
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल कर रहो शारा ।। १
झरमर झरमर मेहा बरसे, गाजत है घनघोरा ।। २
मीराँ के प्रभु राधा बोले, स्याम मिल्या जीव सोरा ।। ३



३५६–इस पद का द्वितीय अन्तरा अनेक होलियों में मिलता है ।
३५७–(उ.) (वं. पु. पृ. १३)
३५८–(उ.) (भजनमंजरी पृ. १६१)

पद–३५९ : राग–बहार : ताल–तिताला

(रूपलीला)

मन अटकी मेरे दिल अटकी हो मुकुट की लटक मेरे मन अटकी । (टेर)
माथे मुकुट कोर चंदन की सेला है पीरे पट की ।। १
शंख चक्र गदा पद्म विराजे गुञ्जमाल मेरे हिये अटकी ।। २
अन्तर्धान भये गोपियन में सुध न रही जमुना तट की ।। ३
पातपात वृन्दावन ढूंढे कुञ्ज कुञ्ज राधे लटकी ।। ४
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै सुरत रही बंसी वट की ।। ५
फूलन के जामा कदम की छैयां गोपियन की मटुकी पटकी ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर जानत हो सब के घट की ।। ७

◈ ◈ ◈

पद–३६० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मनखा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुरि न आती । (टेर)
अबके मोसर ज्ञान बिचारो राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सूंज पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ।। १
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरी प्यासी जाती ।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोविंद का गुण गाती ।। २
साहब पाया आदि अनादी, ना तर भव में जाती ।
मीराँ कहे इक आस आपकी, औरां सूं सकुचाती ।। ३

◈ ◈ ◈

३५९–(उ०)
३६०–(उ०)

पद–३६१ : राग–भैरवी चाल ख्याल : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मन तू कह्यो हमारो मान, मैं देती हूँ तोहे ज्ञान । (टेर)
लाखां बातां तोहे समझाऊँ, तेरे नहीं कणे की कांण ।
हामल भर कर पाछो बगदै, तू है बेईमान ।। १
सैल दिखाऊँ माल खवाऊँ और चबाऊँ बीड़ा पान ।
मेरो कह्यो एक तू कर ले, हरि(जी) सूं कर पहचान ।। २
हरि मंदिर में हरि गुण गा लै, मीठी सुणा दे (तीखी) तान ।
स्वास चढ़ाय समाधि लगा ले, कर ले प्रभु को ध्यान ।। ३
भजन कियां सूं तेज बधैलो, जैसे (ऊग्यो) सूरज भान ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, अब तू थारी जान ।। ४



पद–३६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

मन माने जब तार प्रभुजी मन जब माने तार । (टेर)
नदियां गहरी नाव पुरानी कैसे उतरूँ पार ।। १
पोथी पुरातन सब कुछ देखो अंत न लागे पार ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर नाम निरंतर सार ।। ३



३६१–(निज संग्रह से)
३६२–(३)

पद–३६३ : राग–परज : ताल–रूपक

(प्रभु-महिमा)

मन मेरे परसि हरि के चरन । (टेर)
सुभग सीतल कमल कोमल, त्रिबिधि ज्वाला-हरन ।। १
अधम-तारन तरन-तारन, सब के पोषन भरन ।। २
सो चरन प्रहलाद परसे, दुःख दारिद हरन ।। ३
सोई चरन ध्रुव अटल कीने, इन्द्र पदवी धरन ।। ४
जिन चरन वलि बाँध पठये विप्र रूपज धरन ।। ५
जिन चरन ब्रह्मांड बेध्यो, नख सुर सुरीय झरन ।। ६
जिन चरन बन गऊ चारी, गोपलीला करन ।। ७
सोई चरन काली के मस्तक, कूबरी आभरन ।। ८
दासि मीराँ लाल गिरधर, राखो अपनी सरन ।। ९

◈ ◈ ◈

पद–३६४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मन मोह्यो रे बंसी वाला । (टेक)
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया, मारि गयो नैनों भाला ।। १
यक बन ढूंढि सकल बन ढूंढे, कहूँ नहीं पायो नँदलाला ।। २
मोर मुकुट पीतांवर राजै, कानन कुंडल छबि बिसाला ।। ३
मीराँ प्रभु गिरधरजू की प्यारी, आनि मिल्यो प्यारो गोपाला ।। ४

◈ ◈ ◈

३६३–(या०–ना. दा. जी के पदसार संग्रह ह० लि० से)
यह पाठ प्रचलित पाठ से वहुत भिन्न है इसलिए लिखा गया ।— सं० ।
यह पद ता० ११-१२-४७ को स्वामी आनन्दस्वरूपजी ने जयपुर में वताया । उन्होंने यह पद ब्राह्मणों की सरेरी ग्राम में एक वृद्ध पुरुष से मेवाड़ में सुना ।

३६४–(म.) (रासपद संग्रह से पृ० १३)

पद–३६५ : राग–दुरगा : ताल–तिताला

(विनय, रूप-वर्णन)

मनमोहन गिरिवरधारी । (टेर)
मोरमुकुट पीताँबरधारी, मुरली बजावैं कुंजबिहारी ॥ १
हाथ लियो गोवरधन पर्वत, लीला नाटकी वाके गत हैं न्यारी ॥ २
ग्वाल बाल सब देखन आये, संग लीनी राधा प्यारी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आज आई जी हमारी बारी ॥ ४



पद–३६६ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(लीला)

मनमोहन दिल का प्यारा । (टेर)
माता जसोदा पालना हलावे, हलावे हाथ में लेकर दोरा ॥ १
कब से आंगन में खड़ी है राधा, देखे किसन का चहरा ॥ २
मोर मुकट पीतांबर सोहे, गले मोतिन का गजरा ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ॥ ४



३६५–(का. । उ. १ । ३१२)
१ पा०–'अजी आई जी हमारी फेरी')
३६६–(क)

पद–३६७ : राग–जोनपुरी : ताल–रूपक

(विरद चेतावनी)

मन रे परस हरि के चरण। (टेक)
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जे चरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।। १
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी शरण।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो, नख शिखौ श्री भरण ।। २
जिन चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण।
जिन चरण काली हि नाथ्यो, गोप लीला करण ।। ३
जिन चरण धार्यो गोवर्धन, गरब मघवा हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–३६८ : राग–मारू : ताल–कहरवा

(विरह-वेदना)

मन हमारा बाँध्यो माई, कँवल नैन अपने गुन। (टेक)
तीखण तीर वेध शरीर दूरि गयो माई।
लाग्यो तव जान्यों नहीं, अब न सह्यो जाई री माई ।। १
तंत मंत औषद करउ, तऊ पीर न जाई।
है कोऊ उपकार करे ? कठिन दर्द री माई ।। २
निकटि हो तुम दूरि नहीं, बेगि मिलो आई।
मीराँ गिरधर स्वामी दयाल, तन की तपति बुझाई री माई।
(कँवल नैन आपने गुन बाँध्यो माई।) ।। ३

◈ ◈ ◈

३६८–(उ.) (ग्रन्थसाहिब गाईचन्दे की बीड़)

पद–३६९ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मनुआ बाबा रे सुमर ले सीताराम । (टेक)
बड़े बड़े भूपति सुलतान, उनके डेरे भये मैदान ।। १
लंका के रावण काल ने खाया, तू क्या है कंगाल ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरलाला. भज गोपाल त्यज जंजाल ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३७०

(निर्गुण प्रेम)

मन्दरिये पधारो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की थाली में भोजन परोसो,
धीरे धीरे जीमो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की झारी में गंगाजल पानी,
धीरे धीरे पीवो श्याम ! मन भगती में ।
चुन चुन कलीयां सेज विछाई,
धीरे धीरे पोढ़ो श्याम ! मन भगती में ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
शरण में लीज्यो श्याम ! मन भगती में ।

◈ ◈ ◈

३६९–(क)

पद–३७१ : राग–भैरवी : ताल–रूपक

(विरद)

माई तेरो मोहन ने मन हरचो । (टेर)
काह करूँ कित जाऊँ सजनो, प्रान पुरुष सूं बरचो ।। १
हूँ जल भरने जात थो सजनी, कलस माथे धरचो ।। २
सांवरी सी किसोर मूरत, मुरली ने कछु टोनो करचो ।। ३
लोक लाज सब बिसार डारी, तब ही कारज सरचो ।। ४
दासी मीरां लाल गिरधर, छान ये वर वरचो ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३७२ : राग–खमाच : ताल–धीमा

(प्रेम)

माई मोरे नयन बसे रघुवीर । (टेर)
कर सर चाप कुसुम सर लोचन ठाड़े भये मन धीर ।। १
ललित लवंग लता नागर लीला (जब) पेखो तब अंग पीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर बरसत कांचन नीर ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३७३ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(विरह)

माई म्हांने मोहन मित्र मिलाय । (टेर)
रसियो है उर अंतर बसियो या विनु कछु न सुहाय ।। १
पातलियो सांवरियो लोभी राखूं कंठ लगाय ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर तन की तपत बुझाय ।। ३

◈ ◈ ◈

३७१–(म)
३७२–(उ)
३७३–(उ.) (दीना. मं. मी. प. ६)

पद–३७४ : राग–काफी : ताल–जत

(प्रेम)

माई म्हारै निरधन रो धन राम । (टेक)
खाय न खूटै चोर न लूटै, विपति पड्या आवै काम । १
दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठों याम[1] ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बिसराम ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३७५ : राग–काफी : ताल–तिताला

(प्रेमचरित)

माई म्हारै साधाँ रो इकत्यार है । (टेक)
साधु ही पीहर साधु ही सासरो, सांवरियो भरतार है ।। १
जात पाँत कुल कुटम कबीलो, साधू ही परवार है ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, रमस्यां साधाँरी लार है ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

माई म्हांने मिलिया छै मित्र गोपाल, नहीं जावां सासरे । (टेर)
सास हमारी सुषमा नारी ससुरो परम संतोष ।
जेठ जुगत कर जाणियो रे बाला पीव रह्यो निरदोष ।। १
देवर के रै दोय डीकरी रे सो वै अखन कंवारि ।
दासि मीराँ लाल गिरधर आवागमन निवारि ।। २

◈ ◈ ◈

३७४–(उ.) १–पाठान्तर = सुमरण सूं म्हारै काम ।
३७६–(उ.) (दीना. मं. मी. प. ३)

पद–३७७ : राग–माड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

माई म्हांने सुपना में परणी गुपाल । (टेक)
राती पीरी चूनर पहरी मँहदी पान रसाल ।। १
कांई करां और सँग भाँवर म्हांने जग जंजाल ।। २
मीराँ प्रभु गिरधरनलाल सूं करी सगाई हाल ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३७८ : राग–तीलंग : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांनें सुपना में परणी गोपाल । (टेक)
गैली ये मीराँ भई बावरी सुपनूं छै आल जंजाल ।। १
जो तूंने सुपना में गिरधर मिलिया तो कछुक सैनाण बताय ।। २
हलदी तो पीठी म्हारे अंग लिपटाई मँहदीसूं राच्या म्हारा हाथ ।। ३
छपन कोड़ जादू जान पधारचा दूल्हो श्रीनन्दकँवार ।। ४
सेवरियो सिरपेच कलंगी सोरठड़ी तरवार ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर पूरबले भरतार ।। ६

◈ ◈ ◈

३७८–(म.) (सन. मा. मी. ली. से १)
(दीना. मं. मी. प. ५)

पद–३७९ : राग–देस : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांने सुपने में परण गया जगदीस ।। (टेक)
सोती को सुपणा आविया जी सुपणा बिस्वा बीस ।। १
गैली दीखै मीराँ बावली सुपणा आलजंजाल ।
माई म्हाँने सुपणों में परण गया गोपाल ।। २
अंग अंग हलदी में करी जी सुधे भीज्यो गात ।
माई म्हाँने सुपणें में परण गया दीनानाथ ।। ३
छप्पन कोट जहां जान पधारे दूल्हो श्रीभगवान ।
सुपणे में तोरण बांधियो जी सुपणे में आई जान ।। ४
मीराँ को गिरधर मिल्या जी पूरब जनम के भाग ।
सुपणे में म्हांने परण गया जी हो गया अचल सुहाग ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३८० : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

माई म्हांने रमइयो है दे गयो भेष । (टेक)
हम जाणें हरि परम सनेही पूरब जनम को लेष ।। १
अंग बिभूत गले मृगछाला घर घर जपत अलेष ।। २
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी रामजी मिलन की टेक ।। ३

◈ ◈ ◈

३७९–(वि. कु. पृ. ६७)
३८०–(उ.) (राम स. गु. पृ. २९८)

पद–३८१ : राग–बिहाग सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

माई मेरी हरि न बूझी बात ।
या पिंड मांही प्राण पापी निकसि क्यों नहिं जात ।। (टेक)
मुख न बोले पट न खोले सांझ तैं परभात ।
बोलनै जुग बीतन लागौ काहे की कुसलात ।। १
आवन आवन कह गये हरि आवन ही की बात ।
रैनि अँधेरी बीज चमकै तारा गिनत बिहात ।। २
कै कटारी कंठ सारूँ कै मरूँ विष खात ।
दासि मीराँ लाल गिरधर (मन) लालची ललचात ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३८२ : राग–पूरवी : ताल–इकताला

(विरह)

माई मेरे नैनन बान परी री । (टेक)
जा दिन नैना स्याम न देखों बिसरत नाहीं घरी री ।। १
चित बस गई सांवरी सूरत उर तें नांहि टरी री ।। २
मीराँ हरि के हाथ बिकानी सरबस दे निबरी ।। ३

◈ ◈ ◈

३८१–(उ.) (क. ब. २६)
३८२–(उ.)

पद–३८३ : राग–जोनपुरी : ताल–इकताला

(प्रेम)

माई मैं तो गिरधर के रँग राची । (टेक)
मेरे बीच पड़ो मत कोई, बात चहूँ दिस माँची ।। १
जो मन सार मेरे मन उपज्यो, ज्यों कंचन मणि साँची ।। २
और सबही हो-हो सिर ऊपर, मैं परगट होय नाँची ।। ३
मुलक निसान बजावां कृष्ण के, जो कोइ कहो सोई साँची ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मो मति नाहीं काची ।। ५



पद–३८४ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

ठुमरी

माई मैं तो गोविन्द सों अटकी । (टेक)
चकित भये हैं दृग दोउ मेरे लखि शोभा नट की ।। १
शोभा अंग अंग प्रति भूषण वनमाला तट की ।
मोर मुकुट कटि किंकिनि राजै दुति दामिनि पट की ।। २
रमित भई हौं सांवरे के संग लोग कहै भटकी ।
छुटी लाज कुलकानि लोग डर रह्यो न घर हट की ।। ३
बिना गोपाल लाल बिन सजनी को जानै घट की ।
मीराँ प्रभु के संग फिरेगी, कुञ्ज कुञ्ज लटकी ।। ४



पद–३८५ : राग–काफी वा पहाड़ी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-प्रवाह)

माई मैं तो लियो है साँवरियो मोल[1] । (टेक)
कोई कहै सोंघो कोई कहै महँगो, (मैं तो) लियो है हीरा सूं तोल ।। १
कोई कहै हळको कोई कहै भारी, (मैं तो) लियो री ताखड़ियाँ[2] तोल ।।२
कोई कहै छाने कोई कहै चोड़े[3], (मैं तो) लियो री वाजताँ ढोल ।। ३
कोई कहे घटतो कोई कहे बढ़तो, (मैं तो) लियो है बरावर तोल ।। ४
काई कहे काळो कोई कहे गोरो, (मैं तो) देख्यो है घूँघट पट खोल ।। ५
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, (म्हारे) पूरब जनम रो कोल[4] ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–३८६

(प्रेमानन्द)

माई मैं तो सपना में परनी गोपाल । (टेक)
हाथी भी लायो घोड़ा भी लायो और लायो सुखपाल ।। १

◈ ◈ ◈

३८५–(उ.) (मीराँबाई का जीवन चरित्र मु. देवी. पृ० ३४)
(मीराँ प. जमा. राय. २)
१–पाठान्तर–गोविन्दो । रमैयो । २–तराजू । ३–छुरके ।
४–(रा. स. गु. में) 'मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, पूरब जनम के कोल' ।
(यह अंतरा रा. स. गु. में अधिक है) 'या कूं तो सब लोग जाणत हैं, लियो अमोलक मोल' ।
३८६–(मीराँ. जी. च. मु. देवी. पृ. ३४)

पद–३८७ : राग–माँड : ताल–दीपचंदी

(प्रेमानन्द)

माई री मैं तो लीनो गोविंदो मोल । (टेर)
कोई कहै छाने कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढोल ॥ १
कोई कहै महँगो कोई कहै सोंघो, लियो री तराजू तोल ॥ २
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलिक मोल ॥ ३
याही कूं सब लोग जाणत हैं लियो री आँखी खोल ॥ ४
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो पूरब जनम का कोल ॥ ५

* * *

पद–३८८ : राग–दुरगा : ताल–तिताला (कहरवा)

(चरित्र)

माई री मैं सवलिया जान्यो नाथ । (टेक)
लेन परिचो अकबर आयो तानसैन ले साथ ॥ १
राग तान इतिहास श्रवन करि नाय नाय महि माँथ ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर कीन्ह्यों मोहि सनाथ ॥ ३

३८७–(मीराँ मंदाकिनी । पद १८)
इसका पाठ वैल्वेडीयर प्रेस की 'शब्दावली' में यों है—
"माई मैं तो लियो रमैयो मोल । (टेर)
कोई कहै छानी कोई कहै चोरी, लियो है बजंता ढोल । १
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो है मैं आँखी खोल । २
कोई कहै हलको कोई कहै भारी, लियो है तराजू तोल । ३
तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल । ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, पुरब जनम का है कौल । ४
३८८–(क.) (मीरांबा. जी. का. प्र. पृ. १४)

पद–३८९ : राग–सोरठ, देस : ताल–कहरवा

(चरित)

माई हूँ सपना में परणी गोपाल । (टेक)
मति करो म्हारी ब्याव-सगाई क्यूं बांधो जंजाल ।। १
झूठा मात पिता सुत बंधू बंध्यो अबध्या ख्याल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर सांचो पति नंदलाल ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–३९० : राग– बीलावल : ताल–झुमरा

(प्रेम)

माई हूँ स्याम कै रँग राचो । (टेक)
मेरे बीच परो मत कोऊ, बात चहूँ दिशि मांची ।। १
जगत रैनि रहै उर ऊपर, ज्यूं कञ्चन मणि खाँची ।। २
होय रही सब जग में जाहर, फेरि प्रगट होइ नाँची ।। ३
मिली निसान बजाय कृष्ण सूं ज्यो कछु कहो सो माँची ।। ४
जन मीराँ गिरधर की प्यारी, मोहोबत हैं नहिं काची ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–३९१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरद, विनय)

माधोजी आयां ही सरैगो राणी रुकमणि का भरतार । (टेर)
लिखि पतिया द्विज हाथ पठावो द्वारका नै गमन करैगो ।। १
बड़े बडे भूप महाबलजोधा कुणसैं कोंण घटैगो ।। २
यो सिसपाल चंदेरी को राजा कूड़ी साखि भरैगो ।। ३
मीराँ कहै यूं रुकमणि कहत है थांको ही बिड़द लजैगो ।। ४

◈ ◈ ◈

३८९–(मी. ली. प. दूधू ५)
३९०–(उ.) (मी. ली. दूधू १)
३९१–(क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)

पद–३९२ : राग–विहाग : ताल–तिताला

(रहस्यवाद)

माधो बिना बसती उजार, मेरे भाँवे । (टेक)
एक समै मोतियन के धोके, हंसा चुगत जुवार ।। १
सरवर छाँड तलैया बैठे, पंख लपट रही गार ।। २
सरवर सूक तरवर कुम्हलाये, हंसा चले उड़ार ।। ३
मीराँ के प्रभु कब ज्यो मिलोगे, लाँबी भुजा पसार ।। ४

◈ ◈ ◈

पद राग–माँड : ताल–कहरवा

(चरित)

मान ल्यो जी म्हारी, अब मीराँ म्हारी, थानै सखियाँ बरजै सारी । (टेक)
राजा बरजै, राणी बरजै, बरज बरज सब हारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली मोत्यां वारी ।। २
हाथ गूजरी कर में कंकण, नेवर पद झुँणकारी ।। ३
साधाँ के सँग बैठ बैठ कर, लाज गुमा दइ सारी ।। ४
नित प्रति जाय साध सँग बैठो, कुल के लावो गारी ।। ५
बड़ा घरां का छोटा कहवो, नाँचो दै दै तारी ।। ६
बर पायो हिंदवाणूं सूरज, अब मन काँई धारी ।। ७
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ८

◈ ◈ ◈

३९२–(म.) (फु. प.)
३९३–(म.) (दीना. मं. मी. प. १५)

पद–३९४ : राग–प्रभाती : ताल–दादरा

(रूप-वर्णन)

मानू मीन सरवर जप तप कर मिलन आई । (टेक)
भृकुटी कुटिल विसाल चितवन में टोना ।
खंजन और म[...]पान मोये मृगछोना ।। १
नासिका अधर अनूप मंद मंद हासी ।
दसनन दामिनी चिमकत चपला सी ।। २
कंबु कंठ भुज बिसाल ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर का भेष मानों सकल गुण विशेषा ।। ३
छुद्रघंटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई ।
उस गिरधर के अंग अंग मीराँ बलि जाई ।। ४

◈ ◈ ◈

३९४–(प्रभुना. गुटका से)

पद–३९५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(मीराँबाई ऊदाँबाई सम्वाद)

ऊदाँ–माया थे तो क्यूं तजी भाभी, मीराँ क्यूं रे लियो बैराग,
काँई थारै मन बसी । (टेक)
मीराँ–याही म्हारै मन बसी बाई ऊदाँ, यूंर लियौ बैराग,
माया म्हे यूँर तजी ।। १
ऊदाँ–ऊँचा नीचा बैसणां ये भाभी उत्तम तिहारी जात ।
राणां सो व्रर पाइयो हे भाभी, नोकूंटां में थारो राज ।। २
मीराँ–ऐसा तो मोती ओस का ये, बाई जैसो यो संसार ।
लगै भकोलो पौन को ये, बाई छिन मैं सब ढल जाइ ।। ३
ऊदाँ–खीर खाँड को भोजन जीमूँ, भाभी ओढ़ो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर पाइयो ये, भाभी सब महलाँ में थारो सीर ।। ४
मीराँ–खीर खाँड को भोजन त्याग्यो ये, बाई त्याग्यो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर त्यागियो ये, बाई (सब) संतन में म्हारो सीर ।। ५
ऊदां–बास्या कूस्या टूकड़ा ये, भाभी और मिलेगी खाटी छाय ।
भैं सोवो भूखाँ मरो ये, भाभी नहीं मिलैगो हरि आय ।। ६
मीराँ–बास्या तो खास्यां टूकड़ा ये, बाई पीस्यां खाटी छाय ।
भैं सोवां भूखाँ मराँ ये, बाई जब रे मिलेगो हरि आय ।। ७
माया म्हे तो यूँ तजी० ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाय ।। ८



३९५–(क.) (दीना. मं. मी. प. ३३)

पद–३६६ : राग–पीलू वरवा : ताल–कहरवा

(होरी लीला)

मारत मेरे नैन में पिचकारी, मैं तो ईं साँवराजी सूँ हारी । (टेक)
नैन बचा कर डारो साँवरा, ग्रोर बदन सब सारी ।
भर पिचकारी गोरा मुख पर मारी, भीज गई सब सारी ॥ १
रतन कटोरा में केशर घोरी, हाथ लियें पिचकारी ।
ग्रवके तो रङ्ग डार दियो है, ग्रवके डारो दूंगी गारी ॥ २
घर मेरा दूर गागर सिर भारी, मैं नाजुक पनिहारी ।
पनघट घाट छाँड दे कनैया, बोझ्याँ मरे थारी प्यारी ॥ ३
वृन्दावन की कुञ्जगलिन में, भीड़ भई ग्रति भारी ।
मैं तो साँवरा ने पाई ग्रकेली, चूरमूर कर डारी ॥ ४
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडल की छवि न्यारी ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारो ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–३६७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(वात्सल्य)

माँगत माखन रोटी, गोपाल प्यारे । (टेर)
मेरे गोपालजी कूं रोटी बनाय देऊं, एक छोटी दूजो मोटी ॥ १
मेरे गोपालजी का व्याह करूंगी, विरषभान की बेटी ॥ २
मेरे गोपालजी के झवला सिलाऊंगी, मोतिन की लड़ छूटी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल में तो जोती ॥ ४

◈ ◈ ◈

३६६–(भ. सं.) । (२३) पुजा. नाथू. पु. से)
३६७–(का. । उ. १ । ३०६)

पद–३९८ : राग– माड : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हांने चाकर राखो जी, साँवरिया म्हांने चाकर राखो जी। (टेक)
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ, नित उठि दरसन पास्यूँ।
वृन्दावन की कुंजगलिन में, तेरी लीला गास्यूँ ॥ १
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाताँ सरसी ॥ २
हरे हरे सब बलहि [महल] बनाऊँ, बिच बिच राखूँ वारी।
साँवरिया के दर्शन पाऊँ, पहिर कुसुंमी सारी ॥ ३
जोगी आया जोग करन कूं, तप करने सन्यासी।
हरी भजन कूं साधू आये, वृन्दावन के वासी ॥ ४
मीराँ के प्रभु गहिर गँभीरा, हिर्दे रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हे, प्रेम नदी के तीरा ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–३९९ : राग–माड : ताल–दादरा

(विरह)

म्हांनै भी ले चालो ऊधो ! साँवरा रै देस। (टेक)
लिख लिख पतियाँ भेजती रे वाला, भलो जणायो अपनेस ॥ १
सज्या सिणगार उतारस्यूँ, करस्यूँ भगवाँ भेस ॥ २
थारै कारण बन बनं डोलूँ, कर जोगण रो भेस ॥ ३
थारे कारण सब ही छोड्यो, छोड़्यो मेड़त्यो देस ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तन मन हर की भेट ॥ ५

◈ ◈ ◈

३९८–(उ.) (बं.पु. पृ. २९) (भ.र.मी. पृ. २०८)
३९९–(म.)

पद–४०० : राग–हमीर : ताल–तिताला

(इष्ट-प्राप्ति)

म्हारा ओलगिया घर आया जी। (टेक)
तन की ताप मिटी सुख पायो, हिल-मिल मंगल गाया जी ॥ १
घन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यूँ मेरे आणद आया जी ॥ २
मगन भई मिलि प्रभु अपणा सूं, भौ का दरद मिटाया जी ॥ ३
चंद कूँ देखि कमोदणि फूलै, हरखि भया मेरो कायाजी ॥ ४
रग रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया जी ॥ ५
सब भगतन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी ॥ ६
मीराँ विरहिण सीतल होई, दुख दुन्द दूरि न्हसाया जी ॥ ७

◈ ◈ ◈

पद–४०१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा।

(विनय)

'म्हारा गिरधर[1] रसिया छैल, मैं तो चालूं थारी गैल। (टेक)
पुरी द्वारिका वास करूंली, और समद की ल्हैर।
सब राण्यां सैं रहूँ निराली, जुदा चुणाद्यो म्हैल ॥ १
राणों म्हाँसूं करो अनीती[2], भोत मचाया फैल।
मैं तो थाँकी संग चलूंली, भोत करूंली ठैल ॥ २
राज पाट राणां का छोड्या, और कंचन का म्हैल।
हातो घोड़ा माल खजाना, और दुनियां की सैल ॥ ३
मैं गिरिधर की भक्ती करस्यूं, कटै जनम का मैल।
आनँद धर मीराँ गिरिधर को, कच कंचन का म्हैल ॥ ४

◈ ◈ ◈

४००–(म.)
४०१–(म.) (फु. प.)

१. पा०–गोविंद। २. पा०–कुटिलता।
३. पा०–"आनँदघन मैं चली सासरे चढ़ कञ्चन की भैल।"

पद–४०२ : राग–सारंग रसीया : ताल–कहरवा

(प्रार्थना)

म्हारा जनम मरण का साथी, थाँने नहिं बिसरूं दिनराती । (टेक)
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती ।। १
यो संसार सकल जन झूँठो, झूँठा कुल रा नाती ।
दोऊ कर जोड़्याँ अरज करत हूँ, सुन लीजो मेरी बाती ।। २
पल पल तेरा पंथ निहारूं, निरख निरख सुख पाती ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणाँ चित राती ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हारा नटनागर गोपाललाल बिन कारज कौन सुधारे । (टेक)
घूम रह्यो दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारो ।
सिंह होय कर हस्ती मारे, बड़ो भरोसो थारो ।।१
मीराँ ने राणाँजी बरजे, मतना जन्म विडारे ।
थे संगत साधा की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारे ।। २
म्हे संगत साधां की सीख्या, थारे कछुयन सारे ।
तन में रीस भई राणाँ के, ऊठ खडग ले मारे ।। ३
प्याला में विष घोल राणाँजी, मन में कपट विचारे ।
अमृत कर के मीराँ पी गई, जहर साँवरो झारे ।। ४
जब जब भीड़ परी भक्तन पर, आपहि कृष्ण पधारे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्तां ने त्यारे ।। ५

◈ ◈ ◈

४०३–(क.) (भजनमंजरी, पृ. ३८)

पद–४०४ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हारा सतगुर बेगा आज्योजी, म्हारे सुख री सीर वुवाज्यो जी । (टेक)
तुम बीछड़ियाँ दुख पाऊं जी, मेरा मन माँही मुरझाऊं जी ॥ १
मैं कोइल कुरलाऊं जी, कछु बाहरि कहि न जणाऊं जी ॥ २
मोहि वाघण विरह सतावे जी, कोई कहियां पार न पावै जी ॥ ३
ज्यूं जल त्यागा मीना जी, तुम दरसण बिन खीना जी ॥ ४
ज्यूं चकवी रैण न भावै जी, वा ऊगो भाण सुहावै जी ॥ ५
ऊ दिन कबै करोला जी, म्हारे आँगण पांव धरोला जी ॥ ६
अरज करै मीराँ दासी जी, गुरुपद-रज की प्यासी जी ॥ ७

◈ ◈ ◈

पद–४०५ : राग–मांड़ : ताल–दादरा

(प्रार्थना)

म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हारे मन राखोला सरण हजूरी । (टेक)
बैल बँधावो भांवें घोड़ा बँधावो चाहै करावो मजूरी ॥ १
खावा पीवा की म्हांकी चिन्ता मत कीज्यो, कंगनी दीज्यो भाँवैं कूरी ॥ २
ओढनकूं कारी कामरिया दीज्यो और चटाई खजूरी ॥ ३
जो थे देशी सो म्हे लेशी योई मत म्हारे पूरी ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर निज चरणन की धूरी ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–४०६ : राग–पीलू पाछमर : ताल कहरवा

(चरित)

म्हारी बात जगत सूं छानी, साधाँ सूं नहिं छानी री । (टेक)
साधू मात पिता कुल मेरे साधू निरमल ग्यानी री ॥ १
राणाँ नें समझाओ बाई (ऊदाँ) मैं तो एक न मानी री ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर संतन हाथ विकानी री ॥ ३

◈ ◈ ◈

४०४–(म.)
४०५–(म.) (प्रहलाद भक्तजो का पाना १)
४०६–(म.) (दीना. मं. मी. प. २०)

पद–४०७ : राग–खासा मांड : ताल–कहरवा, धीमा

(विनय)

म्हारी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी। (टेक)
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी ॥ १
मैं तो हूँ वहु औगणहारी, औगण चित्त मत दीजो जी ॥ २
मैं तो दासी थारे चरण-जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी ॥ ३
मीराँ तो सतगुरु के सरणे, हरिचरणाँ चित दीजो जी ॥ ४



पद–४०८ : राग–मांड

(प्रेम उत्सुकता)

म्हारी सेजड़ल्यां रँग माणूँजी, म्हारी कुञ्जन का प्यारा पलाडूजी। (टेक)
आम्हाँ साम्हाँ महल झुकाऊँ, विच विच राखूँ बारी।
बारी में झाँकत म्हारे निजर पड्या गिरधारी ॥ १
आम्हाँ साम्हां बाग लगाऊं, विच बिच राखूं गुल-क्यारी।
आवेलो नंदजी को लाला, टाँके फूल हजारी ॥ २
ओछा पायां ढोलणी, रेसम डोर बणावूं।
तुम बिना नंदजी का लाला, जरा नींद नहिं आवे ॥ ३
हरी जरी का लहँगा सोवै, फूलझड़ी की सारी।
अनवट ऊपर विछिया सोवै, नथ सोवे झलकाँ-री ॥ ४
मथुरा वृन्दावन बिच नाँव लगाऊं, सब सखियन को भेलो।
मीराँ के प्रभु तुम सुख पोढ़ो, यो निजराँ रो मेलो ॥ ५*



४०७–(उ.)
४०८–(सं०) (क.) (२७) (पुजा. नाथू. पु. से)
*वर्णन शैली से भ्रम होता है।

पद–४०६ : राग–आसा मांड : ताल–झूमरा

(विनय)

(थे) म्हारे घर आज्यो जी प्रीतम प्यारा । (टेक)
औगुण है मोमैं गुण नहिं एक हुँ, थे ही बकसणहारा ।। १
तन मन धन निवछावर करस्यां, जतन कराँ म्हे थारा ।। २
मीराँ को प्रभु कब'र मिलोगे, तुम बिन नैन दुष्यारा ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४१० : राग–मलार : कहरवा

(निहोरा)

म्हारे घर आवो जी राम रसिया, थारी साँवरी सुरत मन बसिया । (टेक)
घुड़ला जीन करावो (मन)मोहन, बखतर खासा कसिया ।। १
चुन चुन कलियाँ सेज बिछाई, ऊपर रखिया तकिया ।। २
सिरे गाय को दूध मंगायो, चाँवल गेरचा (भर) पसिया ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरन-कमल मन बसिया ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–४११ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(भक्ति)

म्हारै आज रँगीली रात, मनड़ा रा म्हरम आइया । (टेक)
या छबि निरखण सुगन मनावण, अतर सुगंध लगावणां ।। १
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मन-अंछचा बर पावणां ।। २

◈ ◈ ◈

४०६–(म.) (मा. हरिना. पु. ह.) (मी. ली. प. दूधू १६)
४१०–उ.(७) (पुजा. नाथू. पु. से)
४११–(क.)

पद–४१२ : राग–कामोद छाया : ताल–झूमरा

(विनय)

म्हारै घर आजो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग लागै खारा। (टेक)
तन मन धन सब भेंट करूँ अर भजन करूँ मैं थांरा॥ १
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूँ औगनहारा॥ २
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा॥ ३
मीराँ कहै प्रभु कबहिं मिलोगे, बिन दर्शन दुखियारा॥ ४



पद–४१३ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हारै घर रमतो ही आई रे, तू जोगिया। (टेक)
कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे॥ १
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, गृह अँगणों न सुहाई रे॥ २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ मोकूं आई रे॥ ३



४१२–(म.) (बं. पु. पृ. १०)
४१३–(म.)

पद–४१४ : राग–सोरठ, तिलक-कामोद : ताल–दीपचंदी

(विनय)

म्हारै घर होता जाज्यो राज । (टेक)
अब के जिन टाला दे जावो, सिर पर राखूं विराज ।। १
म्हे तो जनम जनम की दासी, थे म्हाँका सिरताज ।। २
पावणड़ा म्हांके भला ही पधारो, सब ही सुधारण काज ।। ३
म्हे तो बुरी थांके भली छै घणेरी, तुम हो एक रसराज ।। ४
थांने हम सबहिन की चिंता, तुम हो गरीबनिवाज ।। ५
सब के मुकट-सिरोमनि सिर पर, मानूं पुण्य की पाज ।। ६
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ।। ७

◈ ◈ ◈

पद–४१५ : राग–काफी मांड : ताल–झूमरा

(विरद, विनय)

म्हारै नैणाँ आगे रहोजो जी, स्याम गोबिन्द । (टेक)
दास कबीर बालद जो लाया, नामदेव की छान छवंद ।। १
दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद ।। २
भीलनी का बेर सुदामा का तंदुल, भर मूठड़ी बुकंद ।। ३
करमाँ बाई को खीच अरोग्यो, होई परसण पावंद ।। ४
सहस गोप बिन स्याम विराजे, ज्यों तारां विच चंद ।। ५
सब संतों का काज सुधारा, मीरां सूं दूर रहंद ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–४१६ : राग–देश मांड : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हारै सिर पर सालिगराम, राणाँजी म्हारो कांईं करसी । (टेक)
मीराँ सूं राणां ने कह्यो रे, सुण मीराँ मोरी बात ।
साधों की संगत छोड़ दे रे, सखियां सब सकुचात ॥ १
मीराँ ने सुन यों कही रे, सुन राणाजी बात ।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियां क्यों अकुलात ॥ २
विष का प्याला भेजिया रे, दीजो मीराँ हाथ ।
अमृत कर के पी गई रे, भली करें दीनानाथ ॥ ३
मीराँ प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर ।
तैंतो मारण की करी रे, मेरो राखणहारो ओर ॥ ४
आधे जोहड़ कीच है रे, आधे जोहड़ हौज ।
आधे मीराँ एकली रे, आधे राणाँ की फौज ॥ ५
काम क्रोध को फेंक के रे, सील लिये हथियार ।
जीती मीराँ एकली रे, हारी राणाँ की धार ॥ ६
काचगिरी का चौंतरा रे, बैठे साध पचास ।
जिनमें मीराँ ऐसी दमके, लख तारों में प्रकास ॥ ७
टांडा मीराँ लादिया रे, बेगी दीना जाण ।
कुलको तारण अस्तरी रे, चली है पुष्कर न्हाण ॥ ८

◈ ◈ ◈

४१६–(क.)

पद–४१७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

म्हारै हिरदै लिख्यो हरि नांव, अब मैं ना बिसरूं । (टेक)
मीराँ गढ़ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक बणाय ।
पगां वजावत घूंघरा जी, हाथ बजावत ताल ।। १
माला कंठी दोलड़ो जी, सीलबरत सिणगार ।
जो कोई हिरदै बसै जी, जो कोई आवणहार ।। २
राणूँ मन मैं कोपियो जी, मारो याके सेल ।
मारयां तो पिराछित लगै जी, पीहर दो याकों मेल ।। ३
रथड़ा बहल जुपाइया जी, ऊँटां कसिया भार ।
डावो छोड़ो मेड़तो जी, पेलां पोषर जाय ।। ४
राणां साँडया मोकल्या जी, पाछा ल्यावो मोड़ ।
कुल की माँडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठोड़ ।। ५
मीराँ वचन उचारियो जी, गिरधर म्हारो मोड़ ।
थे पाछा जावो साँडिया जी, काँने मोड़ो जोड़ ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–४१८ : राग–हमीर बहार : ताल–तिताला

(दृढ़ता, प्रेम)

म्हारो मनड़ो राजी राजी जी । (टेक)
कांईं करैला म्हारो दुरजन पुरजन, कांईं करैला झूंठा पाजी जी ।। १
कांईं करैला म्हारो राजाराणी, कांईं करैला मुल्ला काजी जी ।। २
राम प्रीतम सूँ हिलिमिलि खेलूं, परतन छांडूं बाजी जी ।। ३
मीरां के प्रभु प्रीति पूरवली, तुम मत जाणों आजी जी ।। ४

◈ ◈ ◈

४१७–(दीना. मं. मी. प. १४)
४१८–(उ०) (रामस. गु. पृ. १४६)

पद–४१९ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(विनय)

म्हारो मनड़ो लाग्यो हरि सूँ, मैं अरज करूं अंतर सूँ। (टेक)
माधो री मूरति पलक न बिसरूँ, सो ले हिरदै धरसूँ ॥ १
आवन कह गये अजहुँ न आयें, बिन दरसण मैं तरसूँ ॥ २
म्हारो जनम सुफल हो जा दिन, हरि के चरणां परसूँ ॥ ३
मीरां के प्रभु दरसण दीज्यो, तन मन अरपण करसूँ ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–४२० : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

म्हारो मन मोह्यो छै जी स्यांम सुजांण। (टेक)
माधुरी मूरत सुंदरी सूरत, जाणै कोटिक भाँन ॥ १
पाग कसूमल केसरयां जामूं, सोहै कुंडल काँन ॥ २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, तुम बिन तलफत प्रांण ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–४२१ : राग–परज : ताल–तिताला

(विरह)

म्हारो मन मोहि लीनों माई हे जसोधा के नन्दन। (टेक)
तनक बांसुरिया श्रवननि में धुनि परी अधिक दुख दंदन ॥ १
कछु न रही सुधि बुधि मति सजनी, परी हों प्रेमरस फंदन ॥ २
आठ जाम मोहि कल न परत है ज्यों भुजंग बिन चंदन ॥ ३
भूली लाज काज सुनि सजनी, परचो अधिक रस फंदन ॥ ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर करि राखो भुजबंधन ॥ ५

◈ ◈ ◈

४१९–(उ.) (रामस. गु. पृ. १५४)
४२०–(राम स. गु.)
४२१–(उ.) (रासपदसंग्रह से)

पद–४२३ : राग-मांड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

म्हांनै गुरु गोबिन्द री आण, गोरल नाँ पूजां। (टेक)
(सास) ओर ज पूजै गोरजा जी, थे क्यूँ पूजो न गोर।
मन-बंछित फल पावस्यो जी, थे क्यूँ पूजो ओर ॥ १
(मीराँ) नहिं हम पूजां गोरज्या जी, नहिं पूजां अन देव।
परम सनेही गोविन्दो थे, काँई जाणो म्हारो भेव ॥ २
(सास) बाल सनेही गोविन्दो, साध संताँ को काम।
थे बेटी राठोड़ की, थाँने राज दियो भगवान ॥ ३
(मीराँ) राज करै ज्याँना करणै दीज्यौ, मैं भगताँ री दास।
सेवा साधू जनन की म्हारे, राम मिलण की आस ॥ ४
(सास) लाजै पीहर सासरो, माइ तणो मोसाल।
सब ही लाजै मेड़तिया जी, थाँसूँ बुरा कहे संसार ॥ ५
(मीराँ) चोरी कराँ न मारगी, नहिं मैं करूं अकाज।
पुन्न कै मारग चालतां, झक मारो संसार ॥ ६
नहिं मैं पीहर सासरे, नहिं पियाजी री साथ।
मीराँ ने गोविन्द मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ॥ ७



४२३–(क.)

पद–४२६ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(लीला)

मिथुला, सुन यह बात हमारी । (टेक)
राजभोग की समै हुई है बेग थाल सज ला री ।। १
छप्पन भोग छतीसों बिंजन सीतल जल को झारी ।। २
धूप दीप नैवेद्य आरती कीजे बेग तयारी ।। ३
धरिये भोग विलंब न करिये मेरी मान पियारी ।। ४
जीमें म्हारो प्यारो गिरधर साधां ने बेग बुला री ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–४२७ : राग–गौड़ सारंग वा छाया : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी*, थाँरी सूरत देखि लुभानी । (टेक)
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूं बिरह दिवानी ।। १
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ।। २
दरस बिना मोहि कछु न सुहावे, तलफ़ तलफ़ मुरझानी ।। ३
मीराँ तो चरणन की चेरी, सुन लीजो सुखदानी ।। ४

◈ ◈ ◈

४२६–(स. मा. मी. ली. ५)
४२७–(उ.)
* पाठान्तर = मिलता जाज्यो हो जी गुमानी ।

पद–४२८ : राग–ईमन : ताल–कहरवा वा तिताला

(विनय)

मीराँ को प्रभु साँची दासी बनाउ ।
झूठे धंधाँ रे मेरा फंदा छुड़ाउ । (टेक)
लूटेहि लेत विवेक का डेरा,
बुद्धिवल यदपि करूं बहुतेरा ॥
हाय राम नहिं कछु बस मेरा,
मरत हूँ विवस प्रभु धाउ सवेरा ॥ १
धरम उपदेश नितप्रति सुनती हूँ,
मन कुचाल से भी डरती हूँ ॥
सदा साधु सेवा करती हूँ,
सुमरन ध्यान में चित करती हूँ ॥
भक्तिमार्ग दासी को दिखाउ,
मीराँ को प्रभु साँची दासी बनाउ ॥ २

◈ ◈ ◈

४२८–(म) (प्रं. पु. पृ. २६)

पद–४२६ : राग–खम्माच : ताल–कहरवा

(मीराँजी को ब्याहुलो)

मीराँ तो जनमी मेड़ता सजनी म्हारी हे ।
आन लियो औतार पिय म्हारो गिरधारी ।। (टेक)
और सहेली पूजे गौरजा सजनी म्हारी हे ।
थे भी पूजो बाई गौरी पिय म्हारो गिरधारी ।। १
और तो पूजे गौरजा हे सजनी म्हारी हे ।
सो म्हांको सालिगराम पिय म्हारो गिरधारो ।। २
पिरोहित उरे बुलायके हे सजनी म्हारी हे ।
मीराँ की लगन लिखाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ३
पिरोहित बैसो बिच जाय कै हे सजनी म्हारी हे ।
पौंच्यो छै गढ चित्तौर हे पिय म्हारो गिरधारी ।। ४
गहली भई मीराँ बावली सजनो म्हारी हे ।
अकल[न] कुमारी बाई बसै पिय म्हारो गिरधारी ।। ५
कागद मीराँ मोकल्यो हे सजनी म्हारी हे ।
थारी खुसी परै तो राणा आव पिय म्हारो गिरधारी ।। ६
हाथी सिंघारे राणा सातसै सजनो म्हारी हे ।
घुड़ला वार न पार पिय म्हारो गिरधारी ।। ७
नेजे तो आवै चमकता सजनी म्हारी हे ।
उड़ती आवै छै खेह पिय म्हारो गिरधारी ।। ८
कांकड़ आयो रांणा राजई सजनी म्हारी हे ।
कांकड़ां करहा झुकाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ९
आन पौहुँच्यो राणा मेड़तै सजनी म्हारी हे ।
बाजो बहोत बजाय पिय म्हारो गिरधारी ।। १०
बाग तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
तँबुवा दिये हैं तनाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ११
तोरण आयो राणां राजई सजनी म्हारी हे ।
कांमनि कलस सँवारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १२

फेरां तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीराँ की मीराँ दोय पिय म्हारो गिरधारी ।। १३
हथलेवां आयो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
हथलेवां में सालगराम पिय म्हारो गिरधारी ।। १४
परण पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
पहुँच्यो गढ़ चित्तौर पिय म्हारो गिरधारी ।। १५
महेलां पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीरां की मीरां चारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १६
सद्दां उरं बुलाय कै सजनी म्हारी हे ।
मीरां कूं समझाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। १७
समझायैं समझै नहीं सजनी म्हारी हे ।
बजर-सिला बिष बांट पिय म्हारौ गिरधारी ।। १८
बजर-सिला बिष बांटियौ सजनी म्हारी हे ।
पट फैंटा बिष छानि पिय म्हारौ गिरधारी ।। १९
पट फैंटा बिच छानियौ सजनी म्हारी हे ।
देवो मीराँजी कूं जाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २०
चरणोदक आरोगियौ सजनी म्हारी हे ।
दूनौ बढ़चौ है सनेह पिय म्हारौ गिरधारी ।। २१
पगां जु बांधे घूघरा सजनी म्हारी हे ।
गावै छै गुन गोविन्द पिय म्हारौ गिरधारी ।। २२
पटका खोल पगां परचो सजनी म्हारी हे ।
अपनौ गुरु जु बताय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २३
म्हांको गुरु रैदास है सजनी म्हारी हे ।
जिन सेयो है सालगराम पिय म्हारौ गिरधारी ।। २४
गावै से मीराँ दासनी सजनी म्हारी हे ।
पढ़े सुनै फल होय पिय म्हारो गिरधारी ।। २५

◈ ◈ ◈

४२९–(क.); (मा. ह. पु. ह. ३) ।

पद–४३० : राग–भैरवी : ताल–तिताला धीमा

(चरित)

मीराँ मगन भई हरि के गुण गाय। (टेक)
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीराँ हात दियो जाय।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ॥ १
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो गई अमर अँचाय ॥ २
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय।
साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानों फूल बिछाय ॥ ३
मीराँ के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ॥ ४



पद–४३१ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(चरित)

मीराँ मन मानी सुरत सैल असमानी। (टेक)
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ॥ १
ज्यों हिये पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकानी ॥ २
रात दिवस मोहि नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ॥ ३
ऐसी पीर बिरह तन भींतर, जागत रैन बिहानी ॥ ४
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ॥ ५
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमो खानी ॥ ६
खोजत फिरूं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ॥ ७
रैदास सन्त मिले मोहि सतगुरु, दीन्हीं सुरत सहदानी ॥ ८
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ॥ ९
मीराँ खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ॥ १०



४३०–(उ.); (मीराँबाई के भजन नं० २३)।
४३१–(उ.)

पद–४३२ : राग–धनाश्री : ताल–कहरवा

(चरित)

मीराँ रंग लाग्यो हो नांम हरी, और रंग अटकि परि । (टेक)
गिरधर गास्यां[1] सती न होस्यां, मन मोह्यो घण[2] नामो ।
जेठ बहू को नहिं[3] राणाजी, थे सेवक म्हे स्वामी ।। १
चोरी करां नहिं जीव सतावां, काँईं करैगो म्हांको कोई ।
गज सूं उतरि गधे नहिं चढ़स्यां, या तो बात न होई ।। २
चूड़ो तिलक दोवड़ो माला, सील वरत सिणगारां ।
और वस्त रत नहीं मुहि भावै (हो राणाजी!) यह गुरग्यान हमारा ।। ३
भावै कोई निन्दो भावै कोई बिन्दो, म्हे तो गुण गोविन्दजी रा गास्यां ।
जीं मारग वै संत गया छै, जीं मारग म्हे जास्यां ।। ४
राज करंता नरक पड़ंता, भोगी जोरै लीया ।
जोग करंता मुकति पहुंता, जोगी जुग जुग जीया ।। ५
गिरधर धनी धनी मेरे गिरधर, मात पिता सुत भाई ।
थे थांकै म्हे म्हांकै हो राणांजी, यूं कहै मीराँ बाई ।। ६

◈ ◈ ◈

४३२. (म.); (क. व. २४) ।
१. पा०—भजस्यां सही ये न होस्यां । २. पा०—गिरधारी ।
३. पा०—नांतो नहीं छै राणा ।

पद–४३३ : राग–झंझोटी-वागेश्वरी : ताल–तिताला

(विनय)

मीरां हरि में लीन भई। (टेक)
सब कूं छांड भज्यो साहिब कूं गुरु की सरण गई ॥ १
राणाजी रो राज त्याग्यो संत मुख आइ गई ॥ २
राम कृष्ण द्वारका नगरी परकर मांहि रही ॥ ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरणां लीन भई ॥ ४



पद–४३४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

मुक्ति को ग(ह)णों पहरस्यां कांई पहरचो हे हरि गुरु परताप। (टेक)
म्हारै भाव भगति का कं(क)ण वण्यां, सांवलड़ो हे म्हारै हतफूल ॥ १
म्हारै सील को बाजूबंद थिरक रह्यो, सांवलड़ो हे बाजूबँद री लूम ॥ २
म्हारै च्यारूँ जुग चुड़लो बण्यूं. सांवलड़ो हे चुड़ला री चूंप ॥ ३
म्हारै जप तप अँगियां भली बणी, सांवलड़ो हे अँगियां री लूम[1] ॥ ४
म्हारै तन को तिमण्यों बण्यों, सांवलड़ो हे हिवड़ा रो हार ॥ ५
म्हारै नवधा नथ सुहावणी, सांवलड़ो हे मोत्यां बिचली लाल ॥ ६
म्हारै फूलझूमका फब रह्या, सांवलड़ो हे झूमर री लूम ॥ ७
म्हारै करणी रो काजल घुळ रह्यो, सांवलड़ो हे (म्हारै) तिलक लिलाट ॥ ८
म्हारै रामनाम की चूनड़ी, सांवलड़ो हे स्यालूड़ा री कोर ॥ ९
म्हे तो नखसिख गहणों पहरियो, म्हे तो जास्यां सांवलड़ा री सेज ॥ १०
बाई मीरां रँग में भली रँगी, सांवलड़ो हे (म्हारा) सिर को मोड़ ॥ ११



---

४३३. (उ.); (दीना. मं. मी. प. ४०)।
४३४–(म.)।
 १. पा०—तनक ततमूल।

पद–४३५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मुरली ए मोह्या मोहन थारी मुरली ए मन मोह्या । (टेक)
थारे कारण शामलिया व्हाला, त्रण भुवन मैंने जोयां रे । मोहन०
थारा सरखा प्रभु कोई नह दीठा, त्रण भुवन मनड़े मन मोह्या रे । मोहन०
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित प्रोयां रे । मोहन०

◈ ◈ ◈

पद–४३६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(चरित)

मेड़तिया रा कागद आया, बाई मीरां ने जा खीज्यो जी । (टेक)
बोहत भांति से लिख्या ओलँभा, कुल कै दाग मत दीज्यो जी ॥ १
साधां को सँग परो निवारो, बेद साख सुण लीज्यो जी ॥ २
मीरां प्रभु को संग छांड्यो, पति आज्ञा में रीज्यो जी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–४३७ : राग–पीलू, वरवा : ताल–कहरवा

(प्रार्थना)

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभुजी अरज करूँ छूँ । (टेक)
या भव में मैं बहु दुःख पायो, संसा सोग गिमार ॥ १
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख पार ॥ २
यो संसार सब वह्यो जात है, लख चौरासी धार ॥ ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आवागवन निवार ॥ ४

◈ ◈ ◈

४३५–(म.) ।
४३६.–(म.); (दीना. मं. मी. प. २६) ।
४३७–(उ.) ।

पद–४३८ : राग–सवैया की पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(विरहाधिक्य)

मेरा मन कों वैरागो कर गयो रे । (टेक)
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया, जमुना पार उतर गयो रे ॥ १
बारा बरस से सेवा कीन्हीं, रमती बिरयाँ रम गयो रे ॥ २
सुण सुण हे मेरी पाड़ पड़ोसन, जलती में पूलो दे गयो रे ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, धूकती धूनी धर गयो रे ॥ ४



पद–४३९ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार

(लीला)

मेरी चूनर भिजोवै मैं रे भिजोऊंगी पाग । (टेर)
नंद महरजी को कुँवर कन्हैया, जान न देऊंगी (मैं) आज ॥ १
फैंट पकर के फगुवा ल्योंगी, मुख मींडोंगी ब्रजराज ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सदा रहो सिरताज ॥ ३



४३८–(उ) (१) (पु. नाथूनारायणजी की पु. से)
४३९–(उ.) या०—सं. रा. क. से

पद–४४० : राग–सिंध काफी : ताल–तिताला

(ऊदाँ सम्वाद, चरित)

मेरी वात नहीं जग छानी, ऊदाँ बाई समझो सुघर सयानी । (टेक)
साधू मात मिता कुल मेरे, सजन सनेही ग्यानी ।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूं बानी ।। १
राणां ने समझावो जावो, म्हे तो बात न मानी ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, संतां हाथ विकानी ।। २

◈ ◈ ◈

पद–४४१

मेरी लाज तुम रखवैया, नंदजी का कुँवर कन्हैया । (टेर)
पैठ पतालाँ कालीनाग नाथ्यो, फण फण नृत्य करैया ।। १
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै, मुख से मुरली बजैया ।। २
मोरमुकुट पीतांवर सोहै, कानाँ कुंडल झलकैया ।। ३
वृंदाबन की कुंज गलिन में नाचत है ता थैया[1] ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल परसैया[2] ।। ५

◈ ◈ ◈

४४०–(म.) (स. मा. मी. ली. ७)
४४१–(म.)—(क. । उ. २ । ३६३)
पा. १ 'दो मैया' । पा. २ 'परेया'

पद–४४२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(भक्ति)

मेरे तो एक राम सिया जजमान। (टेक)
कौन बने जन जन का भिक्षुक, घर घर करत बखान ॥ मे. ॥ १
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, अगवाणी हनुमान ॥ मे. ॥ २
मीराँ के प्रभु राम सियावर, तुम ही कृपानिधान ॥ मे. ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–४४३ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(वैराग्य)

मेरे तो* गिरधर गोपाल दूसरा न कोई। (टेक)
जाके शिर मोर मुकुट मेरे पति वोई[1]।
शंख चक्र गदा पद्म कंठ माला सोई[2] ॥ १
आई[3] मैं भक्त जान जगत देख मोई।
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ॥ २
भाई छोड़े बंधु छोड़े छोड़े सगा सोई।
संतन सँग[4] बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ ३
प्रेम की मथनिया कर जुगत सों बिलोई।
दधि मथ घृत काढ़ लियो छाछ रही छोई ॥ ४
अब तो बात फैल गई जानत सब कोई।
मीराँ हरि लगन लगी होनी हो सो होई ॥ ५

◈ ◈ ◈

४४२–(क.) (भ. मीरांबाई हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा)

४४३–(उ.) (सरसमाधुरी मीरां ली. से. ४) गाया-रामचन्द, जैपुर
१–पा. = सोई। २–पा. = जोई। ३–पा. = मैं तो पार भक्ति जान। ४–पा. = ढिँग। (मी. जो. का. म. पृ. १८-१९) का ही उपर्युक्त पाठान्तर है और एक अंश भी भिन्न प्रतीत होता है "लोकत्रास छोड़ दियो कहा करे कोई"। * पा. = माथे पै।

पद–४४४ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(वैराग्य)

मेरे तो येक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो[1], सकल लोक जोई ।। (टेक)
भाई छोड़्या बंधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई ।
साध संग वैठ बैठ, लोक लाज खोई ।। १
भक्त देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच विष-बेल धो[बो]ई ।। २
दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ।। ३
अब तो वात फैल पड़ी, जानै सब कोई ।
मीराँ राम लगन लगी, होनी होय सो होई ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–४४५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह-प्रेम)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूड़ी आवै । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कुछ न सुहावै ।। १
आवण कह गये अजहुँ न आये, जिवड़ो अति उकलावै ।। २
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरण कँवल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसण दीन्हा, आनँद वरण्यौ न जावै ।। ५

◈ ◈ ◈

४४४–१–पा. = माधो

नोट— यह पद वदनोर के संग्रह में (४६ पदों में) था । सो कुछ पाठभेद होने से लिखा गया । वस्तुतः "मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरा न कोई"··· इस पद का पाठ ठीक है और उसही के यह भी आश्रित है वा उसकी छाया ही है ।

४४५–(उ.)

पद–४४६ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(दर्शणानंद)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूंड़ी आवै । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावै ।। १
आवन कह्यो अजहूँ नहिं आये, जिवड़ो अति अकुलावै ।। २
तुम दरसण की आस सांवरिया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरणकमल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीराँ कूं प्रभु दरसण दीन्हों, आनँद बरण्यों न जावै ।। ५



पद–४४७ : राग–परज : कहरवा

(विरह-प्रार्थना, विरद)

मेरे प्यारे गिरधारीजी, दासी क्यों बिसार डारी । (टेर)
द्रोपदी की लाज राखी, दुख सों उबारी ।
नरसिंह रूप धार्‌यो, प्रहलाद पैज पारी ।। १
भीलनी के बेर खाये, (कछु) जाति नां बिचारी ।
कुबज्या सों नेह कीनो, गोतम नारि तारी ।। २
व्याकुल भई तुम बिना, तरसूं रैन सारी ।
मीरां कूं दरस दीजे टुक, सांवरे बिहारी ।। ३



४४६–(उ०)
४४७–(म.) (या०—प्रति सं. ७८६ । ४८ पद ५२)

पद–४४८ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(विरह)

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने लिख भेजूं री पाती । (टेक)
श्याम सनेसो कबहु न दीनो, जान बूझ गुझ वाती ।। १
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं, रोय रोय अँखियां राती ।। २
तुम देख्यां बिन कल न परत है, हियो फटत मोरी छाती ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–४४९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम, भक्ति)

मेरे मन राम नामा बसी । (टेक)
तेरे कारण स्यामसुन्दर, सकल लोगां हँसी ।। १
कोई कहे मीरां भई बौरी, कोई कहे कुल नसी ।। २
कोई कहे मीरां दीप आग री, नाम पिया सूं रसी ।
खांडे धार भक्ती की न्यारी, काटिहै जम की फँसी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सब्द सरोवर धसी ।। ५

◈ ◈ ◈

४४८–(उ.) (वं. पु. पृ. ७)
४४९–(उ.)

पद–४५० : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(चरित)

मेरे राणाजी मैं गोबिन्द गुण गाना । (टेक)
राजा रूठे नगरी राखे अपनी, हर रूठे कहां जाना ॥ १
राणा भेज्या जहर प्याला, मैं अमृत कर पी जाना ॥ २
डिबिया में काला नाग जो भेज्या, मैं सालिग्राम कर जाना ॥ ३
मीरां बाई प्रेम दिवानी, मैं सांवरिया बर पाना ॥ ४



पद–४५१ : राग–बडहंस सारंग : ताल–तिताला

(लीला)

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सों । (टेक)
मोरमुकुट पीताम्बरो गल बैजन्ती माल ।
गउवन के संग डोलत हो जसुमति को लाल ॥ १
कालिन्दी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ।
सीतल कदम की छहियाँ हो मुरली बजाय ॥ २
जसुमति के दुवरवां ग्वालिनि सब जाय ।
बरजो आपन दुलरुवाँ हमसों अरुझाय ॥ ३
बृन्दाबन क्रीड़ा करै गोपिन के साथ ।
सुर नर मुनि सब मोहे, हो ठाकुर जदुनाथ ॥ ४
इन्द्र कोप घन बरखो मूसल जलधार ।
बूडत बृज को राखेऊ मोरे प्राणअधार ॥ ५
मीरां के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लगाय ।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहि कछु न सोहाय ॥ ६



४५०–(क.) (का. ह. नं. १)
४५१–(क.)

पद–४५२ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(चरित)

मेरो मन मैं हरि सूं जोर्यो, हरि सूं जोर सकल सूं तोर्यो। (टेर)
मेरी प्रीत निरंतर हरि सूं, ज्यूं खेलत बाजीगर गोर्यो।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणो मारण कूं दौर्यो॥ १
जहर देन की घात बिचारी, निरमल जल में ले विष घोर्यो।
जब चरणोदक सुण्यो सरवणा, राम भरोसे मुख में ढोर्यो॥ २
नाचन लगी जब घूंघट कैसो, लोकलाज तिणका ज्यूं तोर्यो।
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दै मोर्यो॥ ३
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोर्यो।
मीरां सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति मुख मोर्यो॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–४५३ : राग–खमावती आसावरी : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

मेरो मन राम हि राम रटै रे। (टेक)
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे॥ १
जनम जनम के खत जु पुराने, नाम हि लेत फटै रे॥ २
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे॥ ४

◈ ◈ ◈

४५२–(उ.)
४५३–(उ.)

पद–४५४ : राग-पीलू : ताल–दीपचंदी

(निश्चय)

मेरो मन लाग्यो सखी संवलिया सों, काहु की बरजी नाहिं रहोंगी। (टेक)
जो कोउ मोको एक कहेगो, एक की लाख कहोंगी ॥ १
सासु बुरी है ननद हठीली, यह दुख काहे बहोंगी ॥ २
मीराँ प्रभु गिरधर के कारण, जग उपहास सहोंगी ॥ ३



पद–४५५ : राग–ईमन : ताल–कहरवा

(विनय)

मेरो मन हर लीनो राजा रणछोड़ ।
राजा रणछोड़, प्यारा रंगीला रणछोड़ ॥ (टेर)
[1]केशव माधव श्री पुरुषोतम, कुबेर कल्याण की जोड़ ॥ १
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे[2], माधुरी मुरली किशोर ।
मोरमुकुट शिर छत्र विराजे, कुंडल की छवि श्रोर ॥ २
[3]चार पास रत्नागर गाजे, गोमतीजी है शिरमोर ।
धजा पताका बहुत्यां फरके, झालर करत झकझोर ॥ ३
सब भक्तन के भाग्य हि प्रकटे, नाम धर्‌यो रणछोड़ ।
जे कोई तेरो नाम सुणावे, पावे युगल-किशोर ॥ ४
मीरां (बाई) के प्रभु गिरधरनागर[4], कर ग्रहो नंदकिशोर ॥ ५



४५४–(उ.) (मी. जी. का. प्र. पृ. १८)
४५५–(म.) (का. उत. । ४ । ४०६ ।)

१. पा०–"विक्रम माधव औ पुरुषोत्तम, कुंवर कल्याणी जोड़ ।
राधा रुकमणी औ सत्यभामा, जंबुकबरणी रे जोड़ ।
२. पा०–"मुख मुरली घनघोर" ।
३. पा०–"आसपास रत्नाकर सागर, गोमती करे कलोल" ।
४. पा०–"हरि मारा दिलडाना चोर" ।

पद-४५६ : राग-पीलू : ताल-तिताला

(चरित)

मेरो मन लाग्यो हरिजी सूं, अब न रहूँगी अटकी। (टेक)
गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हारें हिवड़े खटकी ॥ १
माणक मोंती परत न पहिरूँ, मैं कब की ही नटकी।
गेणो तो म्हारे माला दोवड़ी, और चंदन की कुटकी ॥ २
राजकुल की लाज गमाई, साधां के संग मैं भटकी।
नित उठ हरिजी के मंदर जास्यां, नाचां दे दे चुटकी ॥ ३
भाग खुल्यो म्हारो साध संगत सूँ, साँवरिया की वटकी।
जेठ बहू की काण न मानूँ, घूँघट पड़ गइ पटकी ॥ ४
परम गुराँ के सरण में रहस्याँ, परणांम करां लुटकी।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण सूँ छुटकी ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद-४५७ : राग-सोरठ मलार : ताल-तीलवाड़ा

(तुष्टि)

मेहा बरसबो कर रे, आज तो रमिया मेरे घर रे। (टेक)
नान्हीं नान्हीं बूंद मेघ घन बरसे, सुख सरवर भर रे। १
वहुत दिनां पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिं डर रे। २
मीराँ कहे अति नेह जुड़ायो, मिलीयो पूर्वलो बर रे। ३

◈ ◈ ◈

४५६-(उ.)
४५७-(उ.) (वं. पु. पृ. ३२)

पद-४५८ : राग- पीलू बरवा : ताल-कहरवा

(लीला)

मैया मोरे भाग जागे साधू आये पावना। (टेर)
चुवा चंदन घिस लियो आंग को लगावना ॥ १
मथुरा मां कंस मारा लंकापति रावणा ॥ २
राजा बलि द्वारे ठहरी रूप लिया भावना ॥ ३
गोकुल में जाके ठहरी द्वारका बसावना ॥ ४
मीराँ बाई हरि की दासी पद को लगावना ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद-४५९ : राग-बहार : ताल-तिताला

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं अपने सैय्याँ सँग साँची। (टेक)
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै ह्वै नाची ॥ १
दिवस भूख न चैन कबहिन, नींद निसु नासी।
बेध वार को पार ह्वैगो, ज्ञान गुह गाँसी ॥ २
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे, जैसे मधु मासी।
दास मीराँ लाल गिरधर, मिटी जग-हाँसी ॥ ३

◈ ◈ ◈

४५८-(म.)
४५९-(उ.)

पद–४६० : राग–ग्रासावरी वा ग्रासा : ताल–कहरवा

(विरद–प्रेम-भक्ति)

मैं ग्रमली हरिनांव की मुझि बाइड ग्रावै ।
पीया पियाला प्रेम का कुछि ग्रौर न भावै । (टेक)
या तन की कूंडी करूं मन पोसत भेऊं ।
ग्यांन गलणीयां हाथि ले इम्रतरस पीऊं ।। १
पीया जोगी भरथरी गुर गोरष पायो ।
धन माता मैंणावती सुत पैं राज छुड़ायो ।। २
ग्रौर ग्रमल किस काम का, चढ़ि उतर जावै ।
ग्रमल करो इक नांम का ग्रमरापुर जावै ।। ३
ग्रमल किया मावा भया सुष रैन बिहावै ।
ग्रमलन् कल हरि पुरवै जस मीराँ गावैं ।। ४



पद–४६१ : राग–वसंत : तीन ताल ठाह

(प्रेम-रहस्य)

मैं गिरधर रँग राती, ग्वैया । (टेक)
पचरँग चोला रँगा दे सखी, मैं झुरमुट खेलन जाती ।
ग्रोहि झुरमुट मेरा सांई मिलेगा, खोल तनी गल गाती ।। १
चंदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरन ग्रकासी ।
पवन पानी दोनूं ही जायगा, ग्रटल रहे ग्रविनासी ।। २
सुरत निरत का दिउड़ा सँजो ले, मनसा की कर ले बाती ।
प्रेम हटा का तेल मँगा ले, जग रह्या दिन तैं रातो ।। ३
जिनके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती ।
मेरे पिया मेरे मांहि बसत हैं, कहूं न ग्राती जाती ।। ४
पिहरे बसूं न बसूं सास घर, सद्गुरु शब्द सुनासी ।
नाँ घर तेरा नाँ घर मेरा, कह गई मीरां दासी ।। ५



४६०–(क.) (रामस. गु. पृ. २७६)
४६१–(म.) (बृ. रा. र. पृ. १२२)

पद–४६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मैं जांण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइ री। (टेक)
आये मेरे सजना फिरि गये अंगना, मैं अभागण रही सोइ री ॥ १
फारूंगी चोर करूं गल-कंथा, रहूंगी वैरागण होइ री ॥ २
चुरिया फोरूं, मांग बखेरूं, कजरा मैं डारूं धोइ री ॥ ३
निस बासर मोहि विरह सतावैं, कल न परत पल मोइ री ॥ ४
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, मिलि बिछुरो मति कोइ री ॥ ५



पद–४६३ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेम)

मैं तेरै रंग राती गुसंइयां, मैं तेरे रंग राती। (टेक)
औरां के पिया परदेस बसत हैं, लिष लिष भेजै पाती।
मेरा पिया मेरै निकट बसत है, मैं कह न सकूं सरमाती ॥ १
सुवा सुवा चोला पहर सषी मैं, झरमट षेलन जाती।
षेलत षेलत मिले सांवरे, षोल मिली हिय गाती ॥ २
मदवा पी पी सब मदमाती, मैं बिन पीयाँ मदमाती।
प्रेम भटी का मैं रस चाष्या, (मैं) छकी रहूं दिन राती ॥ ३
वह दूल्हौ मोहि ब्याहन आवै, आप कृष्ण ब्रजबासी।
मीराँ कै गिरधर मन मान्यों, मैं स्यामसुंदर की दासी ॥ ४



४६२-(उ.)
४६३-(म.) (राम स. गु.)

पद–४६४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

मैं तो तेरी सरण परी रे रामाँ, ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार । (टेर)
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाहीं मानी हार ।। १
या जग में कोई नहीं अपणां, सुनियौ श्रवण कुमार ।। २
मीराँ दासी राम भरोसे, जम का फंद निवार ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४६५ : राग–भैरवी : ताल–दीपचंदी

(विनय)

मैं तो थारे दामन लगी जी गोपाल । (टेक)
किरपा कीजो दरशण दीजो, सुध लीजो तत्काल ।। १
गल वैजंतीमाल बिराजै, दर्शण कर भई हूँ निहाल ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भक्तन के रछपाल ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४६६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

मैं तो थारे बिड़द भरोसे अविनासी, मैं तो थारे० । (टेक)
या जग माहीं स्वामी तुम पत राखो, मत नै कराज्यो जग हाँसी ।। १
तंत्र न जानूं स्वामी मंत्र न जानूं, वेद पढ़ी नहिं कासी ।। २
अब तो सांवरिया मोहे दरसण दीज्यो, मत नै कराज्यो म्हारी हाँसी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण-कँवल की मीराँ दासी ।। ४

◈ ◈ ◈

४६४–(उ.)
४६५–(उ.) (वृ. रा. र. पृ. ५४७)
४६६–(उ.)

पद–४६७ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मैं तो राज़ी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिले इक छिन में। (टेक)
पिया मिल्या मोहि किरपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ॥ १
सतगुरु सबद लखाया अंसरी[1], ध्यान लगाया धुन में ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मगन भई मेरे मन में ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–४६८ : राग–बहार : ताल–तिताला

बिहारी भाषा

(विरह)

मैं तो लागि रही नँदलाल से ॥ (टेक)
हमरे बांटहिं दूज न यार, लाल लाल पगिया झिन झिन बार ॥ १
सांकर खटुलना दुइ जन बीच, मन कइले बरषा तन कइले कीच ॥ २
कहां गइलें बछरू कहां गइलीं गाय, कहां गइलें धेनु चरावन राय ॥ ३
कहां गइलीं गोपी कहां गइलें बाल, कहां गइले मुरली बजावनहार ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरलाल, तुम्हरे दरस बिनु भइल बेहाल ॥ ५

◈ ◈ ◈

४६७–(म.)
१ पा० = अंतरी।
४६८–(क.)

पद–४६६ : राग–देश : ताल–तिताला

(प्रेम-कामना)

मैं तो म्हारा रमिया नें देखवो करूँ री । (टेर)
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूं री ।। १
जहां जहां पांव धरूं धरणी पर, तहां तहां निरत करूँ री ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणां लिपट परूँ री ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४७० : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

मैं तो सांवरे रँग राची । (टेक)
सजि सिंगार बांध पग घुंघरूँ, लोकलाज तजि नाची ।। १
गई कुमति लई साधु-संगति, भगत रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल व्याल सों बांची ।। ३
उण विन सब जग खारो लागत, और बात सब कांची ।। ४
मीराँ श्री गिरधरनलाल सूं, भगति रसीली जांची ।। ५

◈ ◈ ◈

४६६–(उ.) (वं. पु. पृ. २५)
४७०–(उ.) (मीरां प. वि. कु. मुं. पृ. ७७)

पद–४७१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं तौ सुमरया छै मदनगोपाल, राणांजी म्हारो कांई करसी । (टेक)
मीराँ बैठ्या महल में जी, छापा तिलक लगाय ।
आया राणांजी महल में जी, कोप करयो छै मन मांय ।। १
मीराँ महलां सें ऊतरया जी, ऊंटां भार कसाय ।
डावो छोड्यो मेड़तो, कोई सूदा द्वारका जाय ।। २
राणांजी सांड्यो भेजियो जी, पाछा लावो मोड़ ।
घर की नार इस्तरी चाली (छै) मुड़ राठोड़ ।। ३
लाजै पीहर सासरो जी, लाजै माय'र बाप ।
लाजै दूदाजी रो मेड़तो जी, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ४
त्यारूं पीहर सासरो जी, त्यारूं माय'र बाप ।
त्यारूं दूदाजी रो मेड़तो, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ५
(राणांजी) विष का प्याला भेजिया जी, द्यो मीराँ के हाथ ।
कर चरणामृत पी गया जी, आप जानो दीनानाथ ।। ६
पेयां नाग छोड़िया जी, छोड़ो मीराँ के महल ।
हिवड़े हार हिंडोलिया, कोई तुम जानो रघुनाथ ।। ७

◈ ◈ ◈

पद–४७२ : राग–वहार : ताल–तिताला

(प्रेम)

मैं तो हरि गुण गावत नांचूँगी । (टेक)
अपने महल में बैठ कर प्रभुजी, गीता भागवत बांचूंगी ।। १
ज्ञान-ध्यान की गठरी बाँध कर, हिरदे मन में राचूंगी ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सदा प्रेम रस चाखूंगी ।। ३

◈ ◈ ◈

४७१-(का. ह. नं. १)
४७२-(उ.) (ब्रह्मानन्द भजनलहरी पृ. ५–६)

पद–४७३ : राग–नट : ताल–पश्तो

(भक्ति-महिमा)

मैं तो हरि चरणन की दासी, अब मैं काहे को जाऊं कासी। (टेक)
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट हैं अविनासी।
घट ही में पुसकर औ लोधेश्वर, लछिमन कँवर बिलासी ।। १
जगंनाथ गंगासागर हैं साखी गुपाल ब्रजबासी।
सेतुबंध रामेश्वर ईश्वर, मूल बटी सुरजा सी ।। २
अवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी।
गोवरधन गोकुल वृन्दावन, बीच मँडल चौरासी ।। ३
हरिद्वार कुरुखेत जनकपुर, गोदावरी हुलासी।
तीरथ बड़े प्रयाग गयाजी, कासी तरुवर वासी ।। ४
विंध्याचल रु ग्रिनार रंग हैं, सुघर कपिल दुखनासी।
वदरीनाथ केदार गंगोतरि, वैजनाथ कैलासी ।। ५
पंचवटी पंपापुर रुक्मिणि, देव कपिल युवरासी।
नैमषार श्रृंगी रिष मिसरिष, कासी पाप–बिनासी ।। ६
मटुकनाथ अरु मानसरोवर, मानलता अरु हाँसी।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फाँसी ।। ७



४७३–(म.) (आ. सा. भा १ पृ. १३४–३५)

पद–४७४ : राग–परज : ताल–धीमा

(प्रेम)

मैं थारे गुण रीझी हो रसिक गोपाल । (टेर)
निस बासर मोय आस तिहारी, दरसन द्यो नंदलाल ।
सो मद भगत करो जनि सादो, मत बिसरो नंदलाल ।। १
काहू के चंदो काहू के मंदो, काहू के उर में माल ।
प्रेम भरी मीराँ जिन गरजै, हिरदै गिरधरलाल ।। २
(येक) घड़ी घड़ी पल मोये जुग सम बीतत, हो गई हाल बेहाल ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, छुट गई जग जंजाल ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४७५

(बाल-लीला)

मैं नाहीं दधि खायो जसोदा मैया । (टेर)
प्रात समय गौवन के पीछे, मधुवन मोहि पठायो ।। १
सारे दिन (मैं) बंसीबन भटक्यो, सांझ पड़े घर आयो ।। २
ले ले अपनी लकुटि कटुलिया, बहुत हि नाच नचायो ।। ३
मैं ढोटो पावन को छोटो, ये बिन कैसे पायो ।। ४
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, माखन मुख लपटायो ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जसुमत कंठ लगायो ।। ६

◈ ◈ ◈

४७४–(प्रभुनारायणजी के गु. से सं. १६)
४७५–(चि.) (का.। उ. २।३६६)
नोट—इस वर्णन का पद सूरदासजी का है । संभवत: उस ही की छाया ले कर यह रचा गया हो, अथवा कुछ हेरफेर से मीराँ नाम धर दिया हो । सं० ।।

पद–४७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

मैंने सारा जंगल ढूंढा रे जोगीड़ा न पाया । (टेर)
कानूं बिच कुन्डल (जोगी) गले बीच सेली ।
घर घर अलख जगाया रे ।। जोगीड़ा०
अगर चंदन की (जोगी) धूणी धबाई ।
अंग (बीच) भभूत लगाया रे ।। जोगीड़ा०
(बाई) मीराँ के प्रभु गिरधर नागर ।
शब्द का ध्यान लगाया रे ।। जोगीड़ा०

◈ ◈ ◈

पद–४७७ : राग–वीलावल : ताल–तिताला

(विरह)

मैं विरहिन बैठी जागूं, जगत सब सोवै री आली । (टेक)
विरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवै ।। १
इक विरहिन हम ऐसी देखी, अँसुवन की माला पोवै ।। २
तारा गिन गिन रैन बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मिल के बिछुड़ न जावै ।। ४

◈ ◈ ◈

४७६–(उ.)
४७७–(उ.)

पद–४७८ : राग–पीलू बरवा : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं मेरो हरि सैं जोड़्यो, हरि सैं जोड़ सकल सैं तोड़्यो । (टेक)
हरि भक्तन की संगत कीनी, राणूँ लै मारण कूँ दौड़्यो ।
मेरो मन गिरधर सूँ लाग्यो, ज्यूँ बाजीगर नाचत दौड़्यो ।। १
बिष हि दैन को मतो उपायो, माही लै तुलसी जल छोड़्यो ।
जब मैं श्रवण सुण्यो चरणामृत, राखि भरोसो मुख में डार्‌यो ।। २
नाच नची जब घूँघट कैसो, लोकलाज तुणका ज्यूँ तोड़्यो ।
मीराँ सरण सबल गिरधर की, कहा भयो किण ने मुख मोड़्यो ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४७९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

मैं हरि बिन क्यों जीऊँ री माय । (टेक)
पिय कारन बौरी भई, जस काठहि घुन खाय ।
औषध मूल न संचरे, मोहि लागो बोराय ।। १
कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि तें उपजाय ।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मर जाय ।। २
पिय ढूंढ़न बन बन गई, कहुँ मुरली धुन पाय ।
मीराँ के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ३

◈ ◈ ◈

४७८–(म.) (दीना. मं. मी. प. २१)
४७९–(म.)

पद–४८० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा, तिताला

(विनय)

मोरी गलियन में आवो जी घनश्याम । (टेक)
पिछवाड़े आय हेला दीजो, ललिता सखी है मेरो नाम ।। १
हा हा करत हूं पैयां परत हूं, मत करो मान गुमान ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, तव चरनन में ध्यान ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४८१ : राग–काफी वा घुमर : ताल–कहरवा

(चरित)

मोरी ज्यान मोहोव्बत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सों । (टेक)
मीराँ गढ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक लगाय (बनाय) ।
पगां बजावै घूघरा जी, हात वजावै ताल ।
दोन्यां की जोड़ी मिल गई रे ।। १
सेज रमां और सुख करां जी, करस्यां रँग मतवाल ।
मीराँ नै गिरधर मिल्या जी, आवागमन निवार ।
रूप में रल गई रे ।। २

◈ ◈ ◈

४८०–(मीराँबाई के भजन नं० २६)
४८१–(क.)

पद–४८२ : राग–कालंगडा : कहरवा

(विरद विनय)

मोरे प्यारे गिरीवरधारीजी दासी क्यों विसार डारी ।
द्रोपदी की लाज राखी सब दुख से निवारी ।।
प्रह्लाद पैज पारी, नृसिंह देह धारी ।
भिलणी के झूंटे बेर खाये कछु जात ना विचारी ।।
कुबजा सों नेह लाया और गोतम की नारि तारी ।
प्यासी फिरौं दरस बिन तलफौं मोहे काहे विसारी ।।
मीरां को दरसन दीजे गिरिधर अपनी ओर निहारी ।।



पद–४८३ : राग–वागीश्वरी : ताल–झपताल, चौताला

(विरहाधिक्य)

मो-सी दुखिया कूं लोग सुखिया कहत हैं । (टेक)
ऐसो री अड़ीलो कंथ दीयो है विधाता मोकूं ।
सेज हू न आवै ध्यारौ न्यारौ ही रहत है ।। १
तारा तौ अंगारा भया सेज भई भाषसी ।
पीया को पिलंग मांनूं आगि जू रहत है ।। २
जरि बरि षाष मैं तो भीतर बेहाल भई ।
बिरह की करवत मेरा हीया में बहत है ।। ३
द्यौस तो यूं ही गयौ रैंनि हू बिहानी है ।
मीरां तो बेहाल भई दरस कूं चहत है ।। ४



४८२–(म.)
४८३–(क.) (राम स. गु. पृ. २२५)

पद–४८४ : राग–कालँगडा : ताल–कहरवा

(विरह)

मोहन आवन की कोई कीजो रे, आवन की मनभावन की । कोई०
आप न आये पतियां न भेजे, ये बात ललचावन की । कोई०
बिन दरसन व्याकुल भई सजनी, जैसी बिजलियां सावन की । कोई०
कहा करूं कित जाऊँ मोरी सजनी, पांख हुये तो उड जावन की । कोई०
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, इच्छा लागी हरि पायन[1] की ।। कोई०

◈ ◈ ◈

पद–४८५ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

मोहन मुसक्याने सखी, लागे सोही जाणे । (टेक)
मैं जल जंमुना जात बृन्दाबन, वो पीछे से आणे ।
काँकरी दे मोरी गगरी गिराई, जोरी से बैंयां मरोरी,
सखी कोई रीत न जाणे ।। १
मैं दधि वेचन जात बृन्दाबन, वो सामे से आणे ।
दधि की मटकी सिर से गिराई, लूट लूट दधि खाणे,
सखी कोई मरम न जाणे ।। २
घायल की गति घायल जाणे, जे कोई निकसे प्राणे ।
मीराँ को कह्यो वुरो न मानो, आखिर जात अहोर,
सखी ये प्रीत न जाणे ।। ३

◈ ◈ ◈

४८४–(उ.)
पा.–१–बतलावन की
१४–(देखो–कोई कहियो रे)
४८५–(क.) (पूं. स्व. ना.)

पद–४८६ : रांग–खमाच : ताल–तिताला

(भक्ति-दर्शन)

मोहन लागत प्यारा राजाजी, मोहन लागत प्यारा। (टेर)
जिन की कला से हालत चालत धरण अकास अधारा।
जिन को कल में सब जग भूल्यो ये ही पुरुष है न्यारा ॥ १
तुम भी झूँठे, हम भी झूंठे, झूंठे सब संसारा।
नारि पुरुष के सम्बन्ध झूँठे तो फूटया हिया तुम्हारा ॥ २
तुम ही कहो अरधंगा हमारी, हम हूँ लगाया कारा।
कोटि ब्रह्मांड में ब्यापि रह्यो है सो निज वर है हमारा ॥ ३
सालू पीतांबर मोतिन की माला, लेई अगन में जारा।
छाप तिलक तुलसी की माला, साधु संग निसतारा ॥ ४
हरि के भजन बिन जो दिन खोये, धिक मनषा जनम जमारा।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर शरण को विरद संभारा ॥ ५



पद–४८७ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(भक्ति)

मोहे लागी लगन गुरु-चरनन की। (टेक)
चरन बिना कछुवै नहिं भावै, जग-माया सब सपनन की ॥ १
भवसागर सब सूखि गयौ है, फिकर नहीं मोहि तरनन की ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आस वही गुरु-सरनन की ॥ ३



४८६–(का० । उ० १।३१६)
४८७–(उ.)

पद–४८८ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेम-लीला)

यदुवर लागत है मोहिं प्यारो । (टेक)
मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धारो ।
जन्मत ही पूतना गति दीनी, अधम उधारन हारो ॥ १
यमुना के तीरे धेनु चरावे, ओढे कामल कारो ।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन, पीताम्बर पटवारो ॥ २
मोरमुकट मकराकृत कुण्डल, कर में मुरली धारो ।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै, संतन को रखवारो ॥ ३
जल डूबत ब्रज राखि लियौ है कर पर गिरिवर धारो ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जीवन प्राण हमारो ॥ ४

४८८–(म.)

पद–४८९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(चेतावनी)

यहि बिधि भक्ति कैसे होय।
मन की मैल हिय तैं न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥ (टेक)
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि चंडाल।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल ॥ १
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत।
दीन हीन व्है छुधा रत से, राम नाम न लेत ॥ २
आप ही आप पुजाय केरे, फूले अँग न समात।
अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहाँ ठहरात ॥ ३
जो हिये अन्तर की जानै, तासों कपट न बनै।
हिरदे हरि को नाम न आवै, मुख तैं मनिया गनै ॥ ४
हरी हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग।
दास मीराँ लाल गिरधर, सहज कर बैराग ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–४९० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(लीला)

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना। (टेक)
ले मटुकी शिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द के छौना ॥ १
दधि को नाम बिसर गई ग्वालनि, ले लेहु री कोउ श्याम सलौना ॥ २
वृन्दाबन की कुंज गलिन में, आँख लगाय किया कित गौना ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर श्याम सुघर रस लौना ॥ ४

◈ ◈ ◈

४८९–(२ म.)
४८०–(२म.) (बृ. रा. र. पृ. १२४)

पद—४९१ : राग—काफी : ताल—कहरवा

(प्रेम)

या मोहन के मैं रूप लुभानी । (टेक)
हाट बाट मोहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं सारी न जानी ॥ १
सुन्दर बदन कमलदल लोचन, बाँकी चितवन'रु मंद मुसकानी ॥ २
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, बंसी में गावै आली मीठी-मीठी बानी ॥ ३
तन मन धन गिरधर पै वारूँ, चरण कमल मीराँ लपटानी ॥ ४



पद-४९२ : राग—कल्याण : ताल—दादरा, तिताला

(प्रेम-विरह-वर्णन)

यों आवति मन मैं री मोहि न गोपाल फिरों री ।
निरखत ही बारिज बदन अति विबस भई हों री । (टेर)
कर मुरली लुकटी लै (अरु) पीत बसन धारो ।
काछ खुभी गोपबेष गोधन बन चारो ॥ १
हमहुँ भई गुल्मलता बृन्दाबन रैनो ।
खग मृग पसु मर्कट मिलि श्रवन सुनत बैनो ॥ २
गुरजन गृह लाज कठिन कासों दुख कहिये ।
मीराँ प्रभु गिरधर बिन कैसे ब्रज जीये ॥ ३



४९१-(उ.) (वृ. रा. र. पृ. ५४७)
४९२-(उ.) (या०—प्रति सं. ७०५ । ४२ का पद २३८)
नोट—इस पद के अंतरे 'ताल दादरा' में वैठते हैं परंतु स्थाई उक्त ताल में नहीं वैठती । इससे अनुमान होता है कि दो भिन्न २ पदों का भूल या अज्ञान से मिश्रण हुआ है ।

पद–४९३ : राग–सारंग घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेमदृढ़ता)

यो तो रँग धत्ताँ हि लाग्यो हे माय । (टेक)
पिया पियाला अमरत[1] रस का, चढ़ गई घूम घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरै, कोट करो न उपाय ॥ १
साँप पिटारा में राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार ।
हँस हँस मीराँ कंठ लगायो, यो तो म्हारे नोसर हार ॥ २
विष को प्यालो राणाजी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्द रा गाय ॥ ३
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सुहाय[1] ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, काचो रंग उड़ जाय ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–४९४ : राग–झंझोटी वा गंधारी टोडी : ताल–तिताला

(प्रेमप्रवाह)

रघुनन्दन आगे नाचूँगी[1] । (टेक)
नाँच नाँच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ॥ १,
प्रेम प्रीत का बाँध घूघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ॥ २
लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी ॥ ३
पिया के पलँगा जा पौढूंगी, मीराँ हरि रँग राचूँगी ॥ ४

◈ ◈ ◈

४९३–(म.) १—पा० राम हि रस ।
[1]"यो तो रँग म्हारा स्यामसुंदर को जनम जनम नहिं जाय" (ऐसा भी पाठ है)
(देखो "धत्तां लाग्यो हे माय–राम रंग······" ।)
४९४–(उ.)
[1]पाठान्तर—(१) मैं गिरधर आगे नांचूंगी ।
(२) चितनंदन आगै नांचूंगी ।
(३) नंदनंदन आगे नांचूंगी ।

पद–४९५ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

रटता क्यों नहिं रे हरिनाम, तेरे कौडी लगे नहीं दाम । (टेर)
नर देह सुमिरन कूं दीन्ही, बिन सुमिरे बेकाम ।। १
बालपणो हँस खेल गुमायो, तरुण भयो बस काम ।। २
पाँव दिया तोहे तीरथ करने, हाथ दिये कर दान ।। ३
नयन दिये तोहे दरसन करने, श्रवण दिये सुन ज्ञान ।। ४
दाँत दिये तेरे मुख की शोभा, जीभ दिई भज राम ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, है जीवन बेकाम ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–४९६ : राग–तिलंग : ताल–दीपचंदी

(ज्ञानोपदेश)

रमइया बिनि यो जिवड़ौ दुख पावै, कहौ कुण धीर बँधावै । (टेक)
यौ संसार कुबधि को भांडो, साध सगति नहीं भावै ।। १
राम नाम की निन्दा ठाँणै, करम अकरम हि कुमावै ।। २
राम नाम बिन मुकति न पावै, फिर चौरासी जावै ।। ३
साध संगत में कबहुँ न जावै, मूरख जनम गँमावै ।। ४
जन मीराँ सतगुर के सरणैं, जीव परमपद पावै ।। ५

◈ ◈ ◈

४९५–(उ.)
४९६–(म.)

पद–४६७ राग– विहाग : ताल–कहरवा

(विरह)

रमइया बिन रह्यो ही न जाई । (टेक)
खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणाँ रहे मुरझाई ।। १
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाई ।। २
मीराँ कहै हरि तुम मिलियाँ बिन, तरस तरस तन जाई ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–४६८ : राग–बरवा वा सोरठ : ताल–तिताला ठाह

(चरित और दृढ़ता)

रमस्याँ सादूड़ां री लार, यो तो मन लाग्यौ वैराग में । (टेक)
रमती जोयो मीराँ काँकरो, सेवा सालगराम ।
धूप दीप ले मैं पूजती, यो बर म्हारो सरदार ।। १
सादूड़ा तो आया मीराँ बाग में, कानाँ सुणी छै अवाज ।
आयोड़ा सादाँ नै दीज्यौ बैसणो, पंखा पवन डुलाय ।। २
लिख रे पत्र राणे भेजियो, दीजो मेड़तणी रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणी छोड़ द्यो, करो नी उदियापुर रो राज ।। ३
लिख रे पत्र मीराँ भेजियो, दीज्यो मेवाड़्यां रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणा ना छुटै, काँई कराँला थारो राज ।। ४
सिंघ पकड़ राणो जुड़ दियो, मीराँ सेवा करबा जाय ।
खोल किंवाड़ी मीराँ देखियो, हो गयो निरसँघ औतार ।। ५
बिड़द छाँडूं तो लाजै मेड़तो, लाजै राणूं सिरदार (साथ) ।
मीराँ तो दासी थारी जनम की, थे जाणूं दीनानाथ ।। ६

◈ ◈ ◈

४६७–पा० = जाय, मुरझाय, दिन जाय, तन जाय ।
४६८–(सं.) (३ क०)

पद–४९९ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

रमैया बिन नींद न आवै, (बिरह सतावै), प्रेम की आँच ढुलावै। (टेक)
बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै।
पिया बिना मेरी सेज अलूनी, जागत रैन बिहावै,
पिया कबरै घर आवै ॥ १
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनावै।
घुमड घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै,
नैन मोरे भर लावै ॥ २
कहा करौं कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कोन मिटावै।
विरह नागिन मोरी काया डसी है, लहर-लहर जिय जावै,
जडी घसि लावै हि लावै ॥ ३
को हे सखी सहेली सजनी, पिया कूं आनि मिलावै।
मीराँ कूं प्रभु कब रे मिलोगे, मनमोहन मोहि भावै,
कबै हँस कर बतलावै ॥ ४

◈ ◈ ◈

४९९–(ट.) (१ उ.) (वं. पु. पृ. १४)

पद–५०० : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम, विरह)

रमैया मैं तो थारे रँग राती। (टेक)
अउराँ[1] के पिय परदेस बसत हैं, लिख-लिख भेजें पाती।
मेरे पिया मेरे हिये बसत हैं, गुंज करूँ दिन राती॥ १
चूबा[2] चोला पहिर सखी री, मैं झुरमुट रमबा जाती।
झुरमुट में मोहि मोहन मिलिया, खेल मिलूँ गलबाँही[3]॥ २
अउर[4] सखी मद पी पी माती, मैं बिन पियाँ मदमाती।
प्रेम-भटी को मैं मद पीयो, छकी फिरूं दिन राती॥ ३
सुरत निरत का दिवला सँजोया, मनसा पूरन बाती।
अगम-घानि का तेल सिंचाया, बल[5] रही दिन राती॥ ४
दासी मीराँ के प्रभु गिरधर, हरि चरणाँ की दासी[6]॥ ५



५००–(म.) (बं. पु. पृ. ३५)
पाठान्तर (१.उ), १ औराँ, २ चूडा, ३ गलछाही, ४ और, ५ बली, ६ राती।

पद–५०१ : राग–भैरवी : ताल– तिताला

(विरह)

रस भरिया महाराज, मोकूं आय सुनाई बांसुरी । (टेक)
सुन बांसुरी भई बावरी, निकसन लाग्यो सांस री ॥ १
रकत रती भर नां रह्यो री, नांहि मांसा भर मांस री ॥ २
तन तिनका सो व्है गयो, रही निगोरी सांस री ॥ ३
मैं जमुनाजल भरन जात ही, मांसा ननद की त्रास री ॥ ४
मीराँ कूं प्रभु गिरधर मिल गये, पूजी मन की आस री ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–५०२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

रसिक गुपाल मैं थारे गुण रीझी हो (रसिक गुपाल) । (टेक)
निस बासर म्हारै आस तिहारी, दरसण द्यो नंदलाल ॥ १
सो मद भगत करो जिन साधो, मत बिसरो नंदलाल ॥ २
काहू के चंदो काहू को मंदो, काहू के उर माल ॥ ३
प्रेम-भरी मीराँ घन गरजे, हिरदै गिरधरलाल ॥ ४

◈ ◈ ◈

५०१–(१ उ.) (स. मा. मी. ली. २५)
५०२–(उ.) (दीना. मं. मी. प. १८)

पद—५०३ : राग—सिन्दूरा : ताल—धमार

(लीला)

रँग भरी रँग भरी रँग सूँ भरी री।
होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री। (टेक)
उड़त गुलाल लाल भये बादल,
पिचकारिन की लगी झरी री॥ १
चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर गागर भरी धरी री।
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर,
चेरी होय पायन् में परी री॥ ३

◈ ◈ ◈

५०३—(उ.)

पद–५०४ : राग–मारू : ताल–एकताला

(जीवदशा, उपदेश)

राणाँजी कर्मां रो सँगाती, कुल में कोई नहीं। (टेक)
एक तो माता रै दोय दोय डीकरा, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत
वाँकी न्यारी न्यारी करमां रेष। राणाँ० ॥ १
एक तो राजाजी री गद्दी बैठिया, दूजो हल'र बैल भरतो पेट।
राणाँ० ॥ २
एक तो माता रै दोय दोय डीकरी, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष। राणाँ० ॥ ३
एक तो मोतियन मांग भरावती, दूजी घर-घर की पनिहार।
राणाँ० ॥ ४
एक तो गऊ रे दो-दो बाछड़ा, ज्यांकी न्यारी भाँत,
वाँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष। राणाँ० ॥ ५
एक तो महादेवजी रै मंदिर नादियो, दूजो बणजारा रे हाथ।
राणाँ० ॥ ६
एक तो कुम्हार रे दोय दोय मटकियाँ, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमां रेष। राणाँ० ॥ ७
एक तो महादेवजी रे मंदिर जल चढै, दूजी चमाराँ रे हाथ,
राणाँजी करमाँ रो सँगाती, जग में कोई नहीं ॥ ८



५०४–(सं०, ३ क)

पद–५०५ : राग–वागेश्वरी, कानड़ा : ताल–तिताला

(राणाँ-संवाद)

राणाँजी तें जहर दियो मैं जाणी । (टेक)
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबांणी ।। १
लोकलाज कुलकाण जगत की, दी बहाय ज्यूँ पांणी ।। २
अपने घर का[1] परदा कर लो, मैं अबला बौरांणी ।। ३
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकांणी ।। ४
सब संतन पर तन मन वारों, चरणकमल लपटांणी[2] ।। ५
मीराँ के प्रभु राख लई है, दासी अपनो जाणी ।। ६

◈ ◈ ◈

४०६–(भक्त-चरितावली पृ. १४८)
पा० १—कुल का ।
पा० २—"स्वपच भक्त वारौं तन मन तैं हौं हरि हाथ विकानी ।
मीराँ के प्रभु गिरधर भजिवे को, संत-चरण लपटानी ।।"
देखो—"राणाँजी जहर दियो म्हे जाणी ।।

पद–५०६ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणांजी थारो देसड़लो रँग रूड़ो । (टेक)
थांरे[1] मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग बसे सब कूड़ो ।। १
पाट[2] पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बांध्यो छै जूड़ो ।। २
माणिक[3] मोती सब ही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ो ।। ३
मेवा मिसरी[4] मैं सब ही त्यागा, त्याग्या छै सक्कर बूरो ।। ४
तन की मैं आस कबहुँ नहिं कीनी, ज्यूँ रण मांही सूरो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बर पायो मैं पूरो ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–५०७ : राग–ईमन, विलावल : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी थे क्याने राखो मोसूँ बैर । (टेक)
राणाँजी[1] म्हाँने ऐसा लगत है, ज्यूँ बिरछन में कैर ।। १
मारू[2] धर मेवाड़, मेरतो, त्याग दियो थांको सैर ।। २
थारे रूस्याँ राणाँ कुछ नहिं बिगड़े, अब हरि कीनी म्हैर ।। ३
मीराँ के[3] प्रभु गिरधरनागर, हठ कर पी गई ज्हैर ।। ४

◈ ◈ ◈

५०६–(१ उ.)

१ पा०—रामनाम की भक्ति न भावै ।

२ पा०—गहणो तो गांठो मीरां सब ही त्याग्यो, त्याग्यो छै वैया रो चूड़ो ।

३ पा०—साल दुसाला मीराँ सब सोई, त्याग्या, सिर पर बाँध्यो छै जूड़ो ।

४ पा०—मेवा मिठाई मीराँ सब ही त्यागे, त्याग्यो छै साग और बूरो ।

५०७–(म.)

१ पा०—"आप राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो, जैसा जंगल कैर ।"

२ पा०—"मारे घर मेवाड़, मेड़त्यो, नारा छोडचा सहर ।"

३ पा०—कहै ।

४ पा०—रामभरोसे पियो जहर ।

पद–५०८ : राग–आसा मांड : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास, पूर्वजन्म)

राणाँजी म्हारी प्रीत पुरबली मैं क्या करूँ ? (टेक)
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हारा हियरा ठराय ।
भोजनिया नहिं भावे म्हाँने, नींदड़ली नहिं आय ॥ १
बिष का प्याला भेजिया जी, जावो मीराँ पास ।
कर चरणामृत पी गई, म्हारे रामजी को विस्वास ॥ २
विष का प्याला पी गई जी, भजन करे राठोर ।
थाँरी मारी ना मरूँ, म्हारो राखणहारो और ॥ ३
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निश्चय धार ।
रामजी काज सँवारिया जी, म्हाँने भावें गरदन मार ॥ ४
पेयाँ बासक भेजिया जी, ये है चन्दनहार ।
नाग गले में पहरिया जी, म्हारे महलाँ भयो उजार ॥ ५
राठोड़ाँ की धीयड़ी जी, सीसोद्याँ के साथ ।
ले जाती बैकुंठ को जी, म्हारी नेक न मानी बात ॥ ६
मीराँ दासी राम की जी, राम गरीबनिवाज ।
जन मीराँ की राखजो जी, बाँह गहे की लाज ॥ ७



५०८–(३ क.)

पद–५०९ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो,
हो राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो। (टेक)
व्यापक होय रह्यो घट-घट में, है सब ही से न्यारो।
अन्तर घट की सब ही जाणे, सब ही को सरजणहारो ॥ १
आप तो भेज्या बिषरा प्याला, दे मीराँ ने मारो
कर चरणामृत पी गई जी, गिरधर संकट टारो ॥ २
जन्म-जन्म रो पति परमेश्वर, राणोंजी कोन विचारो !
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, साँचो बँसरीवारो ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–५१० : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारो काँई करसी, मैं तो सेया छै श्रीभगवान। (टेक)
पगां बजावै मीराँ घूघरा, हाथां बजावै झाँझ।
साँवरियो म्हाँने दरसण देसी, परभाताँ और साँझ ॥ १
नाग-पिटारी राणाँजी भेजी, हो गयो सालगराम।
विष रो प्यालो राणाँजी भेज्यो, चरणामृत कियो पान ॥ २
साधाँ री संगत मीराँजी छोड़ो, साधां रो संत सुभाव।
साधाँ री संगत राणाँजी नै छोड़ाँ, गहरो लाग्यो छै घाव ॥ ३

◈ ◈ ◈

५०९–(१ उ.) (मी. प. जमा. राम. ८)
५१०–(३ क.) (मीराँवाई के भजन नं. १६)

पद-५१२ : राग-सोरठ, कानड़ा : ताल-झुमरा

(राणाँ-संवाद)

राणाँजी (म्हाँने) जहर दियो म्हे जाणी । (टेक)
अपना[1] कुल का पड़दा कर ल्यो, म्हे[2] अबला बहौराँणी ।। १
जब लग कंचन कसिये नांही, होत न बाराबाँनी ।। २
प्रभुजी मेरो न्याव कियो है, छाँण्यों दूध'र पाँणी ।। ३
कोटिक भूप वारौं संतन परि, जिनके हाथ बिकाँनी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, संत चरण लपटाँणी ।। ५

◈ ◈ ◈

५१२-(१ उ.) (क. ब. २७)
(नोट—
पा०—१ हम ।
पा०—२ "अपने घर का परदा कर लो मैं अबला बौराँनी" ।
सिवाय पा०—३ "राणाँजी परधान पठायो सुनजो जी थे राँणी ।
जो साधन को संग निवारो करूँ तुमें पटराँणी" ।।
सिवाय पा०—४ "हथलेवो राणाँ सँग जुड़ियो, गिरधर घर पटराणी ।
कोड़ भूप साधाँ पैं वारूं जिनकी सरण रहाँणी" ।
पा०—५ मीराँ को पति एक रमैयो, चरण कमल लपटाँनी
(मुं. देवीप्रसादजी की पुस्तक से पा. १ से ५ तक)

पद–५१३ : राग-बिहाग : ताल–दीपचंदी

(भक्ति-दृढ़ता)

राणाँजी[1] म्हाँनें याही बदनामी मीठी । (टेक)
साँकड़ली सेर्‌याँ मैं म्हाँनें साधूजन मिलिया, क्यूंकर फिरूँ अपूठी ।। १
रामजी सूं मैं तो बात करै छी, दुरजन लोगाँ दीठी ।। २
बुराँजी कहौ नैं कोई भलाँजी कहो नैं, नैं मानो किसी की बसीठी ।। ३
जन 'मीराँ' कहै निन्दक प्राणी, जल बलि होइ(न) अँगीठी ।। ४



पद–५१४ : राग–आसावरी वा सोरठ : ताल–दीपचंदी

(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी मैं साँवरे रँग राची । (टेक)
साज सिगार बाँध पग घुँघरू, लोक लाज तज नाची ।। १
गई कुमति लई साधन संगति, भक्त रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल व्याल सूं बांची ।। ३
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ।। ४
मीराँ श्रीगिरधरनलाल सूं, भक्ति रसीली जांची ।। ५



५१३-(१ उ.) (क. ब. २१)
नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने के कारण पूरा पद लिखा गया ।
पा०—१ "याही बदनामी मीठी हो,
राणाँजी (थारी) याही बदनामी मीठी । (टेक)
रावली ड्योढ्यां मैं सतगुर मिलीया, किस विधि फिरूं जी अफूटी ।। १
सतसंगति मैं ज्ञान सुणें छी, दुरजन लोगाँ मोहि दीठी ।। २
यो मन मेरौ हरिमैं बसीयौ, जैसें रंग मजीठी ।। ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, दुरजन जलो ज्यूँ अँगीठी ।। ४
(रामस. गु. पृ. ३१८)

५१४-(उ.)

पद–५१५ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(आत्मेतिहास)

राणाँजी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी ।
साध-संग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूँघट की । (टेक)
पीहर मेड़ता छोड़ अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुरु मुकर दिखाया घटका, नाचूँगी दे दे चुटकी ।। १
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घट की ।। २
महल किला राणाँ मोहिं न चहिये, सारी रेसम पट की ।
हुई दिवानी मीराँ डोलै, केस लटा सब छिटकी ।। ३



पद–५१६ : राग–बिहाग वा सोरठ : ताल–तिताला विलंपत

(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी हूँ गिरधर रै घर जाऊँ । (टेक)
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।। १
रैन पड़े तबही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ ।। २
रैन दिनाँ वाके सँग खेलूं, रीझै त्योंहि रिझाऊँ ।। ३
ज्यो पहरावै सोई पहरूँ, ज्यो दे सोई खाऊँ ।। ४
मेरे उनके प्रीत पुराणी, वाँ बिन पल न रहाऊँ ।। ५
जहाँ बैठावे तहां ही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊँ ।। ६
जन[1] मीराँ गिरधर रै ऊपर बार बार बलि जाऊँ ।। ७



५१५–(१ उ.)
५१६–(ऊ.) (मी. ली. प. दूधू २८)
पा०—१ मीराँ के प्रभु गिरधरनागर ।

पद–५१७ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(पूर्वजन्म-चरित)

राणाँजी हूं तो गिरधर कै मन भाई। (टेक)
जैमल कै घरि जनम लियो है, राणाँ नैं परणाई।
साँचा सनेही म्हारै रामसंतजन, जासूं प्रीति लगाई ॥ १
पुरबै जनम की होती गोपक्या, चूक पड़ी मुझि मांहीं।
जगत लाज उपजी घट भींतर, तब हरि नैं छिटकाई ॥ २
जै पकड़ोगा हाथ हमारो, खबरदार मन माँहीं ॥
साँचा मनसूं सराप ज द्यूंली, बलि'र भसम होइ जाई ॥
जनम-जनम की मैं दासी राम की, थारी नाँहि लुगाई।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, संत चरण बलि जाई ॥ ४



५१७–(३ क.) (राम.स.गु पृ. १७६)

पद–५१८ : राग–घनाश्री वा खमाच : ताल–कहरवा

(प्रकीर्णक, निज निश्चय)

राणाँजो हो जाति रो कारण म्हारे को नहीं,
लागो म्हारो हरि भगताँ सूँ हेत । (टेक)
बिदुर कुलां घरि जनमिया, ज्यांकै पावणां हुआ गोपाल ।
बंदि छुड़ाई वसुदेव की, कंस कियो खोकाल ।। १
पाँचूँ पाण्डू छटी द्रोपदी, ज्याँकी न्यारी न्यारी जात ।
सहस अठ्यासी मुनि आविया, ज्याँकी पण राखी रघुनाथ ।। २
वन में हुती स्योरी भीलणी, ज्याँका आरोग्या ठाकुर बोर ।
ऊँच नींच हरि नां गिणैं, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर ।। ३
येक बेल दोय तूँवड़ा, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
येक तूँवो जंतर चढै, दूजो हरि भगतां कै हाथ ।। ४
संख समदाँ नीपजै, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
एक संख सेवा चढ़ै, दूजो भोयड़लां के हाथ ।। ५
एक माटी दोय कलस हैं, ज्याँहूँ की न्यारी न्यारी जात ।
एक कलस सेवा चढ़ै, दूजो कलालाँ रै हाथ ।। ६
कनक कटोरे विष घोलियो, दीयो मीराँ के हाथ ।
हरिचरणोदक करि पी लियो, हरिजी भयो सुनाथ ।। ७
सब मिलि मतो उपाइयो, मीराँ नै विष द्यौह ।
कह्यौ सुण्यौं मानैं नहीं, नीच लग्यौ हठ यौह ।। ८
नगर वसै बामण वाणियाँ, भीतर शुद्र पँवार ।
मुँह मोड़ै मुलक्याँ हँसै, समझै नहीं गँवार ।। ९
गढ़ चित्तोड़ै नां रहाँ, नहीं रहण का जोग ।
वसस्याँ रूड़ी द्वारिका, जहाँ हरि भगताँ का भोग ।। १०
परख लेत परचो भयो, मन उपज्यो बिसवास ।
सिर पर सिरजन हार है, पूगी (म्हाँ) मन की आस ।। ११
कुंभ स्याम कै देवरै, मिली है राणों राँण ।
मीराँ नैं गिरधर मिल्या, कोई पूरवली'र पहिचाँण ।। १२

◈ ◈ ◈

५१८–(३ क.) (क. व. २२)

पद–५१९ : राग–भैरों वा सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(भक्ति-दृढ़ता-रहस्य)

राणाँजी (हो) मैं साधुन रँगराती । (टेक)
काहू को पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजत पाती ।
मेरो पिया मेरे माँहि बसत है, कहि न सकूँ सरमाती ।। १
सूहो कसूंभी ओढ़ दुपट्टो, झुरमट खेलन जाती ।
झुरमुट खेल मिले यदुनंदन, खोल मिली मिल[1] छाती ।। २
और सखी मद पीवन आई[2], मैं मद की मदमाती ।
मैं मद पीयो पंचबटी को, छको रहूँ दिन राती ।। ३
सुन्न सिखर के द्वारे[3] आकै, मोहि मिले अविनासी ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी[4] ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५२० : राग–देश मांड : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राणूँ म्हारो कांई करैलो राज, म्हे तो छाँडी कुल की लाज । (टेक)
पगाँ तो बाँध्या घूघरा जी, हाथ बजावाँ ताल ।। १
भोसागर म्हारो माहिरो जी[1], हरि चरणां सूँ प्यार[2] ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, जास्याँ दुवारकानाथ[3] ।। ३

◈ ◈ ◈

५१९–(१ उ.) (आ. सा. भा. १ पृ. १३६)
१ पा०—'दुई' । 'भर' ।
२ पा०—'पी पी आई' । 'रही प्यासी' ।
३ पा०—'पौरे' ।
४ पा०—'मीराँ के प्रभु......गावत मीराँ दासी' ।
५२०–(म.) (दीना. मँ. मी. प. ३७)
पा०—१-२ तुम हरो जी । सुसराल । पीहर छै जी ।
पा०—३-मीराँ कहै जास्याँ द्वारका जी बैकुंठां रा बास ।

पद-५२१ : राग-भैरवी : ताल-धीमा तिताला

(आत्म-इतिहास)

राँणैं म्हाँनैं ऐसी कही महाराज । टेक
मगतण होय मीराँ जगत लजायो कीन्हौं सारो राज ।
जावो नैं मीराँ म्हाँनैं मुख न दिखावो म्हाँनै आवै थारी लाज ।। १
लाजै मीराँ पीहर सासरो और लाजै म्हारो साज ।
गोपीचंदण तुलसी की माला भीख माँगण रो साज ।। २
धन मीराँ धनि मेड़तौ धनि राठोड़ौ राज ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी चलि आयो व्रजराज ।। ३

◈ ◈ ◈

पद-५२२ : राग-घूमर : ताल-कहरवा

(प्रेम)

राणोंजी मेवाड़ो म्हारै दाय न आवै,
गिरधर म्हारै मन भाया, भोलि माय । (टेक)
राणोंजी म्हाँसूं रूस रह्यो छै कूड़ा वचन सुनाया, भोलि माय ।। १
गुरु कृपा सूं संत पधारचा संताँ स्याम मिलाया, भोलि माय ।। २
बाँधि घूघरा नृत्य कराँ म्हे हरिगुण गाय रिझावाँ, भोलि माय ।। ३
मीराँ के प्रभु आस पुराई गिरधर सेजाँ आया, भोलि माय ।। ४

◈ ◈ ◈

५२१-(३ क.) (रामस. गु. पृ. १७४)
५२२-(२ म.) (मा. हरिना. एम. ए. की. पु.)

पद–५२३ : राग–काफी : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

राणोंजी[1] मेवाड़ो म्हारो काईं करसी,
म्हे तो गोविंदरा गुण गास्याँ, हे माय । (टेक)
राणोंजी रूससी गाँव राखसी, हरी रूस्याँ कुमलास्याँ[2], हे माय ।। १
म्हारो तो प्रण चरणामृत रो, नित उठ मन्दिर जास्याँ, हे माय ।। २
मंदिरयामें माधुरी मूरति, निरख निरख गुण गास्याँ, हे माय ।। ३
हाथाँ से करताल बजावाँ, घूघरिया घमकास्याँ हे माय ।। ४
राणोंजी भेज्या विष रा प्याला, कर चरणामृत पीस्याँ, हे माय ।। ५
राणोंजी भेज्या साँप टिपारा, तुलसी की माला कर पैराँ, हे माय ।। ६
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित ल्यास्याँ, हे माय ।। ७



५२३–(१ उ.) मी. प. जमा. राम. ५)

नोट—पाठ भिन्न भिन्न होने से पूरा पद ही लिख दिया गया है ।

पा०—१ मर जास्याँ ।

पा०—२ "रसियो राम रिझास्याँ हे मा,
राणोंजी मेवाड़ो म्हारो काउ करसी । (टेक)
राणाँ रूससी गाँव राखसी, हरि रूस्याँ कुमलास्याँ, हे मा ।। १
गोपीचंदन गंगा री माटी, घसि घसि अंग लगास्याँ, हे मा ।। २
श्री तिलक तुलसी की माला, नित उठ मंदिर जास्याँ, हे मा ।। ३
बाँध घूघरा नित कराँ म्हे, करसूँ तार बजास्याँ, हे मा ।। ४
राणों भेज्यो विष रो प्यालो, चरणामृत कर पीस्याँ, हे मा ।। ५
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां चित लास्याँ, हे मा ।। ६

पद–५२४ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल– तिताला

(चरित)

राणोंजी हट मांड्यो म्हाँसूं, गिरधर प्रीतम प्यारी जी । (टेक)
वो तो मद माया रो आँधो, थे मत होज्यो न्यारा जी ।। १
साँची प्रीत लगी है तुमसूँ, झक मारो संसारा जी ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, थाँनै भक्त पियारा जी ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–५२५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(चरित)

राणों म्हारो काँईं करिहै मीराँ छोड़ दई कुल लाज ।
विष को प्यालो राणाँ ने भेज्यो मीराँ मारन काज । (टेक)
हँस के मीराँ पीय गई है प्रभु प्रसाद पर राग ।
डव्बो एक राणाँजी भेज्यो उसमें कारा नाग ।। १
डव्बो खोल मीराँ जब देख्यो व्है गयो सालिगराम ।
जै जै धुनि सब सन्त सभा भई कृपा करी घनश्याम ।। २
सजि सिंगार पग बाँधि घूंघरू दोउ कर देती ताल
ठाकुर आगे नृत्य करत ही गावत श्रीगोपाल ।। ३
साधु हमारे हम साधुन के साधु हमारे जीव ।
साधुन मीराँ मिलि जो रही है जिमि माखन में घीव ।। ४

◈ ◈ ◈

५२४–(ऊ)
५२५–(इ क.) मीराँ बा. जी. का. प्र. पृ. १५)

पद–५२६ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्याँ कहँ जाणाँ । (टेक)
राणाँ भेजा जहर पियाला, इमरत कर पी जाणाँ ।। १
डिबिया में भेजा जु भुजंगम, सालिगराम करि जाणाँ ।। २
मीराँ तो अब प्रेम दिवानी, साँवलिया बर पाणाँ । ३

◈ ◈ ◈

पद–५२७ : राग–सारठ : ताल–झुमरा

(रूप-वर्णन)

राधा तेरी बोली माँहीं, मुडक घणी । (टेक)
तीखा तीखा नैन भुँवारा बाँका, मानों कबाँण तणी ।। १
आप ही बाँकै नैन ही बाँकै, कोन चटसाल भणीं ।। २
कोटी भान प्रकास भया है, चिमकत शैली भणीं ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, निरखत श्याम धणीं ।। ४[1]

◈ ◈ ◈

५२६–(म.) (मीराँपदावली वि. मुं. पृ. ७६)
५२७–(उ. सं.) (१०) (पुजा. नाथू. पु. से)
१–यह पद विशेषतया भाषा की दृष्टि से ठेठ जयपुरी किसी कवि का ज्ञात होता है। स्यात् 'ब्रजनिधि' या अमृतराम अथवा अन्य।

पद–५२८ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(लीला)

राधा तेरी मँहदी रो माणक रंग। (टेक)
कनक कटोरे मँहदी घोली, तामें अद्भुत रङ्ग ॥ १
राधा प्यारी मँहदी माँडी, सब सषियन के संग ॥ २
मीराँ[1] के प्रभू मँहदी निरषै, श्रीबृन्दाबनचंद ॥ ३

❖ ❖ ❖

पद–५२९ : राग–श्याम कल्याण : ताल–तिताला

(लीला)

राधा प्यारी दे डारो जी बंसी हमारी।
या बंसी में मेरा प्रान वसत है,
वो बंसी ले गई मेरी ॥ राधा०
ना सोने की बंसी ना रूपे की।
हरे हरे बाँस की पेरी ॥ राधा०
घड़ी एक मुख में घड़ी एक कर में।
घड़ी एक अधर धरी ॥ राधा०
मीराँ के प्रभू गिरधर नागर
चरण कमल पर वारी ॥ राधा०

❖ ❖ ❖

५२८–(उ. सं.) (११) (पुजा. नाथ. पु. से)
१–यह भी किसी 'व्रजनिधि' के समसामयिक कवि का ज्ञात होता है।
५२९–(क.)

पद–५३०

(वृंदावन-प्रेम)

राधेजी को लागे बृंदाबन नीको। (टेक)
बृंदावन में तुलसी का बिड़ला, जाके पान चरी को॥ १
वृंदाबन में धेनु बहुत हैं, भोजन दूध दही को॥ २
बृंदाबन में रास रच्यो है, दरसण कुदमाजी को॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिना रंग सब फीको॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–५३१ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(लीला)

राधे दे दो बाँसरी, हमारो मुरली।
पात पात सब वृन्दावन ढूंढ्यो।
कुञ्ज गलिन में सब हेरी॥ राधे०
बँसरी बिन मोहे कल न परत है।
पैयाँ लागत तोरी॥ राधे०
काहे से गाऊँ काहे से बजाऊँ।
काहे से लाऊँ गवाँ घेरी॥ राधे०
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर।
चरण की मैं तो चित्त चेरी॥ राधे०

◈ ◈ ◈

५३०–(म.) (क. । उ० । २ । ३६२)
५३१–(क.)

पद–५३२ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(चरित)

राम तणें रँग राची, राणाँ मैं तो साँवलिया रँग राची रे। (टेक)
ताल पखावज मिरदँग वाजा, साधों आगे नाँची रे॥ १
कोई कहे मीराँ भई वावरी, कोई कहे मदमाती रे॥ २
विष का प्याला राणाँ भेज्या, अमृत कर आरोगी रे॥ ३
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी रे॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–५३३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चरित)

राम नाम उर धार्‌यो मेड़तणी ने, राम नाम उर धार्‌यो। (टेक)
कह्यो न मानूं राणाँजी को, देसपती पच हार्‌यो॥ १
कोप कियो राणाजी जब ही, साँप गला में डार्‌यो॥ २
मीराँ ने हँस पहर लियो है, हो गयो नोसर-हारो॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, अबके मोय उबारो॥ ४

◈ ◈ ◈

५३२–(२ म)
५३३–(क) (२) (पुजारी नाथूना पु. से)

पद–५३४ : राग–सारंग, घुमर : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राम-नाम म्हारे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय । (टेक)
मैं मँदभागँण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ।। १
बिरह्-पिंजर की बाड़ सखी री, उठ कर जी हुलसाऊँ ए माय ।। २
मन कूँ मार सजूँ सतगुर सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ।। ३
डाको नाम सुरत की डोरी, कड़्याँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।। ४
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ।। ५
तन करूँ ताल मन करूँ मोचँग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय ।। ६
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो अमरापुर जाऊँ ए माय ।। ७
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोविंद का गाऊँ ए माय ।। ८

◈ ◈ ◈

५३४-(१ उ.)

नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने से पूरा पद लिखा जाता है—

"रसियो राम रिझाऊँ ए माइ, राम नाम मेरे मन बसियो । (टे०)
बिरहैं पीड़ की बात सखी री, कासूँ कहूं समझाइ ।। १
तन करि ताल'र मन करि मिरदँग, सुणत हि सुरति जगाऊँ ए माइ ।। २
सील सिंगार साज तन ऊपर, प्रभु के सनमुख जाऊँ ए माइ ।। ३
लोक लाज कुल संक निवारी, राम (जो) मिल्याँ सुख पाऊँ ए माइ ।। ४
मीराँ कें प्रभु तुमरे मिलन कूं, चरण कमल बलि जाऊँ ए माइ ।। ५
(क. ब. ९)

पद–५३५ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावणी)

राम नाम रस पीजे मनुआ, राम नाम रस पीजे। (टेक)
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ।। १
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित्त से बहाय दीजे ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, ताहि के रँग में भीजे ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–५३६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(विनय)

राम म्हारी बाहड़ली जो गहौ। (टेक)
भवसागर की तीषण धारा, तुम ही लेर निभहो ।। १
मोमैं औगुण घणां छै साँवरा, तुम हो सब ही सहो ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिरद की लाज गहो ।। ३

◈ ◈ ◈

५३५–(२ म) (मीरांबाई के भ. नं. ३२)
५३६–(२ म) (मी. ली. प. दूधू ३)

पद–५३७ : राग–भीम पलासी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर जागी री। (टेक)
तलफत तलफत कल न परत है, विरह-बाण उर लागी री।
निस दिन पंथ निहारूं पीव को, पलक न पल भरि लागी री॥ १
पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री।
विरह-भवंग मेरो डसो है कलेजो, लहरि हलाहल जागी री॥ २
मेरी आरति मेटि गुसाँई, आइ मिलौ मोहिं सागी री।
मीराँ ब्याकुल अति अकुलाणी, पिया की उमंग अति लागी री॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–५३८ : राग–जोगिया–आसावरी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण रो घणों उमावो, नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ।
दरसण बिन मोहि पल न सुहावै, कल न पड़त है आँखड़ियाँ॥ (टेक)
तलफ़ तलफ़ के बहु दिन बीते, पड़ी विरह की फाँसड़ियाँ।
अब तो बेगि दया कर साहिब, मैं हूँ तेरी दासड़ियाँ॥ १
नैण दुखी दरशण को तरसैं, नाभि न बैठे साँसड़ियाँ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ॥ २
लगी लगन छूटण की नाँही, अब क्यों कीजे आटड़ियाँ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, पूरो मन की आसड़ियाँ॥ ३

◈ ◈ ◈

५३७–(१ उ)
५३८–(१ उ)

पद–५३६ : राग–सारंग घुमर : ताल–कहरवा

(उपदेश, चेतावणी)

राम रतन धन पायो मैया, मैं तो राम रतन धन पायो । (टेक)
खरचे ना घू[खू]टे, वाकूँ चोर न लूटे, दिन दिन होत सवायो ।। १
नीर न डूबै वाकूं, अग्नि न जाले, धरनी धर्‌यो न समायो ।। २
नाँव को नाँव भजन की बतियाँ, भवसागर से तार्‌यो ।। ३
मीराँ प्रभु गिरधर के सरनें, चरण-कमल चित लायो ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५४० : राग-विहाग : ताल–कहरवा

(चरित)

राम-रँग लाग्यो, म्हारा मन को धोखो भाग्यो जी । (टेक)
पीपा(के) लागि सुदामा(के) लाग्यो, कञ्चन महल बणा गो जी ।। १
ध्रुव के लागि प्रहलाद के लाग्यो, नरसी के कारज सार्‌यो जी ।। २
साँचो रङ्ग नामदेव के लाग्यो, छिन में छाँन छवा गो जी ।। ३
मुलक भुखारा का वादशाह के लाग्यो, राज मुलक को त्याग्यो जी ।। ४
गोपीचंद भरथरी के लाग्यो, तन में खाक रमा गो जी ।। ५
सांचो रँग मीराँ[1] के लाग्यो, ज्योति में ज्योति समा गो जी ।। ६

◈ ◈ ◈

५३६–(१ उ.) (वं. पु. पृ. ३०)
५४०–(क. सं.) (२८) (पुजा. नाथू. पु. से)
१ आत्मश्लाघा के कारण मीराँजी का नहीं जँचता ।

पद–५४१ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(रहस्य)

राम-सनेही साँवरियो म्हारी नगरी में उतर्यौ आइ। (टेक)
प्रांण जाय पणि प्रीत न छांडूं रहौं चरण लपटाय ॥ १
तीन लोक झोली मैं डारै धरती कौ कीयौ निपांन ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी रहौ चरण लिपटाय ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–५४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

रामा रामा कहिये रे गोविन्द गोविन्द कहिये रे। (टेक)
कंकर हीरा एक सारसा, हीरा किस कूँ कहिये रे।
हीरापण तो जद ही जाणूं, महँगा मोल बिकइये रे ॥ १
कोयल कागा एक सरीसा, कोयल किसको कहिये रे।
कोयलपण तो जब ही जाणूं, मीठा बचन सुणइये रे ॥ २
हंसा बुगला एक सरीखा, हंसा किसकूं कहिये रे।
हंसापण तो जद ही जाणूं, चुग चुग मोती खइये रे ॥ ३
जगत भगत के आसरे है, भगत किसकूं कहिये रे।
भगतपणों तो जब ही जाणूं, बोल सभी का सहिये रे ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित दइये रे।
द्वारिका के ठाकुर के सरणे में, जा कर रहिये रे ॥ ५

◈ ◈ ◈

५४१–(३ क) (राम स. गु. पृ. २८२)
५४२–(२ म)

पद–५४३ : राग–गिरनारी-सोरठ : ताल–रूपक

(विनय-प्रार्थना)

राय श्री रणछोड़, दीजे द्वारका को बास । (टेक)
सँख चक्र गदा पद्म दरसे, मिटे जग की त्रास ॥ १
सकल तीरथ गोमती के, रहत नित्त निवास ॥ २
संख झालर झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ॥ ३
तज्यो देस'रु बेस पतिग्रह, तज्यो रानां-राज ॥ ४
दासि मीराँ सरन आवत, तुम्हें अब सब लाज ॥ ५



पद–५४४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

रावलो बिड़द मोहि रूड़ो लागे, पीडित पराये प्राण । (टेक)
सगो सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान ॥ १
ग्राह गह्यो गजराज उबार्‌यो, बूड न दियो छै जान ॥ २
मीराँ दासी अरज करत है, नहिं जी सहारो आन ॥ ३



५४३–(१ उ.) (स. मा. मी. ली. २८)
५४४–(१ उ.)

पद—५४५ : राग—काफी : ताल—दीपचंदी-कहरवा

(विरह)

री मेरे पार निकस गया, सतगुरु मार्‌या तीर। (टेक)
विरह-भाल लागी उर-अंतरि, ब्याकुल भया सरीर॥ १
इत-उत चित चलै नहिं कब हूँ, डारी प्रेम-जँजीर ॥ २
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर ॥ ३
कहा करूँ मेरो बस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर ॥ ४
मीराँ कहै प्रभु तुम मिलियाँ बिनि, प्राण धरत नहिं धीर ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद—५४६ : राग—भोपाली : ताल—धीमा

(विरद-विनय)

रुकमणी री लाज राषो, राषोला म्हाराजि।
आजि, रुकमण की लाज राषौ। (टेक)
माता कै मैं घणीं पियारी, नाहीं दोस पिता को ॥ १
रुकमइयौ सिसपाल बुलायौ, नहिं मुष देखूं वाको ॥ २
थाँका बिड़द कूं लोग हँसैगो, जिव जावैगो म्हाँको ॥ ॥ ३
मेरा स्याम कूँ कृष्ण बतावै, नारद मुनि यों भाषो ॥ ४
मीराँ कहै यूं रुकमणि कहत है, ऊंच नीच मति राषो ॥ ५

◈ ◈ ◈

५४५—(१ उ.)
५४६—(३ क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)

पद–५४७ : राग–मारू : ताल–तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

रूप देख अटकी, तेरो रूप देख अटकी। (टेक)
देह तैं बिदेह भई ढुरि परि सिर मटकी ॥ १
मात, पिता, भ्रात, बंधु सब ही मिलि हट की ॥ २
हिरदा थैं टरत नाँहि मूरति नागरनट की[1] ॥ ३
प्रगट भयौ पूरन नेह लोक जानें भटकी ॥ ४
मीराँ प्रभु गिरधर बिन कौन लहै घट की ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–५४८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(विरह)

रे पपैह्या प्यारे कब को बैर चितार्‌यो। (टेक)
मैं सूती छी अपने भवन में पिय पिय करत पुकार्‌यो ॥ १
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ै करवत सार्‌यौ ॥ २
आइ बैठ्यो बृक्ष की डारी, बोल बोल कइ सार्‌यौ ॥ ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां चित धार्‌यौ ॥ ४

◈ ◈ ◈

५४७–(उ,) (प्राचीन गु. ह. लि. सं. १७४३) में से।
 १ पा०—'सूरति वा नट की'।
५४८–(१ उ.) (व. पु. पृ. १६)

पद–५४६ : राग–चैती गोरी वा सोरठ : ताल–दादरा

(प्रेम-विनय)

रे साँवलिया म्हारे आज रँगीली गणगोर छे जी। (टेक)
काली पीली बादली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी ।। २
आप रँगीला, सेज रँगीली और रँगीलो सारो साथ छे जी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरनाँ में म्हारो जोर छे जी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५५० : राग–भैरवी : ताल–धीमा

(विनय)

लटपटी पेचा बांधी राज ।
सास बुरी घर ननद हटीली ।
तुम जे आगे कियो काज ।। लटपटी० ।
निस दिन मोहे कल न परत है ।
बंसी ने सारो काज ।। लटपटी० ।
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर ।
चरण कमल सिरताज ।। लटपटी० ।

◈ ◈ ◈

५४६–(२ म.)
५५०–(म.)

पद–५५१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(चरित)

लाग्यो थारो नैणाँ रो सलूणों रंग लाग्यो, लाग्यो महाराज । (टेक)
एक रंग लाग्यो नारदमुनि जिनके, असली बैरागी बाज्यो रे ।। १
एक रंग लाग्यो भरतरी राजा के, शहर उजीणी त्याग्यो रे ।। २
एक रंग लाग्यो मेड़तणी राँणी के, देस मेवाड़ो त्याग्यो रे ।। ३
मीराँ[1] के प्रभु गिरधरनागर, डर असुरन को भाग्यो रे ।। ४

पद–५५२ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

लाग रही औसेर कान्ह तोरी, लाग रही औसेर । (टेक)
दरसण दीजे किरपा कीजे, कहाँ लगाई (ऐती) बेर ।। १
दिन नहिं चैंन, रैंन नहिं निद्रा. बिरह बिथा लई घेर ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, सुनजो म्हारी टेर ।। ३

५५१–(क. स,) (१४) (पुजा. नाथू. पु. से)
१ आत्मश्लाघा के कारण मीराँजी का ज्ञात नहीं होता है ।
५५२–(उ.)
(या०—ना० दा० जी के पदसार संग्रह की ह० लि० प्रति से ।)

पद–५५३ : राग–सोरठा : ताल–कहरवा

(अनन्य प्रेम)

लागी मोहि राम खुमारी हो। (टेक)
रिमझिम बरसै मेहड़ा, भीजै तन सारी हो।
चहुँ दिस चमकै दामणी, गरजै घन भारी हो॥ १
सतगुर भेद बताइया, खोली भरम किवारी हो।
सब घट दीसै आतमा, सब ही सूं न्यारी हो॥ २
दीपक जोऊं ज्ञान का, चढ़ ज्ञान-अटारी हो।
मीराँ दासी राम की, इमरत बलिहारी हो॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–५५४ : राग-देस : ताल–कहरवा

(विरह)

लागी सोही जाणै कठण लगन दी पीर। (टेक)
विपद पड़्याँ कोई निकटि न आवै, सुख में सब को सीर॥ १
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम-रोम दी पीर॥ २
जन मीराँ गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर॥ ३

◈ ◈ ◈

५५३–(२ म.)
५५४–(१ उ.)

पद-५५५ : राग-कालँगड़ा वा जँगला वा काफी : ताल-कहरवा

(विरह)

लिख भेजूँ री पाती, मेरे प्रीतम प्यारे राम कूँ। (टेक)
स्याम संदेसो कछू न दीनों, जानि बूझि गुझि बाती ।। १
डगर बुहारूँ पंथ सुधारूँ[1], जोइ जोइ[2] अँखियाँ राती ।। २
रात द्योस मोहि कल न परत है, हियो फटत मेरी छाती ।। ३
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद-५५६ : राग-सिन्ध भैरवी : ताल-कहरवा

(उपदेश)

लेताँ-लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ तो लाजे मरे छे। (टेक)
हरि-मंदिर जाताँ पावलिया रे दूखे, फिर आवे सारो गाम रे ।। १
झगड़ो थाय त्याँ दौड़ी ने जाय रे, मूकी ने घर का काम रे ।। २
भाँड भवैया गनिका नृत्य करताँ, बेसी रहे चारे जाम रे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित हाम रे ।। ४

◈ ◈ ◈

५५५-(१ उ.) (क. व. १६)
पा०—१ निहारूं।
पा०—२ रोइ-रोइ।
५५६-(३ क.)

पद–५५७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(बाल-लीला)

लेने तुरी[1] लकडी रे, लेने तुरी कामली,
गायो तो चराववा नहिं जाऊं मावड़ली[2] । (टेक)
माखन तो बलभद्र ने खायो, हम ने पायो खाटी हो रे छाशड़ली[3] ।। १
वृंदावन ने मारग जातां, पाऊं में बुंचे[4] भीणी कांकड़ली ।। २
मीराँबाई के प्रभु गिरधर ना गुण, चरणकमल चित राखड़ली ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–५५८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

लेह लागी मने तारी अल्याजी, लेह लागी मने तारी । (टेक)
काम काज मूक्यूं ने धामज मूक्यूँ, मन माँ चाहूँ छूँ मोरा री ।। १
खभे छे कामली ने हात माँ छे बाँसली, गोकुल माँ गायो चारी ।। २
सोळ सहस्र गोपियों ने तमे वरिया, तोय तमे बाल ब्रह्मचारी ।। ३
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ४

◈ ◈ ◈

५५७–(काव्य दो० भा० ७ पृ० ७२३)
१ तेरी। २ माता। ३ छाछ। ४ चुभना।
५५८–(३ क.) (काव्य-दोहन गु.)

पद–५५९ : राग–कामोद : ताल–कहरवा

(प्रेम)

वारियाँ वे लाल वारियाँ । (टेक)
तुसा आमना फेरा पामना कुन्ज हमारियाँ ।। १
कोन सखी के तुम रँगराते, हमसे अधिक पियारियाँ ।। २
ऊँची अटारियां ते लाल किवारियां तक, रहियाँ बाट तिहारियाँ ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरिधरनागर, या छबि पर बलिहारियाँ ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५६० : राग–पीलू वरवा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

वारी वारी हो राम हूँ वारी, तुम आज्यो गली हमारी । (टेक)
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जोऊँ बाट तुमारी ।। १
कूँण सखी सूँ तुम रँग-राते, हमसूँ अधिक पियारी ।। २
किरपा कर मोहि दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ।। ३
तुम सरणागत परम दयाला, भव जल तार मुरारी ।। ४
मीराँ दासी तुम चरणन की, बार बार बलिहारी ।। ५

◈ ◈ ◈

५५९–(२ म.) (वृ. रा. र. पृ० ६५)
५६०-(१ उ.)

पद–५६१ : राग–होरी-काफी : ताल–कहरवा

(लीला)

वाह वाह रे मोहन प्यारे कहां चले जादू करि कैं। (टेक)
रूप सरूप सलूनी सी डारी मेरो मन लीनूं हर कैं।
मोर मुकट सिर छत्र बिराजै नख पर गिरवर धर कैं।। १
दमन कियो नाग काली को आप घुसे मध सर कैं।
फण-फण निरत करत यदुनन्दन अभै कियो षगबर कैं।। २
सब ब्रज लोग छांडि निज घर कूं जाइ बसे तर गिर कैं।
सात दिवस लग सूँड धार जल इंद्र पर्‌यौ पग डर कैं।। ३
कातिगमास बाल सब मिल कै नांचैं जल मैं तिर कैं।
चीर चोर पुनि बगल डार कैं जाय चढ़े छल करि कैं।। ४
बृंदाबन की कुंजगलिन मैं रास रच्यो छल बल कैं।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी पानैं पड़ी गिरधर कैं।। ५



५६१–(३ क.) (राम स. पृ. ३४८)

पद–५६२ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(लीला)

वहियां जो गही रे मेरी सुध न रही रे,
काना वहियां जो गही रे।
जगमग ज्योत जडाव को गहनो,
गज मोतियन की सर लटकी रही रे ॥ काना०
मैं दधि बेचन जाती गोकुल में,
पकडी री पाल व मेरो जलको मही रे ॥ काना०
जाई पुकारूं कंस के आगे रे,
तेरी नगरी में मेरो बसबो नही रे ॥ काना०
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
झगडत झगडत सारी रैन गई रे ॥ काना०

❖ ❖ ❖

पद–५६३ : राग भैरवी : ताल–तिताला

(विरह)

विरहनी बावरी सी भई। (टेक)
ऊँची चढ़-चढ़ अपने भवन मैं टेरत हाय दई ॥ १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूँछत उघरे गात सही ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर विछुरत कछु नाँ कही ॥ ३

❖ ❖ ❖

५६२–(म.)
५६३–(१ उ.)

पद–५६४ : राग–देश : ताल–कहरवा

(विरह)

वै न मिले जिनकी हम दासी । (टेक)
पात पात बृन्दाबन ढूंढ्यौ ढूंढि फिरी सगरी मैं कासी ॥ १
कासी कौ लोग बड़ो बिसवासी मुख मैं राम बगल मैं फांसी ॥ २
आधी कासी मैं बांमण बणियाँ आधी कासी बसें सन्यासी ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी हरिचरणां की रहौं मैं दासी ॥ ४



पद–५६५ : राग-विहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह)

श्याम बजावत बीणाँ, री आली (टेर) ।
आठ मास कातिक लों न्हाई दान पुन्य बहु कीना ।
ऐ रे दई तेरो कहा बिगड़्यो छोटो कंत मोहे दीना ॥ १
करके सिंगार पलंग पर बैठी, रोम रोम रस भीना ।
चोली के मेरे बंद तरक गये, श्याम भये परबीना ॥ २
अब तो आन पड़ी फंदे बिच, लोक लाज तज दीना ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन चित लीना ॥ ३



५६४– (क ३) (रामस. गु. पृ. १६०)
५६५– (क) (या०·—सं.रा.क. से)

पद–५६६ : राग–भूपाली : ताल–तीताला

(विरह)

श्याम बताव रे मुरली वाला। (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोहे, भाल तिलक गले मोहनमाला ॥ १
एक बन ढूंढ सब बन ढूंढे, कहीं न पायो नंदलाला ॥ २
जोगन होऊंगी बैरागन होऊंगी, गले बीच बांधूंगी मृगछाला ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मांग लियो पिया प्रेम की माला ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–५६७ : राग–देस : ताल–तिताला

(उपालंभ)

श्याम बंसी वाला कनैया, मैं नाँ बोलूँ तुमसे रे। (टेर)
घर मेरा दूरा, गगरी मेरी भारी, पतली कमर लचकाय रे ॥ १
सास ननँद की लाज से मरत हूँ, हमसे करत बरजोरी रे ॥ २
मीराँ दासी तुमसे झगरो, चरण कमल की उपासी रे ॥ ३

◈ ◈ ◈

५६६– (म.)
५६७– (का. उ०।२।३३८)

पद–५६८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

श्यांम म्हांनै चाकर राखो जी, गिरधारीलाल चाकर राखो जी । (टेक)
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरशण पासूँ ।
बृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में, गोविन्द का गुण गासूँ ।। १
चाकरी में दरशण पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ।। २
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।
बृन्दावन में धेनु चरावै, मोहन मुरली वाला ।। ३
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ।
साँवरिया के दरशन पाऊँ, पहिर कुसूँमल सारी ।। ४
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन को साधू आये, बृन्दाबन के बासी ।। ५
मीराँ के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदै रह्यो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीज्यो, प्रेम-नदी के तीरा ।। ६



पद–५६९ : राग भैरवी : ताल–तिताला

(प्रेमलीला)

श्याम सुंदर मुरली वाला, कोई देखो रे भैया । (टेर)
जमना के तीराँ तीराँ धेनु चरावत, दधि घट चोर चुरैयाँ ।। १
बृन्दाबन की कुंज गलिन में, हमको देखत झुकैयाँ ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, पकड़त मोरी बहियाँ ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जैयाँ ।। ४



५६८– (१ उ०)
५६९- (सा०) (का. । उ०२।३५४)

पद–५७० : राग–मालकोस : ताल–तिताला

(प्रेम)

श्री गिरिधर आगे नाचूँगी । (टेक)
नाँचि नाँचि पिय रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ।। १
प्रेमप्रीति के बाँधि घूंघरू, सुरत कछनी काछूँगी ।। २
लोकलाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगा जा पौढूँगी, मीराँ हरि-रँग राचूंगी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५७१ : राग–झँझोटी गारा : ताल–कहरवा

(तुलसीदासजी को पत्र। आत्म-व्यथा-कथा)

श्री तुलसी सब गुण निधान दुख हरन गुसांई।
बारहि बार प्रणाम करूं अब हरो सोक-समुदाई। (टेक)
घर के स्वजन हमारे जेते सवन उपाध बढ़ाई।
साधु संग अरु भजन करत मोहे देत कलेस महाई ।। १
बालपने से मीराँ कीनी गिरधरलाल मिताई।
सो तो अब छूटत नहिं क्योहूं लगी लगन बरियाई ।। २
मेरे मात पिता के सम हो हरिभक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करबो है सो लिखियो समझाई ।। ३

◈ ◈ ◈

५७०– (१ उ)
५७१– (३ क) (स. मा. मी. ली. २१)

पद–५७२ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–धीमा तिताला

(स्वरूप-वर्णन-दर्शनाभिलाषा)

श्री द्वारका में राज करे जी रणछोड़ (टेर)
लाल पाग केसरिया जामा, टेढी धरत मरोर ।। १
बारे (बारे) कोस की* लगत है, तू मन डारे फोर ।
बारे (बारे) कोस की खाड़ी पड़त है, मल्लाह[1] बड़ा है कठोर ।। ३
मंदिर मंदिर झालर बाजै, घंटन[2] की घनघोर ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, दरसण द्यो चितचोर ।। ५

◆ ◆ ◆

पद-५७३ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरह विनय)

शरणागत की लाज तुमकूं, शरणागत की लाज । (टेर)
नाना पात में चीर मिलाये पांचाली के काज । तुम०
प्रतिज्ञा छांडी भीष्म के आगे चक्र धरे यदुराज । तुम०
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर दीनबंधु महाराज । तुम०

◆ ◆ ◆

५७२– (या०—प्रति सं० ३८६। पद ४८।)

१. पा०—'काबा' । २. पा०—'संखन' ।

नोट—इस पद का अन्य पाठ भी सुना है परन्तु पूर्ण स्मरण नहीं । [ह.ना.]

* यहां 'झाड़ी' शब्द का भी अन्य अतिरिक्त पाठ है ।

५७३– (उ.)

पद–५७४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

शाम रे की दृष्ट मानूं प्रेम की कटारी थे। (टेक)
लगत बेहाल भई, गोरस की शुध न रही।
तनहू थे व्यापो काम, मनू मतवारी थे।। १
चकोर चाहत चंद, दीपक जले पतंग।
जल बिन मीन मरे, ऐसी प्रीत चारी थे।। २
सखी मिल दोउ चार, मन थे कर्‌यो बेचार।
मैं तो वाकूं जान्यों नाहि, कुंज को बिहारी थे।। ३
तूं मोहो सूं जाना शाम, मेरे तो तुहारो ध्यान।
अशरणशरण प्रभु, मीराँ दास तुहारो थे।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५७५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

शिवशंकर मोपे कृपा कीज्यो, मैं आधीन तुमारा। (टेक)
बांई भुजा ऋधिसिधिको बासो, दहनी भुजा गंगधारा।। १
सेवा कर भागीरथ ल्यायो, कुल अपने कूँ त्यारा।। २
शिवजी थे काशी के बासी, गले रुण्डन की माला।। ३
वाहन थारे भिषम नाँदियो, गौराँ के भरतारा।। ४
आक धतूरा को भोग लगत है, बिष का करो अहारा।। ५
केहरि को बाघम्बर सोहे, सरपन के सिंणगारा।। ६
गहरी नदियाँ अथाह जलपानी, भवसागर की धारा।। ७
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मेरो करो निस्तारा।। ८*

◈ ◈ ◈

५७४– (काव्यदो० भा० ७ पृ. ७१६)
५७५– (क–सं.) (१७ पुजा. नाथू पु. से.)
* वर्णनशैली और विषय को देखते यह 'मीराँजी का नहीं लगता है। टेर में लिंगप्रयोग के कारण किसी पुरुष कवि का हो सकता है।

पद–५७६ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेमोपालंभ)

स्याम को सँदेसो आयो पतियाँ लिखाय माय । (टेक)
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनो ।
अंचल की दे दे ओट, ऊधो पै वँचाई है ।। १
वालों की जटा बनाऊँ, अंग तो बिभूत लाऊँ ।
फाडूँ चीर पहरूँ कंथा, जोगण बण जाऊँगी ।। २
इन्द्र के नगारे बाजे, बादर की फोज आई ।
तोपखाना, पेसखाना, उतरा आय बाग में ।। ३
मथुरा उजाड़ कीन्हीं, गोकुल बसाय लीन्हीं ।
कुबजा सूं बाँध्यो हेत, मीराँ गाय सुनाई है ।। ४



५७६– (३ क)

पद-५७७ : राग-कालँगड़ा : ताल-कहरवा

(विरह)

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया, तन दुरमति भागी हो । (टेक)
या तन को दियना करूँ, मनसा करों बाती हो ।
तेल भरावों प्रेम का, बारों दिनराती हो ।। १
पाटी पारों ज्ञान की, मति माँग सँवारों हो ।
तेरे कारन साँवरे, धन जोबन वारों हो ।। २
यह सेजिया बहु रंग की, बहु फूल बिछाया हो ।
पंथ मैं जोहों स्याम का, अजहूँ नहिं आये हो ।। ३
सावन भादों ऊमड़ो, वरषा-ऋतु आई हो ।
भोंह घटा घन घेरि के, नैनन झर लाई हो ।। ४
मात पिता तुमको दियो, तुम ही भल जानों हो ।
तुम तजि और भरतार को, मन में नहिं आनों हो ।। ५
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो, पूरन पद दीजे हो ।
मीराँ व्याकुल बिरहनी, अपनी करि लीजे हो ।। ६



५७७- (१ उ)

पद–५७८ : राग–सिंदूरा : ताल–धमार

(प्रेमोपालम्भ)

स्याम मोसूं ऐंडो डोले हो। (टेक)
औरन सूं खेलत धमार, म्हांसूं मुखहूँ न बोले हो ॥ १
म्हारी गलियाँ ना फिरे, वाके आँगण डोले हो ॥ २
म्हारी अँगुली ना छुवे, वाकी बहियाँ मोरे हो ॥ ३
म्हारे अँचरा ना छुवे, वाको घूँघट खोले हो ॥ ४
मीराँ के प्रभु साँवरो, रँग रसिया डोले हो ॥ ५



पद–५७९ : राग–गारा : ताल–कहरवा

(विनय)

स्वामी सब संसार के, साँचे श्री भगवान। (टेक)
स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ॥ १
सूदामा के दारिद खोये, बारे की[1] पहिचान।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान ॥ २
भारत में अर्जुन के आगे, आप भये रथवान।
उनने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥ ३
ना कोई मारे, ना कोई मरता, तेरा यह अज्ञान।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीता को ज्ञान ॥ ४
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान।
मीराँ गिरधर सरण तिहारी, लगे चरण में ध्यान ॥ ५



५७९-(२ म)
१ पा०—पांडे की।

पद–५८० : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विरह)

स्यामसुन्दर पर वार, जिवड़ा मैं वार डारूँगी। स्याम० । (टेक)
तेरे कारण जोग धारणा, लोकलाज कुल डार।
तुम देख्याँ बिन कल न पडत है, नैन चलत दोउ वार। स्याम० ॥ १
कहा करूँ कित जाऊँ सजनी, कठिन विरह की धार।
मीराँ कहै प्रभु कब रे मिलोगे तुम चरणाँ आधार। स्याम० ॥ २

पद–५८१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उलहना)

सखो अपणां स्यांम खोटा, दोस नहीं कुबज्या नैं। (टेक)
आपन हाथ नहीं लिखि भेजे, क्या कागद का टोटा ॥ १
खारी बेल कैं कड़ा फल लागा, कहा छोटा कहा मोटा ॥ २
कुबज्या दासी कंसराय की, वै नंदजी का धोटा ॥ ३
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, हरि चरणां का वोटा ॥ ४

५८०–(२ म)
५८१–(२ म) (राम स. गु. पृ. ३२३)

पद–५८२ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

सखी तैंने नैना गमाय दिया रोय । (टेक)
बालापन की चटक चुँदरिया, दिन दिन मैली होय ।। १
बालपने लड़किन सँग खेली, रंग रूप दियो खोय ।। २
वाही सोच मीराँ भई दिवानी, दरद न जानै कोय ।। ३
लेनहार लेने कूं आये, ले चल, ले चल, होय ।। ४
मीराँ कहै प्रभु गिरधरनागर, वैद साँवरिया होय ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–५८३ : राग–झँझोटी : ताल तिताला

(प्रेम)

सखी नन्द को गुमानी मेरे मन बस्यो । (टेक)
गह द्रुम-डार कदम की ठाडो, मृदु मुसकाय मेरी ओर हस्यो ।। १
पीताम्बर की कछनी काछै, रतन-जटित माथै मुकट कस्यो ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, निरख बदन मोरे हिरदै फस्यो ।। ३

◈ ◈ ◈

५८२-(२ म)
५८३-(१ उ) (प्रहला. भ. पा. ३)

पद–५८४ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

सखी मन स्याममूरत बसी । (टेक)
मुकट कुंडल करन बंसी मंद मुख पर हँसी ।। १
बावरी कोउ कहै मोकों कोई कहै कुल-नसी ।। २
हस्ती की असवारी पाछै लाख कुतिया भुसी ।। ३
तज्यो घूँघट, लई गाती, संत देख्यां खुसी ।। ४
सील चोला पहर गल में भक्त मारग घुसी ।। ५
ओस पानी नाहिं पीयो छाँह बादर किसी ।। ६
दासि मीराँ लाल गिरधर प्रेम-फंदे फसी ।। ७

◈ ◈ ◈

पद–५८५ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

सखी मेरो कानूड़ो कलेजे-कोर । (टेक)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर ।। १
वृन्दाबन की कुंजगलिन में, नाचत नन्दकिशोर ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल चितचोर ।। ३

◈ ◈ ◈

५८४–(१ उ) (भ. प्रहलादजी का पा. ४)
५८५–(१ उ)

पद–५८६ : राग–विहाग : ताल–रूपक

(विरह)

सखी मोहे लाज बैरन भई । (टेक)
चलत गुपाल लाल पिय के संग क्यों ना गई ॥ १
चलन चाहत गोकुल ही ते रथ सजायो नई ॥ २
बिरह ब्याकुल होय सजनी हाथ मल मल[1] रही ॥ ३
कठिन छाती श्याम बिछुरत बिदर क्यों ना गई ॥ ४
लेन अब संदेस पिय को काहे पठऊं दई[2] ॥ ५
कूबरी संग प्रीत कीनी मोहे माला दई ॥ ६
दासि मीराँ लाल गिरधर प्रान दछना दई ॥ ७



५८६–(१ उ) (स. मा. मी. ली. २७)

१ पा०—"रुकमिनी संग जाइबे को हाथ मीजत रही" (क. १९ । ६)

२ पा०—"तुरत लिख संदेस पिय को काहि पठऊं गई ।"

पद–५८७ : राग–[illegible] : ताल–दीपचंदी

(ऊ)

सखी री मैं तो गिरधर के रंग राती । टेक ।
पचरँग मेरा चोला रँगा दे, मैं झुरमुट खेलण जाती ॥ १
झुरमुट में मेरा साँई मिलेगा, खोल अडम्बर गाती ॥ २
चंदा जायगा, सूरज जायगा, जायगी धरण अकासी ॥ ३
पवन पाणी दोनों ही जायेंगे, अटल रहे अविनासी ॥ ४
सुरत निरत का दिवला सँजो ले, मनसा की कर ले बाती ॥ ५
प्रेम हटी का तेल मँगा ले, जग रह्या दिन ने राती ॥ ६
जिनके पिय परदेस बसत है, लिखि लिखि भेजें पाती ॥ ७
मेरे पिया मो माहिं बसत है, कहूँ न आती जाती ॥ ८
पीहर बसूं न बसूं सासर घर, सतगुरु सब्द संगाती ॥ ९
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीराँ हरि रँग राती ॥ १०

* * *

५८७–(ऊ)
नोट—पदों में बहुत अंतर रहने से तीनों न्यारे २ पाठ दिये हैं—
१ "मैं गिरधर रँग राती सैयाँ" । ह. ना.
२ "रमैया मैं तो थारे रँग राती" । ह. ना.

पद–५८८ : राग–बिहाग : ताल–रूपक

(विरह)

सखी री लाज बैरन भई। (टेक)
श्रीलाल गोपाल के सँग, काहे नाहिं गई ।। १
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई ।। २
रथ चढ़ाय गोपाल लै गयो, हात मींजत रही ।। ३
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह में तन तई ।। ४
दासि मीराँ लाल गिरधर, बिखर क्यों ना गई ।। ५



पद–५८९ : राग–बिहाग : ताल–कहरवा

(विरह)

सखी री मोरी नींद नसानी हो। (टेक)
पिया को पंथ निहारतें, सब रैन बिहानी हो ।। १
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो ।। २
बिन देखै कल ना पड़ै, जिय ऐसी ठानी हो ।। ३
अंग क्षीण ब्याकुल भई, मुख पिय पिय वानी हो ।। ४
अंतर वेदन विरह की, वह पीय[1] न जानी हो ।। ५
ज्यों चातक घन को रटै, महरा[2] जिमि पानी हो ।। ६
मीराँ ब्याकुल विरहिनी, सुध बुध बिसरानी हो ।। ७



५८८–(ऊ)
५८९–(१ उ)
१ पा०—पीर।
२ पा०—मछली विन पानी हो।

पद-५९० : राग-शंकरा भरण वा सोरठ : ताल-धीमा

(विरह)

सजन घर आवो जी मीठा बोलां। (टेक)
बिन देखे मोहे कल न पड़त है, कर धर रही कपोलां[1] ॥ १
आवो निसंक संक नहिं कीजे, हिल मिल के रँग घोलां ॥ २
तेरे कारन सब रँग तजिया, काजल तिलक तमोलां ॥ ३
मीराँ दासी जनम जनम की, दिल की घुंडी खोलां ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद-५९१ : राग-केदारा : ताल-तिताला

(विनय)

सजन सुध ज्यों जानों त्यों लीज्यो। (टेक)
हूँ तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो ॥ १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कब हूँ याद करीज्यो ॥ २
आवत जावत जीमत पीवत, सुपने सुध धरीज्यो ॥ ३
रात दिवस प्रभु ध्यान तिहारो, आप ही दरसण दीज्यो ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो ॥ ५

◈ ◈ ◈

५९०-(ऊ)

१ पा०—यहां बंगाली पुस्तक में ये तीन अंतरे हैं—
"कब की ठाडी पंथ निहारूं..........
"तन मन वार..........
"आतुर बहुत विलंब नहीं..........

२ पा०—"मीराँ तो गिरधर बिन देख्यां छिन माँसाँ छिन तोलाँ"।
(ह. ना. की निजी. में)

५९१-(ऊ)

पद–५९२ : राग–केदारा : ताल– तिताला

(विनय)

सजन सुध ज्यों जानो त्यों लीजे। (टेक)
तुम बिन मेरे और न कोई, कृपा रावरी कीजे ॥ १
द्योस न भूख रैन नहिं निद्रा, यह तन पल पल छीजे ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, (अब) मिल बिछुरन नहिं कीजे ॥ ३



पद–५९३ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

सजन बेगा घर आइए हो।
आदि अंत के मिंत हो हमकूं सुष लहिए हो। (टेक)
हरि बिन सूरति कहां धरूं निस मारग जोऊँ हो।
तेरै कारण सांइयाँ भरि नींद न सोऊँ हो ॥ १
अबिनासी आया सुणूं जब नोंति धिपाऊँ[1] हो।
साहिब सूं मन मांहिलो दुख टेरि सुणाऊँ हो ॥ २
वा बिरियाँ कब होयगी कोइ कहै सनेसा हो।
मीराँ के या बात का मन घणाँ अँदेसा हो ॥ ३



५९२– (ऊ.)
५९३– (२म.) (रामस गु. पृ. १९१)
१. पा०—जिमाऊं।

पद–५९४ : राग–देस : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सतगुर म्हारा प्रीत निभाज्यो जी । (टेर)
थे छो म्हारा गुण रा सागर, ओगण म्हारे मति जाज्यो जी ।। १
लोक न धीजै (म्हारो) मन न पतीजै, मुखड़ा रा सबद सुणाज्यो जी ।। २
मैं तो दासी जनम जनम की, (म्हारे) आँगणि रमता आज्यो जी ।। ३
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, बेड़ो पार लगाज्यो जी ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–५९५ : राग–परज : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सहेलियाँ साजन घर आया हो । (टेक)
बहोत दिनां की जोवती, विरहणि पिव पाया हो ।। १
रतन करूँ नेवछावरी, ले आरति साजूं हो ।। २
पिया का दिया सँनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूं हो ।। ३
पाँच सखी इकठी भई, मिलि मंगल गावैं हो ।। ४
पिय की रली वधावणाँ, आणँद अंगि न मावै हो ।। ५
हरिसागर सूँ नेहरो, नैणाँ बँध्या सनेह हो ।। ६
मीराँ सखी के आँगणें, दूधाँ बूठा मेह हो ।। ७

◈ ◈ ◈

५९४– (१उ.)
५९५– (२म.)

पद–५९६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(उलहना)

सहेल्यो उद्धौजी आया हे ।
आया पठाया स्याम का, मेरै मन नहिं भाया हे । (टेक)
एक निमिष कै कारणै, षटमास लगाया हे ।
पहली प्रीत करी हमसूं, पीछे पछिताया हे ।। १
जमुना जल में न्हावताँ, सखि चीर चुराया हे ।
कुबज्या दासी कंस की, जिणि स्यांम भुराया हे ।। २
मुरली तो मोहण लई, जिणि स्यांम रिझाया हे ।
देखो सखी सहेलियो, नैणाँ कर ल्याया हे ।। ३
सुख दुख अपणां करम का, गोबिंद बर पाया हे ।
दोस कुणी कौं दीजिये, मीराँ गुन गाया हे ।। ४



५९६– (२म.) (रामस. गु.)

पद–५९७ : राग–सोरठ : ताल–दीपचँदी

(विनय)

सतगुर म्हारा चतर सुजाण, रतन का हौ पारषी ।
दीन्हां दीन्हां रामजी बताइ, संगति साधां सारषी । (टेक)
लागौ लागौ बिषियां रो पांन, देही छै काचा चाम की ।
वोषदि है हरिनांव, लगाऊं प्रभू नाम की ।। १
सदा सुहागणि नारि, डगर सिर क्यूं पड़ी ?
कै थारो पीव परदेस, कै घर सासू लड़ी ।। २
नहीं म्हारो पीव परदेस, नैं घर सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे मूरष गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। ३
सरवरिया री ऊंची नीची पाल क मुषडो जोवती ।
हरि विन सूनी म्हारी सेज नैण भर रोवती ।। ४
उड़ि उड़ि म्हारा बन का रे काग, स्यांम थारी पांषड़ी ।
रांमजी मिलण कव होय, फरूकै म्हारी आंषड़ी ।। ५
उड़ि उड़ि म्हारा ऊं सरवरिया रा हंस, सुरंग थारी पांषड़ी ।
सोनें मँढाऊँ थारी चूँच, रूपा की दोइ आंषडी ।। ६
त्यार्‌या त्यार्‌या संत अनेक, विड़द लीयां छाप की ।
वाँह गह्यां की लाज, मीराँ छै प्रभू आप की ।। ७

५९७– (रामस. गु.)

पद-५९८ : राग-सोरठ : ताल-तिताला

(चरित और दृढ़ता)

साध आया वो राणा म्हे सुण्यां, श्रवणां सुणी जी अवाज ।
म्हारो मन लाग्यो वैराग नूं, रमस्यां साधां री साथि । (टेक)
साध संगति राणी छोडि द्यो, वैठो राणां रै पास ।
साध हमारै सिर धणी, साधू माय'र बाप ॥ १
इक कुल लाजै राणी आपणो, दूजो राय राठोड़ ।
तीजो लाजै राणी मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ॥ २
इक कुल राणा त्यारूं आपणों, दूजो राइ राठोड़ ।
तीजो त्यारूं राणा मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ॥ ३
बागां तो बोली कोइली, गिर पर बोल्या जी मोर ।
मीरां नै सतगुरु मिल्या, नागर नंदकिसोर ॥ ४

५९८- (म); (रामस. गु. पृ. ३५७)

पद–५९९ : राग–चैंती गोरी वा सिंधु : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

साधाँ रो संग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजो जी राज । (टेर)
सइयाँ पूजे गोरने, थे पूजो गनगोर ।
मनबांछित फल पावस्यौ, जै तूठै गनगोर ।। १
नैं पूजूं गनगोर ने, नहिं पूजूँ आनदेव ।
बालसनेही सांवरो, जाको थे नहिं जानो भेव ।। २
सेवा सालगराम की, साध संत रो काम ।
थे बेटो राठोड़ को, थानै राज दियो भगवान ।। ३
राज करै ज्याँनै करन द्यो, मैं सन्तन की दास ।
भगति कराँ भगवान की, म्हारै राम मिलन की आस ।। ४
लाजै पीहर सासरो, लाजै मा मोसार ।
नितरा आवै वोलमा, थानै वुरो कहै संसार ।। ५
चोरी न करूं कुमारगी, नहीं कुमाऊँ पाप ।
पुन के मारग चालताँ, म्हांसूं कांई हठ लाग्या छो आप ।। ६
कदि ठाकर परचो दियो, कदि मानी परतीति ।
कुल को नांतो तोड़ियौ, भाभीजी नहीं छै राजां की रीति ।। ७
नहीं जाऊँ पीहर सासरै, नहीं पिया के पास ।
मीराँ सरणैं राम के, म्हांनै गुर मिलिया हरिदास ।। ८



५९९– (क. व.)

पद– ६०० : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साधू म्हारै आइया हेली वे गिरधरीजी रा प्यारा । (टेक)
चरण धोय चरणामृत लेस्यां (हे) कल-मल मेटनहारा ॥ १
प्रांण ते अति प्रिय लागै (हे) कबहुँ न करस्यां न्यारा ॥ ३
प्रभु कृपा कीनी अति (मो) पर सुधर्‌या जन्म हमारा ॥ २



पद–६०१ : राग-आसावरी जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह)

साधो मैं बैरागण हर की ।
भूषण बस्तर सब ही त्यागे खानपान बिसरानूं ।
ये ब्रजबासी कहत बावरी, मैं दासी गिरधर की ॥ १
ऊधोजी तुम जाओ द्वारका, बिपती कहो गोपीन की ।
जैसे जल बिन मीन जो तड़पै, सो गति भई सखियन की ॥ २
पात पात बृंदाबन ढूंढ फिरी ब्रज घर की ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर मैं दासी गिरधर की ॥ ३



६००- (म)
६०१- (या०—सं. रा. क. से)

नोट–इस पद के ३रे अंतरे में यह अंश अधिक था और बेमेल था—'आप तो जाय द्वारका छाये पीर मोटी बिरहन की'—सो निकाल दिया गया । पहिले और तीसरे अंतरे में 'मैं दासी गिरधर की' पदांश की द्विरावृत्ति भी चिंत्य है । ह.ना.

पद–६०२ : राग–मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आवोजी स्याम मोरा रे । (टेक)
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घनघोरा रे ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, ज्यो वारूँ सो ही थोरा रे ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–६०३ : राग-शँकरा : ताल–दीपचँदी

(प्रेमलीला)

साँचो प्रीति[1] ही को नातो । (टेर)
कै जाने बृषभाननंदिनी, कै(मदन)मोहन रँगरातो ।। १
यहै सृंखला अति बलवंती, बंध्यो प्रेम गज मातो ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, कुंजनि महल बसातो ।। ३

◈ ◈ ◈

६०२– (ऊ.)
६०३– (उ.)
(या०—ना. दा. जी के पद प्रसंग माला से)
नोट–याज्ञिकजी का नोट है कि 'यह पद गाते २ नारायणदास नटवाने, हांकिया सराय में, प्रेमावेश में देह त्यागी थी । (उक्त प. प्र. माला में)
१. पा०—'प्रेम' । —ह. ना.

पद–६०४ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवराजी हो, चूड़ें रंग लाग रह्यो छे, लाग रह्यो छै ब्रजराज। (टेर)
रंग चूड़ो रंग चूनड़ी जी काँई रंगीलो साज रंग बृंदावन कुंजलता जी।
काँई सहस गोप्यां रा सिरताज ॥ १
रंग छे थारी बाँसरली जी काँई रंग छे सबही समाज।
मीराँ गिरधर रंग रंगी छे बाँह गहे की लाज ॥ २

◈ ◈ ◈

पद–६०५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

साँवरा ठाडी रहूं घर जाऊँ रे। (टेक)
कब की खड़ी मैं तोरे द्वार पर, खड़ी खड़ी कुमलाऊँ रे ॥ १
भाल तिलक तुलसी की माला, मैं तो जपती आऊँ रे ॥ २
पाँव घूघरा रिमझिम बाजे, नाँचत गाती आऊँ रे ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, गुण गोबिन्द का गाऊँ रे ॥ ४

◈ ◈ ◈

६०४– (उ. सं.)
(या०—सं. रा. क. से.)
नोट–याज्ञिकजी ने इस पद के साथ नोट देकर लिखा है कि किसी अज्ञात कवि ने दो चरण इसमें बढ़ाये थे जिनको कृष्णानंद व्यासदेव ने मिला दिये थे सो ये हैं—
'थारी २ नैननडी मन रंजन खंजन मीन मृग मोह्या छे।
मनमथ गंजन भंजन दुखड़ो मुखड़ो मनमोहन सोह्या जोया छे।'
नोट–स्यात् व्रजनिधि अथवा उनके सहयोगी अन्य कवि का हो।
६०५–(म) (१६) (पुजा. नाथू. पु. से)

पद–६०६ : राग–काफी : ताल–दीपचँदी

(विरह)

साँवरा बिन नींद न आवै, न आवे री, मेरो जीवड़ो अति अकुलावे। (टेक)
स्याम बिना मेरा जग में अँधेरो, दीपक दाय न आवे।
स्याम बिन मोरी सेज अलूंणी, जागत रैंन डरावे ॥
दृगन झर ल्यावे री, ल्यावे ॥ १
बिरह की मारी सब जग हेरूँ, जे कोई स्याम मिलावे।
बिरह नाग मोरी काया डसत है, लहर लहर जिया जावे ॥
जड़ी घस ल्यावे री, ल्यावे ॥ २
सुंण सुंण री मोरी बगड़ पडोसँण, जे कोई स्याम मिलावे।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मोहन मोहन आवे ॥
कदे घर आवे री, आवे ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–६०७ : राग–झँझोटी : ताल–धीमा

(दर्शन, उत्सुकता)

साँवरा (सजनी) सूँ मिलना जरूर। (टेक)
गहरी नँदिया नाव पुरानी, खेवटिया है दूर ॥ १
इत मथुरा उत गोकुलनगरी, जमुना बहै भरपूर ॥ २
काहे करूं कित जाऊं सजनी रही बसूर बसूर ॥ ३
जमना के नीराँ तीराँ बंसी बजावे, मोरमुकुट छबिपूर ॥ ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, निसदिन रहूंगी हजूर ॥ ५

◈ ◈ ◈

६०६–(उ) (१८) पुजा. नाथू. पु. से)
६०७– (म) (३) (नाथू. पु. से)

पद–६०८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विनय)

साँवरिया म्हारी प्रीतड़ली तो न्हिमाज्यो। (टेक)
प्रीत करो तो स्वामी ऐसी कीज्यो, अधबिच मत छिटकाज्यो।
तुम तो हो स्वामी गुण रा सागर, म्हारा ओगण चित मत ल्याज्यो ॥ १
काया गढ़ घेरा ज्यो पड़्या छै, ऊपर आप रखाज्यो।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ चित्त रखाज्यो ॥ २

◈ ◈ ◈

पद–६०९ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विनय)

साँवरिया मोरे नैना आगे रहिज्यो जी। (टेक)
म्हांने भूल मत जाज्यो जी, मोहन लागी लगन निभाज्यो जी ॥ १
राणाँजी भेज्यो विष रो पियालो, सो अम्रत कर पीज्यो जी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़ण मत कीज्यो जी ॥ ३

◈ ◈ ◈

६०८– (ऊ)
६०९– (२ म) (मीराँबाई के भजन नं० २३)

पद–६१० : राग–काफी : ताल–दीपचँदी

(प्रेम)

साँवरियो म्हांनै भाँग पिलाई, मेरी अँखियाँ में लाली छाई ।
काहे री कूँडो (राधे) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी बणाई ।(टेक)
तन कर कूँडी, प्यारे मन कर घोटा, सुरत्तो री सुवाफी बणाई,
कदम नीचे छाँण पिवाई ।। १
पांचाँ गुवाल मिल घोटन बैठे, श्रीगंगा जल झारी भर ल्याई ।
प्रेम करि (राधेजी को) अछक चखाई ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, प्रेम की रीत निभाई
चरण मांहि मनड़ो लगाई ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–६११ : राग–जैजेवंती : ताल–कहरवा

(प्रेमानंद)

साँवरे की दृष्टि मानों प्रेम की कटारी है । (टेर)
लागत विहाल भई, गोरस की सुधि गई
मनहू में व्याप्यो प्रेम भई मतवारी है ।। १
चंद तो चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै
जल बिना मरै मीन ऐसी प्रीति प्यारी है ।। २
सखी मिलि दोइ चारि सुनो री सयानी नारि
उनको हौं नीके जानौं कुंज को बिहारी है ।। ३
मोर को मुकट माथे छवि गिरधारी है ।
माधुरी मूरति पर मीराँ बलिहारी है ।। ४

◈ ◈ ◈

६१०– (क ३)
६११–(उ सं.) (व्रजनिधि ग्रंथावली पृ. २३०)

पद–६१२ : राग–देश : ताल दादरा

(विरह)

साँवरे दी भालन माये सानू प्रेम दी कटारियाँ । (टेक)
सखी पूछे दोऊ चारे व्याकुल क्यो भैया नारे ।
रँग के रँगीले मोसे दृग भर मारियाँ ।। १
व्याकुल बेहाल भैया सुध बुध भूल गैया ।
अजहू न आये श्याम कुन्जबिहारियाँ ।। २
यमुना की घाटी बाटी असाँ तेरी चाल पछाती ।
बसियाँ बजावी कान्हा भैया मतवारियाँ ।। ३
मीराँबाई प्रेम पाया गिरधरलाल ध्याया ।
तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हों तिहारियाँ ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–६१३ : राग–कालिंगडा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साँवरे रँग राची, राणाँजी हूँ तो ।
बाँध घूघरा प्रेम का, हूँ हरि आगे नाची । (टेक)
इक निरखत है इक परखत है, एक करत मोरी हाँसी ।
और लोग म्हारा कांई करसी हूँ हरिजी की दासी ।। १
राणों विष रो प्यालो भेज्यो, हूँ नहिं हिम्मत काची ।
मीराँ चरणाँ लाग रही छै, या तो न्हिमसी साँची ।। २

◈ ◈ ◈

६१२– (क.) (बृ. रा. र. पृ. ११९)
६१३–(२ म)

पद–६१४ : राग–माढ : ताल–दीपचँदी

(प्रेम)

साँवरो बसे छै पैली तीर, ग्राछूयो म्हारो धीरो रे मारूडो धीर । (टेक)
गहरी नदियाँ नाव पुरानी, खेवटियो बेपीर ।। १
मोर मुकुट पीताम्वर सोहे, कानाँ कुंडल सिर चीर ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, ग्राखिर जात ग्रहीर ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–६१५ : राग–काफी होरी : ताल–धमार, दीपचँदी

(लीला)

साँवरो होरी खेलन ग्रायो, ग्रायो । (टेक)
नंदगाँव से संग सखा ले, बरसाने में ध्यायो ।
इतसे निकसी कुंवरि राधिका, सखियन साज वनायो ।।
मानो सखी, मन भावन ग्रायो ।। १
ताल पखावज मृदँग वाजे, मेघन ज्यूं घररायो ।
दादुर मोर पपैया बोले, मोरन डौर लगायो ।।
सखी जाने सावन ग्रायो ।। २
उड़त गुलाल ग्ररुण भये ग्रम्वर, ग्रबीरन घटा घन छायो ।
दामिनि ज्यूं दमके सब गोपी, पिचकारिन झर ल्यायो ।।
केशर को कीच मचायो ।। ३
व्रजमंडल में फाग रच्यो है, सखियन मोद वढ़ायो ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, केसर रँग करायो ।।
सखी मन ग्रानँद छायो ।। ४

◈ ◈ ◈

६१४–(क.) (२४) (पुजा. नाथू. पु. से.)
६१५– (ङ) (१६) पुजा. नाथू. पु. से)

पद–६१६ : राग– विलावल : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

सीसोद्या रांणां प्यालो म्हाँने क्यूं रे पठायो । (टेक)
भली बुरी तो मैं नहिं कीन्हीं, क्यूं है रिसायो ।
थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्याँ रो हरिगुण गायो ॥ १
कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो ।
अठी उठी तो मैं नहि देख्यो, कर चरणामृत पायो ॥ २
आज काल की मैं नहिं राणाँ, जद यह ब्रह्मँड छायो ।
मेड़तिया घर जन्म लियो है, मीराँ नाम कहायो ॥ ३
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ बेगो धायो ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधरनागर, जन को विड़द बढ़ायो ॥ ४



पद–६१७ : राग–काफी : ताल–अद्धा

(प्रेम)

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हारो काईं कर लेसी,
म्हे तो गुण गोविंद का गास्यां, हो माई । (टेक)
राणाँजी रूठ्यो तो वाँरो देस रखासी,
हरिजी रूठ्याँ किठे जास्यां, हो माई ॥ १
लोक लाज की तो काण न मानां,
निरभै निसांण घुरास्यां, हो माई ॥ २
राम नाम की झ्याझ चलास्यां,
भवसागर तिर जास्यां, हो माई ॥ ३
मीराँ शरण साँवले गिरधर की ।
चरण कमल लपटास्यां, हो माई ॥ ४



६१६– (उ १)
६१७– (उ. १)
देखो—राणाँजी म्हे तो गोविंद का गुण गास्यां ।

पद–६१८ : राग–तिलँग : ताल–धीमा

(विनय)

सुणजो जी थे भाभी मीराँ, थाँ पै राणाँजी कोप कियो छै जी। (टेक)
भाभी थारै मारण कारण, प्यालो हाथ लियो छै जी ॥ १
उठ उठ भाजै रोस रो माँतो, हाथाँ खड्ग लियो छै जी ॥ २
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, इमरत पान कियो छै जी ॥ ३

◈ ◈ ◈

पद–६१९ : राग–जोगिया : ताल–कहरवा

(चरित)

सुण लीज्यो बिनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी। (टेक)
तुम(तो) पतित अनेक उधारे, भवसागर से तारे[1] ॥ १
मैं सब का तो नाम न जानूं, कोई कोई नाम[2] उचारे ॥ २
अंबरीष सुदामा नामा, तुम पहुँचाये निज धामा ॥ ३
ध्रुव जो पांच वर्ष के बालक, तुम दरश दिये घनश्यामा ॥ ४
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा(का)बैल चराया ॥ ५
शवरी का झूठा फल खाया, तुम काज किये मन भाया ॥ ६
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई ॥ ७
करमा की खिचड़ी खाई तुम, गणिका पार लगाई ॥ ८
मीरां प्रभु तुमरे रँगराती, या जानत सब दुनियांई ॥ ९

◈ ◈ ◈

६१८– (३ म) (दीना. म. मी. प. २२)
६१९– (म.)
१. पा०—तार्‌यो। २. पा०—भक्त बखानौं।

पद–६२० : राग-आसावरी वा भैरवी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा

(उलहना)

सुण लीजे हे जसमत अम्मा ।
अम्मा ए म्हारा प्याराजी ने घणी ए खम्मा ।। (टेर)
आप न आये द्वारिका छाये लिख लिख भेजै म्हाँने दम्मा ।। १
हमें न बुलावै पतियाँ न भेजै कब लग राखाँ म्हे गम्मा ।। २
मीठा बोला छाती छोला, साँच नही छे वाँ में जम्मा ।। ३
चुण चुण कलियां सेज बिछाई कुबज्या के संग रम्मा ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर बावाँ जी पग ने नम्मा ।। ५



पद–६२१ : राग–पीलू : ताल–धीमा

(प्रेमप्रभाव)

सुनिनी अमानी अँखियाँ निमाँनी । (टेर)
मन मोहन दे रूप लुभानो साढी गल नँकहू न माँनी ।। १
लोकाँ दे डर छपि के छिपावाँ, भरि भरि आवत पाँनी ।। २
मीराँ प्रभु गिरधर गल साढी, ढँकी छिपी सब जाँनी ।। ३



६२०–(उ.) (निज संग्रह से ।)
६२१–(या०—ह० लि० पदमुक्तावली से)
नोट–यही एक पद पंजाबी भाषा का इस संग्रह में मिला है । नहीं कहा जा सकता कि मीराँजी का यह पद इस भाषा में कैसे बना । (सं०)

पद-६ २ : राग-विहाग, सोरठ, मल्हार : ताल-धीमा

(प्रेम)

सुनी मैं हरि ग्रावन की ग्रावाज । (टेक)
महल चढ़ी जोऊं मोरी सजनी, कब ग्रावे महाराज ।। १
दादुर मोर पपीहा वोलै, कोइल मधुरै साज ।। २
उमग्यो इन्द्र चहुँ दिश बरसे, दामिन छोड़ी लाज ।। ३
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलन के काज ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, वेग मिलो महाराज ।। ५

◈ ◈ ◈

पद-६२३ : राग-वागेश्वरी : ताल-तिताला

(प्रेम)

सुमन ग्रायो बदरा, शाम विना । सुमन०
सोवत सपन में देखत शाम को ।
भरायो नयन निकस गयो कजरा ।।
मथुरा नगर की चतुरा गौलन ।
शाम को हार हमको गजरा ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
समय गयो पीछे मिट गये ऊगरा ।।

◈ ◈ ◈

६२२-(१ उ) (वं. पु. पृ- २२)
६२३- (म)

पद–६२४ : राग–माड : ताल–दीपचँदी दादरा

(चेतावनी)

सूरत दीनानाथ से लगी,
तू तो समझ सुहागण सुरता नार। (टेक)
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार।
धन जोबन है पावणा री, मिलै न दूजी बार ॥ १
राम नाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार।
नक बेसर हरि नाम की, उतर चलो नी परले पार ॥ २
ऐसे बर को क्या बरूँ, जो जन्मे और मर जाय।
बर बरिये एक साँवरो री, (मेरो) चुड़लो अमर हो जाय ॥ ३
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठग ले गयो मोय।
लख चोरासी मोरचा री, छिन में गेर्‌या (छै) बिगोय ॥ ४
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झनकार।
अविनाशी की पोल पर जी, मीराँ करै छै पुकार ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–६२५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सेजड़ली'र सुधार गिरधर आँवणां ये।
बाईजी सेजड़ली'र सुधार ॥ (टेक)
आँवण री बिरियाँ भई हे, बाई, महलि ढोल्यो ढाल ॥ १
अतर सुगंध मिलायके री, बाई, घिव रो दिवलो जाल ॥ २
जा ये जुही और मोगरो चंपा कलियाँ सुधार ॥ ३
पलकाँ सैं कराँ पाँवडा, अँचरा सैं मग झार ॥ ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीराँ उनकी नार ॥ ५

◈ ◈ ◈

६२४– (१उ)
६२५– (१उ) (दीना. मं. मी. प. २७)

पद–६२६ : राग–सोरठ : ताल– कहरवा

(राँणा-सम्वाद)

सो मीराँ रँग लाग्यौ राम हरी । (टेक)
कंठी तिलक दोवड़ो माला, सीलबरत सिणगारो ।
और सिंगार सोहै नहिं राणाँजी, यो गुर ग्यान हमारो ॥ १
भलि कोइ निन्दो भलि कोइ विन्दो गुण गोविंदजी का गास्यां ।
जिण मारग मेरा संत पधार्‌या, जीं[उण] मारग म्हे जास्याँ ॥ २
भजन करस्याँ सती न होस्याँ, मन मोह्यो घण नामी ।
जेठ बहू को नांतो नहीं हो, थे सेवक म्हे स्वामी ॥ ३
राज न करस्याँ जीव न सतास्याँ, काँई करैलो म्हारो कोई ।
हस्ती चढ़ म्हे खर नहिं चढ़स्याँ, ऐ तो बात न होई ॥ ४
ना कोई मेरै मात पिता है, नाँ कोई बन्धू भाई ।
थे थाँकै म्हे म्हाँकै राणाँजी, यूं गावै छै मीराँ बाई ॥ ५

◈ ◈ ◈

पद–६२७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

सोवत ही पलका में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आये । (टेक)
मैं जु उठी प्रभु आदर दैन कूं, जाग परी पिउ ढूंढ न पाये ॥ १
और सखी पिउ सोइ गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ॥ २
आज की बात कहा कहौं सजनी, सुपना में हरि लेत बुलाये ॥ ३
बस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ॥ ४
वो माहरो सुने अरु गुनि है, बाजे अधिक बजाये ॥ ५
मीरां कहे सत्त करि मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ॥ ६

◈ ◈ ◈

६२६– (२म) (क. व. १२) ।
६२७– (ऊ) ।

पद– ६२८ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(विरद विनय)

हमने सुनी छं हरि अधम उधारण ।
अधम उधारण सब जग तारण । (टेक)
गज की अरजि गरजि उठि ध्यायो, संकट पड़्यो तब कष्ट निवारण ॥ १
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, दूसासन को मान-मद-मारण ॥ २
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण ॥ ३
ऋषि पत्नी पर किरपा कीन्हीं, विप्र सुदामा की विपति विदारण ॥ ४
मीराँ के प्रभु मो वंदी परि, एती बेरि भई किण कारण ? ५



पद–६२९ : राग–पहाड़ी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हमरी प्रणाम श्री बांकेबिहारी को । (टेक)
मोरमुकट माथे तिलक बिराजै, कुण्डल अलकां कारी को ॥ १
अधर मधुर धर बंसी बजावै, रीझ रिझावे राधा प्यारी को ॥ २
यह छबि देखि मगन भई मीरां, मोहन गिरवरधारी को ॥ ३



६२८– (१उ) ।
६२९– (उ) ।

पद–६३० : राग–झंझोटी : ताल-तिताला

(प्रेम)

हमरे रौरे लागिल कैसे छूटै। (टेक)
जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम रौरे बिन आई ॥ १
जैसे सोना मिलत सोहागा, तैसे हम रौरे दिल लागा ॥ २
जैसे कमलनाल बिच पानी, तैसे हम रौरे मन भानी ॥ ३
जैसे चंद्रहि मिलन चकोरा, तैसे हम रौरे दिल जोरा ॥ ४
जैसे मीरां पति गिरधारी, तैसे मिलि रहु कुञ्जबिहारी ॥ ५



पद–६३१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हमारे मन राधा स्याम बसी। (टेक)
कोई कहे मीरां भई वावरी, कोइ कहे कुल नसी ॥ १
खोल के घूँघट पार के गाती, हरि ढिग नाचत गसी ॥ २
बृन्दांबन की कुंजगलिन में, भाल तिलक उर लसी ॥ ३
विष को प्यालो राणाजी ने भेज्यो, पीवत मीरां हँसी ॥ ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति मार्ग में फँसी ॥ ५



६३०–(क)
६३१– (२म) (मीरां. जीव. का. प्र. जी. पृ. ६)

पद–६३२ : राग–भोपाली : ताल–तिताला

(चेतावनी)

हरि को भजन नित करिए भोरी । (टेक)
देख पराई सुख संपति कूं काहे झरकर मरिये री भोरी ।। १
नदिया गहरी नाव पुरानी समझ समझ पग धरियो री भोरी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरनकँवल चित धरियो री भोरी ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–६३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(चेतवानी)

हरिजी सों मिलना कैसे होय ?
पांच पहर धंदा में बीते, तीन पहर गयो सोय ।।
बालपनो तो खेल गमायो, तरुणपणो नारी संग सोय । हरिजी०
वृद्ध भयो चिंता बहु बाढी, गयो जनम सब खोय ।।
आगे पीछे नाहन चेत्यो, माया मोह में गयो विलोय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, होनी होय सो होय ।। हरिजी०

◈ ◈ ◈

पद–६३४ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विनय, उलहना)

हरि तुम काहे को प्रीत लगाई ?
प्रीत लगाई पर दुख दीनो कैसी लाज न आई ।। हरि तुम०
गोकुल छांडि मथुरा को जाओ वा में कौन बडाई ? हरि तुम०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर तुमको नंद दुहाई ।। हरि तुम०

◈ ◈ ◈

६३२– सं० (२म) (मा. हरिनारायणजी की पु. ह.)
६३३– (म)
६३४– (उ)

पद–६३५ : राग–गिरनारी सोरठ ; ताल–दीपचंदी

(प्रार्थना)

हरि तुम हरो जन की पीर। (टेक)
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर ।। १
भक्त कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर ।। २
हिरनकश्यप मार लीनो, धर्‌यो नाहिन धीर ।। ३
बूडते गज ग्राह मार्‌यो, कियो बाहर नीर ।। ४
दासि मीरां लाल गिरधर, दुःख जहां तहां पीर ।। ५



पद–६३६ : राग–देश : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिन कूंण गती मेरी ? (टेक)
तुम मोरे प्रतिपाल कहिये, मैं रावरी चेरी ।। १
आदि अंत निज नांव तेरो, हीया में फेरी ।। २
बेरि-बेरि पुकारि कहूँ, प्रभु आरति है तेरी ।। ३
यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी ।। ४
नाव फाटी प्रभू पालि बांध्यो, बूडत है बेरी ।। ५
बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखि ल्यौ नेरी ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर, सरणि हूँ तेरी ।। ७



६३५– (१उ) (स. मा. मी. ली. २९)
६३६– (२म)

पद– ६३७ : राग–बिलावल : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिनु क्यों जीऊँ री माय। (टेक)
हरि कारन बौरी भई, जस काठ हि घुन खाय ।। १
औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बौराय ।। २
कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि ते उपजाय ।। ३
हरी ढूंढन गई बन बन, कहुँ मुरलि धुन पाय ।। ४
मीराँ के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ५

◈ ◈ ◈

पद–६३८ : राग–सोरठ : ताल– तिताला वा कहरवा

(विनय)

हरि मेरे जीवन प्राण-अधार। (टेक)
और आसिरो नाहिन तुम बिन, तीनूं लोक मँझार ।। १
आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यौ सब संसार ।। २
मीराँ कहै मैं दासी रावरी, दीज्यौ मती बिसार ।। ३

◈ ◈ ◈

६३७– वि.भू.पु
६३८– (१उ)।

पद–६३९ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(विनय)

हरि मेरे नयनन में रहियो।
रात दिवस आगे आगे डोलो, घड़ि पल अलग मत रहियो॥ हरि०
कोई को प्यारे लड़का रे लड़की, कोई को प्यारे व्हेन और भैय्या।
कोई को प्यारी अजब सुन्दरी, हमरे प्यारो नन्दलालाजी को छोरैयो॥ हरि०
कोई को बल है मात-पिता को, कोई को बल कुटंब की सेवेयो।
कोईक कहे में आप बलियो, हमारे बल है राजा रामैयो॥ हरि०
कोई के होसी कोपीन धारण की ल्यो, कोई कपडा पहेरी बेडेयो।
कोई होसिक धन मालन को, हमरो होसी हरि चरण को छैयो॥ हरि०
कोई पढत चतुर भयो, कांके राज रंग की गवैयो।
मीराँ के प्रभु तुम्हरे मिलन को, प्रेम सहित कृष्ण कृष्ण कहियो॥ हरि०

◆ ◆ ◆

पद–६४० : राग-जङ्गला-जोगिया आसावरी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा

(चेतावणी)

हरि से गरब किया सोई हारा॥ (टेक)
गरब किया रत्नागर सागर, जल खारा कर डारा।
गरब किया लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा॥ १
गरव किया चकवे चकवी ने, रैन बिछोहा डारा।
गरव किया बन की चिरमी नें, मुख कारा कर डारा॥ २
इन्दर कोप किया वृज ऊपर, नख पर गिरवर धारा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, जीवन-प्राण हमारा॥ ३

◆ ◆ ◆

६३९–(क)।
६४०–(१उ) (फु- प.)।

पद–६४१ : राग–वहार : ताल–तिताला

(प्रार्थना)

हरि सों बिनती करों कर जोरी। (टेक)
बरबस रचल धमारी हम घर मा सू पिता मारे गारी ।। १
निपट अलप बुधि दिन गति थोरी, प्रेम मगन रस ले बल भारी[1] ।। २
मीराँ के प्रभु सरण तिहारी, अवचक आय मिलहु[2] गिरधारी ।। ३

◈ ◈ ◈

पद–६४२ : राग–भैरव सिन्ध : ताल–दादरा

(लीला)

हाँ रे कोई माधव ल्यो माधव ल्यो, बेचती ब्रजनारी रे। हाँ रे० ।। (टेक)
माधव ने मटुकी माँ घाली, गोपी लटके लटके चाली रे ।। १
हां रे गोपी घेलूं शूं बोलती जाय, कान मटुकि माँ नव समाये रे ।। २
नव मानों तो जुओ उतारी, माँही जुए तो कुञ्जबिहारी रे ।। ३
बृन्दाबन माँ जाता धारी, वालो गौ चारे छे गिरधारी रे ।। ४
गोपी चालो बृन्दावन माटे, सौ ब्रज नी गोपियो साथे रे ।। ५
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, जे ना चरण-कमल सुख-सागर रे ।। ६

◈ ◈ ◈

६४१–(का०।उ०।३१०)
(क०)। पाठ शोधनीय है। सं०।
पा०—१. बरजोरी, २. मिल (३म)।
६४२–(३क) (का.दो.गु.)

पद–६४३

(प्रेम)

हाँ रे चालो डाकोर माँ जाइ बसिये,
हाँ रे मने लेहे* लगाडी रँग रसिये रे। (टेर)
हाँ रे प्रभात ना पहोर माँ नोवत वाजै,
हाँ रे अमे दरसन करबा जइये रे ॥ १
हाँ रे अटपटी' पाघ केसरियो बाघो, हाँ रे कानें कुंडल सोइये रे ॥ २
हाँ रे पीलो पीतांबर जरकसी जामो, हाँ रे मोतिन माला थी मोहिये रे। ३
हाँ रे चंद्रबदन अणियारी आँखाँ, हाँ रे मुखडो सुंदर सोहिये रे ॥ ४
हाँ रे रुमझुम रुमझुम नूपुर बाजै, हाँ रै मारो मन मोह्यो मोरलियो रे।५
हाँ रे मीराँबाई कहै प्रभु गिरधरनागर, हाँ रे अंगो अंग जई मलिये रे।६

◈ ◈ ◈

पद–६४४ : राग–पहाडी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हाँ रे सखी देख्यो री नन्द किशोर।
मोर मुकुट मकराकृति कुन्डल, पीतांबर झनक हरोल० हाँ रे।
ग्वाल-बाल सब संग में लीनो, गोवर्धन की ओर० हाँ रे।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरि भये माखनचोर० हाँ रे।

◈ ◈ ◈

६४३-(या०—का०दो०से)।
*लेह-प्रेम—पा० १. लटपटी'।
६४४-(म)।

पद—६४५ : राग—सोरठ : ताल—तिताला

(विरह-वेदना)

हे ओ सहिया ! हरि मन काठ कियो । (टेर)
आवन कह गयो, अजहूं न आयो, करि करि वचन गयो ।। १
खानपान सुधबुध सब विसरा, कैसे करन जियो ।। २
बचन तुम्हारे तुम ही बिसारो, मन मेरो हर लियो ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

◈ ◈ ◈

पद—६४६ : राग—बहार : ताल—तिताला

(विरह)

हे मेरो मन मोहना, आयो नहीं सखी री । (टेक)
कै कहुँ काज किया संतन का, कै कहुँ गैल भुलावना ।। १
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है विरह सँतावना ।। २
मीराँ दासी दरसण प्यासी, हरि चरणां चित लावना ।। ३

◈ ◈ ◈

पद—६४७ : राग—झंझोटी : ताल—तिताला

(चरित)

हे री माँ नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो । (टेर)
गहे द्रुम-डार कदम की ठाड़ो मृदु मुसक्याय म्हारी ओर हँस्यो ।। १
पीतांबर कटि काछनी काछे, रतन जटित सिर मुकुट कस्यो ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, निरख बदन म्हारो मनड़ो फस्यो ।। ३

◈ ◈ ◈

६४५-(२उ) ।
६४६-(२म) ।
६४७-(या०—सं०रा०क०से) ।

पद–६४८ : राग–काफी : ताल–दीपचँदी

(विरह-वेदना)

हे री मैं तो दरद दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय ।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय ।
गगन मँडल पे सेज पिया की किस विध मिलणा होय ॥
हे री मैं तो दरद०
घायल की गत घायल जाने, के जिन घायल होय ।
जौहर की गत जौहरी जाने, के जिन जौहर होय ॥
हे री मैं तो दरद०
दरद की मारी बन बन ढूंढूं, वैद मिल्यो नहि कोय ।
मीराँ के प्रभु पीर मिटेगी, वैद साँवलिया होय ।
हे री मैं तो दरद०

◈ ◈ ◈

पद–६४६ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

हेली म्हाँसूं हरि बिन रह्यो न जाय । (टेक)
सासु लड़ै मोरी ननद खिजावै, राणाँ रह्यो रिसाय ॥ १
पहरो भी राख्यो चोकी बिठाइयो, ताला दियो जुड़ाय ॥ २
पूर्बजन्म की प्रीति पुरानी, सो क्यों छोड़ी जाय ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, और न आवै म्हारी दाय ॥ ४

◈ ◈ ◈

६४८–(पु०) (यह पद निज संग्रह में है) ।
६४६–(१उ) (वं.पु.पृ. ४५) ।

पद–६५० : राग–आसावरी : ताल–दीपचँदी

(चेतावणी)

हेली सुरत सोहागिन नार, सुरत मेरी राम से लगी । (टेक)
लगनी लहँगा पहिर सोहागिन, बीती जाय बहार ।
धन जोबन दिन चार का हे, जात न लागे बार ।। १
झुठे बर को क्या बरूँ जी, अधबिच में तज जाय ।
बर तो बराँला रामजी म्हे, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय ।। २
राम नाम को चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां बलिहार ।। ३



पद–६५१ : राग–पहाड़ी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हो कानाँ किन गूंथी जुलफाँ कारियाँ । (टेक)
सुधर कला-प्रवीन हाथन सूं, जसुमतिजू ने सँवारिया ।। १
जो तुम आओ मेरी बाखरियाँ, जुरि राखूँ चन्दन किंवारियाँ ।। २
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ ।। ३



६५०–(२म) ।
६५१–(३म) ।

पद–६५२ : राग–वडहंस : ताल–कहरवा

(उल्हना)

हो गये श्याम दूज के चन्दा । (टेक)
मधुबन जाय भये मधुबनियाँ, हम पर डारो प्रेम को फंदा ।। १
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, अब तो प्रेम पर्‌यो कछु मन्दा ।। २

◈ ◈ ◈

पद–६५३ : राग–खम्माच : ताल–तिताला वा कहरवा

(विनय)

हो जी म्हाराज छोड़ मत जाज्यो । (टेक)
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहि मेरे सिरताज ।। १
मैं गुण हीन गुण नाहिं गुसाईं, तुम समरथ महाराज ।। २
रावली होइ के किण रे जाऊँ, तुम हो हिवड़ा रो साज ।। ३
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ।। ४

◈ ◈ ◈

पद–६५४ : राग–विहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह-विनय)

हो जो हरि कित गये नेह लगाय । (टेक)
नेह लगाय मेरो मन हर लीयो, रस भर टेरि सुनाय ।
मेरे मन में ऐसी आवे, मरूं जहर बिष खाय ।। १
छाँडि गयो विसवास घात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहे मधुपुरी छाय ।। २

◈ ◈ ◈

६५२–(३म) (वृ.रा.र. १४९) ।
६५३–(२म) ।
६५४–(मी.प.वि.कु.मु-पृ. ११२) ।

पद–६५५ : राग–माड : ताल–कहरवा

(चरित)

हो जी हो सीसोद्या राजा, मनड़ो बैरागी धन रो क्या करूं । (टेक)
जहर का प्याला राणाँजी भेज्या, कोई द्यो मीराँ के हाथ ।। १
कर चरणामृत मीराँ पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ।। २
साँप टिपारा राणाँजी भेज्या, कोई द्यो ने मीराँ ने जाय ।। ३
कर खँगवालो पहरियो, कोई आप जानो दीनानाथ ।। ४
राणांजी दासी भेजिया, कोई जावो ने मीरां पास ।। ५
मर गया होय तो जलाय दीज्यो, नातर नदी में बहाय ।। ६

◈ ◈ ◈

पद–६५६ : राग–खम्माच : ताल–दादरा

(विनय)

होता जाजो राज हमारे महलों, होता जाजो राज । (टेक)
मैं औगनी मेरा साहिब सगुना, संत सँवारैं काज ।। १
मीराँ के प्रभु मँदिर पधारो, करके केसरियाँ साज ।। २

◈ ◈ ◈

पद–६५७ : राग–काफी : ताल–दीपचँदी

(होरी)

होरी खेलत है गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारौ, सँग जुंवती ब्रजनारी ।। (टेक)
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हात बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।। १
छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्रान-पियारी ।
गावत चारु धमार राग तहँ, दै दै कल कर तारी ।। २
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यौ रस ब्रज भारी ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ।। ३

◈ ◈ ◈

६५५–(३क) (का.ह.नं. १) ।
६५६–(३क)
६५७–(२म)

पद–६५८

(होरी लीला)

होरी खेलन को आये राधे प्यारी, हाथ लिये पिचकारी । (टेर)
कितने बरस के कुंवर कन्हैया, कितने बरस की राधा प्यारी ॥ १
सात बरस के कुंवर कन्हैया, बारा बरस की राधा प्यारी ॥ २
उँगली पकड़ मेरा पहुँचा भी पकड़्या, बैंयाँ पकडि झकझोरी ॥ ३
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, तुम जीते हम हारी ॥ ४

◈ ◈ ◈

पद–६५९ : राग–काफी ताल–कहरवा

(होरी)

होरी खेलन चलो बृजनारी, नन्द-पौर ठाढे हैं मुरारी । (टेक)
राधा चन्दभागा चन्द्रावली, भामा ललित सुशीले ।
शुभसूत्रक सुवर्ण घट सिर धरि, अम्ब बोर जब ही ले ॥ १
नइ २ चीर कुसूमी सारी, भूषण बहु बिधि सजिये ।
नागर केलि करव मोहन सँग, नवल कान्ह प्रिय भजिये ॥ २
चोवा चन्दन बुक्का बदन पै, उड़त गुलाल अबीर ।
खेलत फाग भाग बड़े गोपी, छिरकत श्याम शरीर ॥ ३
चँग मृदंग ढोल डफ, महवर वेण रसाल ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रसिकराय द्विजपाल ॥ ४

◈ ◈ ◈

६५८–(म०) (का०।उ०२।३६५)
६५९–(२म) (मीरां. वा. भज. पृ. १८ प्रकीर्णक)

पद–६६० : राग–काफी : ताल–सिन्दूरा

(विरह, होली)

होली पिया बिन मोहि न भावै, घर आँगन न सुहावै । (टेक)
दीपक जोय कहा करूं हेली, पिय परदेश रहावै ।
सूनी सेज जहर जूं लागै, सुसक सुसक जिया जावै ।
नींद नैन नहिं आवै ।। १
कब की ठाडी मैं मग जोऊँ, निसदिन विरह सतावै ।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, हिवडो अति अकुलावै ।
पिय कब दरस दिखावै ।। २
ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सनेसा लावै ।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावै,
मीराँ मिल होली गावै ।। ३



पद–६६१ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(चेतावणी)

होली खेल मना रे, फागुन के दिन चार रे । (टेक)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे ।। १
बिन सुर राग छतीसूं गावै, रोम रोम रंग सार रे ।। २
शील संतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ।। ३
उड़त गुलाल लाल भये बद्दल, बरषत रंग अपार रे ।। ४
घट के सब पट घो(खो)ल[1] दिये हैं, लोक लाज सब डार रे ।। ५
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ।। ६
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल बलिहार रे ।।



६६०–(१ उ) (वं. पु. पृ. १७)
६६१–(१उ)
१. पा०—घोल लियो हूँ ।

पद–६६२ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार वा दीपचंदी

(विरह)

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी, मेरी प्यारी । (टेक)
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी ।
सूनी बिरहन बन बन डोलै, तज दई पीव पियारी ।
भई हूँ या दुख कारी ।। १
देस बिदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी ।
गिणतां गिणतां घस गईं रेखा, आंगरियां की सारी ।
अजहूँ नहिं आये मुरारी ।। २
बाजत झांझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी[1] ।
आई बसंत कंत घर नाहीं, तन मन जर भई छारी ।
स्याम मन कहा ये विचारी ।। ३
अब तो म्हैर करो मुझ ऊपर, चित्त दे सुणो हमारी[2] ।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की मैं थारी ।
लगी दरसन की तारी ।। ४

◈ ◈ ◈

६६२–वि.भू.सं.